घरेलू झगड़ों से नजात

अज़ इफ़ादात
हज़रत मौलाना हाफ़िज पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद
नक़्शबंदी मद्दज़िल्लुहू

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड

घरेलू झगड़ों से नजात

अज़ इफ़ादात

हजरत मौलाना हाफ़िज़ पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मद्दज़िल्लुहू

तख़रीज

मौलाना हाफ़िज़ अब्दुल हमीद

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

घरेलू झगड़ों से नजात

अज़ इफ़ादातः

हज़रत मौलाना हाफ़िज़ पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मद्दज़िल्लुहु

बएहतिमामः मुहम्मद नासिर ख़ान

कम्पोज़िंग एण्ड टाइप सैटिंगः

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड

FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phones: 23289786, 23289159, Fax:23279998

Gharelu Jhagdon Se Nijaat

By: Hazrat Maulana Hafiz Zulfiqar Ahmad Naashbandi Mujaddidi

Pages: 236 *Edition* : **2015**

Our Branches:

Delhi: FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.:23256590

Mumbai :FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan.
Dongri, Mumbai-400009, Ph.:022-23731786, 23774786

Printed at: Farid Enterprises, Delhi

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

2 बड़ों के झगड़े

3 घरेलू झगड़े

4 सुस्राल के झगड़े

6 शौहर और बीवी के झगड़े (शौहर की ज़िम्मादारियां)

☆☆☆☆☆

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

इस्लाम अम्न व सलामती का दीन है। यह अपने मानने वालों को मकारिमे अख़्लाक़ और हुस्ने मुआशिरत की ऐसी तअ़लीमात देता है कि अगर उन पर पूरा पूरा अमल किया जाए तो मुआशरा उख़ूव्वत व मुहब्बत, और अम्न व सुकून क गहवारा बन जाए। अगर कहीं मुआमला इसके बरअक्स नज़र आए, आपस में रंजिशें और कुदूरतें हों, दिल बुग्ज़ व कीना से भरे हों, घरों में लड़ाई झगड़े और शहरों में दंगा फ़साद का माहौल हो तो इसका साफ़ मतलब यह है कि दीन से नाआशनाई है, या दीनी तअ़लीमात से रू गर्दानी है। आज हम अपने घरों को या इर्दगिर्द के माहौल को देखें तो आम तौर पर झगड़ों या तनाव की फ़ज़ा किसी न किसी सूरत में मौजूद नज़र आती है। यह चीज़ हमें यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि......क्या हम उसी दीन के पैरूकार हैं जो انما المؤمنون اخوة की तअ़लीम देता है?......क्या हम उसी दीन के दाई हैं जो कहता है कि तमाम मुसलमान एक जसद की मानिंद हैं अगर एक को तकलीफ़ होती है तो दूसरा भी तकलीफ़ महसूस करता है?

फ़कीर चूंकि अपने बड़ों के हुक्म पर लोगों को अल्लाह अल्लाह सिखाता है, लिहाज़ा इस्लाहे अहवाल के तौर पर बहुत से मुतअ़ल्लिक़ीन के घरेलू झगड़ों से भी वास्ता पड़ता रहता है। लोग अपने अंदर के रोग आकर तबीब को बताते हैं या

पीर को बताते हैं। चुनांचे बहुत से दोस्त अपने बिगड़े मुआमलात और झगड़ों के लिये मशवरे के तालिब हाते हैं तो फ़कीर सूरते हाल की नौइयत को देखते हुए कुछ नसीहत और रहनुमाई कर देता है। अक्सर देखा यही गया है कि बात इतनी बड़ी नहीं होती जितनी बन जाती है, अस्ल में तो दीनी तअ़लीमात को नज़र अंदाज़ करने की बे बरकती होती है जो मुआमले को उलझा देती है। फ़कीर अपने मुतअ़ल्लिकीन की इस्लाह के लिये, वक़्तन फ़वक़्तन अपनी मजालिस में इसी उन्वान पर कुछ न कुछ अ़र्ज़ करता रहता है। ताहम गुज़शता साल ज़ेमबिया में एतिकाफ़ के दौरान ख़्वातीन की मजालिस में "घरेलू झगड़े" के उन्वान से मुस्तकिल बयानात का एक सिलसिला चला जिसे बहुत पसंद किया गया। बहुत से लोगों ने बाद में आकर अपने ख़्यालात का इज़्हार किया कि वाकई आज के दौर में इन उन्वनात पर बात होनी चाहिये, ताकि घरों से रंजिशें और रक़ाबतें दूर हो सकें।

इन बयानात की इफ़ादियत को महसूस करते हुए मअ़हदुल फ़कीरुल इस्लामी झंग के कुछ अहबाब ने उन्हें किताबी सूरत में ज़ब्त व तरतीब दिया और मक्तबतुल फ़कीर ने उन्हें शाए करने का एहतिमाम किया, अल्लाह तआला इन हज़रात को अज्रे जज़ील अता फ़रमाए और दुन्या व आख़िरत में उनके घरों को आबाद और दिलों को शाद फ़रमाए आमीन सुम्मा आमीन।

दुआ गो व दुआ जो

फ़कीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी

كان الله له عوضا عن كل شيء

अ़र्ज़े मुरत्तिब

वालिदैन को लड़ते झगड़ते बच्चे कभी अच्छे नहीं लगते, अगर वह लड़ पड़ें तो वालिदैन सुलह व इस्लाह की कोशिश करते हैं। इसी तरह जब बंदगाने खुदा में कोई झगड़ा या फ़साद हो तो मशाइख़ को भी वह अच्छा नहीं लगता और उनकी मुरब्बियाना तबीअ़त उनकी इस्लाह के लिये फ़िक्र मंद होती है।

فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ

और (मोमिन) भाइयों में सुलह करा दिया करो

(अलहुज्रात:10)

के मिस्दाक़ उनकी हमेशा यह कोशिश होती है कि अल्लाह के बंदे आपस में प्यार मुहब्बत से रहें और सुकून चैन की ज़िंदगी गुज़ारें। हमारे हज़रत, महबूबुल उलमा व अस्सुलहा हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी दामत बरकातुहुम भी इस्लाहे मुआमलात और हुस्ने मुआशिरत पर बहुत ज़ोर देते हैं। आप अपने मुरीदीन की रहनुमाई के लिये वक़्तन फ़वक़्तन ऐसे (Key Points) बुन्यादी उसूल बयान करते रहते हैं जिन पर अमल करने से आदमी झगड़ों से पाक खुशियों भरी ज़िंदगी गुज़ार सकता है।

हज़रत अक़दस दामत बरकातुहुम हर साल लूसाका (अफ़रीक़ा) में एतिकाफ़ फ़रमाते हैं, जहां दिन में एक नशिस्त ख़्वातीन के लिये मुख़्तस होती है। इसमे उमूमन इस्लाही मौज़ूआत पर ही बात होती है। गुज़शता साल रमज़ान 1428

हि0 (2007 ई0) में हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम ने घर के झगड़ों को अपना मौज़ूअ़ बनाया और रोज़ाना दोपहर को इस पर एक बयान फ़रमाया। हज़रत की बारीक बीं नज़र ने बहुत से ऐसे पहलूओं की निशानदही फ़रमाई जो घर की ज़िंदगी में झगड़ा व फ़साद का बाइस बनते हैं, फिर बड़े हकीमाना अंदाज़ में मुस्बत तर्ज़े अमल की रहनुमाई भी फ़रमाई। हर सुनने वाले को यूं लगता था जैसे हमारें ही घर की बात चल रही है। इस लिहाज़ से यह बयानात एक आईना भी हैं और एक इलाज भी। आजिज़ ने बयानात की इफ़ादियत को देखते हुए उनको किताब की सूरत में मुरत्तब किया और हज़रत दामत बरकातुहुम की ख़िदमत में पेश किया, आप ने पसंदीदगी का इज़हार फ़रमाया और इनका उन्वान "घरेलू झगड़ों से नजात" तज्वीज़ फ़रमाया। अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला, इस किताब को अवामुन्नास के लिये नाफ़ेअ़ और हमारे लिये सदक़ए जारिया बनाए......आमीन सुम्मा आमीन।

दुआओं का तालिब

डाक्टर शाहिद महमूद नक़्शबंदी ग़ुफ़िरालहू

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बच्चों के झगड़े

अज़ इफ़ादात

पीरे तरीकृत रहबरे शरीअ़त मुफ़क्किरे इस्लाम

महबूबुल उलमा वस्सुलहा

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद

मुजद्दिदी नक्शबंदी मद्दज़िल्लुहू

बच्चों के झगड़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُوْنَ. وَسَلَامٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

हमारी मुआशरती ज़िंदगी:

इंसान फ़ित्री तौर पर मिल जुल कर रहने का आदी है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उसे सोचने के लिये दिमाग़ दिया, महसूस करने के लिये दिल अता किया, तो यह जज़्बात, एहसासात रखने वाला इंसान अकेला ज़िंदगी नहीं गुज़ार सकता। यह कैसे मुम्किन है कि मां खुद तो खा ले जबकि उसका बच्चा उसकी आंखों के सामने भूक से तड़पता रहे! यह कैसे हो सकता है कि बेटी बीमार हो और बाप उसके इलाजे मुआलजे के लिये तवज्जोह ही न दे। इसी लिये इंसान एक मुआशरे में रहना पसंद करता है, इसको घरेलू ज़िंदगी कहते हैं एक इंसान के बीवी, बच्चे, यह सब मिलकर घराना बनते हैं, फिर कई घराने मिलकर एक ख़ानदान बनता है। कई ख़ानदान मिलकर एक मुआशरा बनता है। शहर आबाद होते हैं, मुल्क आबाद होते हैं। इसी तरह आज दुन्या आबाद है तो इस तरह मिल जुल कर रहने को मुआशरती ज़िंदगी कहते हैं।

फ़साद अल्लाह तआला को नापसंद है:

लेकिन इसमें एक चीज़ देखी गई है कि जिस तरह बर्तन

इकट्ठे रहें तो खटकते हैं, इंसान जब मिलुल कर रहते हैं तो उनको बसा औक़ात एक दूसरे के साथ रंजिशें हो जाती हैं। कभी इंसान Over Expect (ज़्यादा तवक़्क़ोअ़) कर लेता है, दूसरा बंदा उसको पूरा नहीं कर सकता तो इस पर रंजिश हो जाती है। कभी दूसरे के किसी Behaviour (रवय्या) की वजह से इंसान का दिल टूटता है। तो किसी न किसी तरह आपस में उलझाव रहता है। शैतान इस सूरतेहाल से फ़ाएदा उठाता है और फिर दिलों के अंदर एक दूसरे के ख़िलाफ़ नफ़रतें और कुदूरतें पैदा होती हैं। कभी तो आपस में सर्द जंग शुरू हो जाती है और कभी गर्म जंग शुरू हो जाती है, इसका नाम फ़साद है। और कुर्आन मजीद में आया है कि

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ

कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़साद को पसंद नहीं करते

आज फ़साद आम है:

आज कौनसा घर है जहां आपस में एक दूसरे के साथ रंजिशें न हों। कहीं बहन भाई में रंजिशें, कहीं औलाद और मां बाप के दर्मियान रंजिशें, कहीं आपस में मियां बीवी के दर्मियान लड़ाईयां, कहीं सास बहू के झगड़े और कहीं पर पड़ोसी और पड़ोसी के झगड़े। और दफ़्तरों की हालत तो बताने के क़ाबिल ही नहीं, जहां चंद बंदे मिलकर रहते हैं काम करते हैं, एक दूसरे के साथ हसद की इंतिहा होती है। Professional Jealousy (पेशावाराना हसद) इस क़द्र होता है जिस को अल्लाह इज़्ज़त देता है, बढ़ाता है, दूसरे मिलकर उसकी टांगें खींचते हैं। दफ़्तरों का ज़्यादा वक़्त एक दूसरे के ख़िलाफ़ प्लानिंग करने में, एक दूसरे को नीचा दिखाने

में और एक दूसरे को रुसवा करने में या ग़ीबत करने में गुज़र जाता है। एक मुसलमान मुआशरे में यह चीज़ें इंतिहाई नापसंदीदा हैं।

बयानात से इस्तिफ़ादे का तरीक़ाः

शुरू में इस आजिज़ का इरादा था कि इस दफ़ा रमज़ान की महफ़िलों में लुक़मान अलै0 की जो नसीहतें हैं उनमें से कुछ नसीहतें बयान कर दी जाएं मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की शान देखिये कि सफ़र करके जब यहां पहुंचा, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दिल में यह बात डाली कि मक़्सूद तो बयानात से इस्लाह है तो इस दफ़ा यह बात ज़ेरे बयान रखी जाए कि आपस के झगड़े हम कैसे ख़त्म कर सकते हैं? चुनांचे इस रमज़ान में जितने भी मस्तूरात के बयान होंगे बुन्यादी तौर पर उनका महवर यही होगा कि झगड़ा और फ़साद कैसे ख़त्म हो सकता है? इसके मुख़्तलिफ़ हिस्से बने हुए हैं, जैसे आज के बयान में बच्चों के झगड़े, इसी तरह बड़ों के झगड़े, फिर घर के झगड़े, अज़्दवाजी ज़िंदगी के झगड़े, इसी तरह बड़ों के झगड़े, फिर घर के झगड़े, अज़्दवाजी ज़िंदगी के झगड़े, सास बहू के झगड़े, पड़ोसी के झगड़े। तो यह उन्वानात बढ़ते चले जाएंगे और मज़मून खुद बखुद फैलता चला जाएगा, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुआ करते हैं कि वह मौक़ा महल के मुताबिक़ सही बातें दिल में डाले क्योंकि इस उन्वान पर आम तौर पर मवाद भी बहुत कम मिलता है।

अज़ीज़ बच्चियों से गुज़ारिश है कि वह इन बातों के नोटिस बनाएं, इन्हें याद रखें और यह नियत लेकर बैठें कि हमने ऐसी ज़िंदगी हासिल करनी है जिसमें झगड़ा फ़साद नाम

की कोई चीज़ नहीं होगी। जब उनका अपना ज़हन बनेगा तो यह कल बच्चों की तरबियत भी इसी तरह से कर सकेंगी तो इस लिहाज़ से यह उन्वानात बहुत अहम हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इनका हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

बच्चों की नफ़्सियातः

बच्चे की नफ़्सियात को समझना बहुत ज़रूरी है जिससे यह बात समझने में आसानी होगी कि बच्चों के झगड़ों की नौइयत क्या होती है। साइंस की एक किताब है जिसका नाम है - Birth Order "बर्थ आर्डर"। इसमें माहिरे नफ़्सियात साइंसदानों ने यह लिखा है कि बच्चे घर में जिस पोज़ीशन पर पैदा होते हैं, फ़ितरी तौर पर इनमें कुछ आदतें इसके मुताबिक़ होती हैं।

तीन क़िस्म के बच्चेः बड़ा बच्चा–(Elder)

एक होता है सबसे बड़ा बच्चा (जिसको इलडर Elder कहते हैं)। आम तौर पर इसकी आदतों में आप को नज़्म व ज़ब्त ज़्यादा नज़र आएगा, इसकी तबीअ़त के अंदर एहसासे ज़िम्मादारी ज़्यादा होता है। बअ़ज़ औक़ात यह बच्चे Dictator (आमिर) भी बन जाते हैं। लेकिन आम तौर पर यह लोग क़ानून के मुताबिक़ रहना और रखना पसंद करते हैं। फ़ितरी तौर पर अल्लाह तआला ने इनकी तबीअ़त ही ऐसे बनाई होती है, लिहाज़ा जो बच्चा भी घर में सबसे बड़ा होगा, आप उससे Expect (तवक़्क़ोअ़) करें कि यह बच्चा ग़ैर ज़िम्मादार नहीं हो सकता, हमेशा ज़िम्मादार होगा। मगर ज़िम्मादारी के साथ साथ उसके अंदर पोज़ीशन (मक़ाम) हासिल करने की भी तबीअ़त होगी, वह दूसरों पर रूल भी

करना चाहता होगा, यह चाहेगा कि हर मुआमले में मेरी बात मानी जाए, मुझे Follow (पैरवी) किया जाए, मुझे बड़ा बना के रखा जाए। यह चीज़ फ़ित्री तौर पर उस बच्चे के अंदर होती है।

मंझला बच्चा (Middle Baby)

एक होता है दर्मियान वाला बच्चा, मिडिल बेबी। यह बच्चा (जिससे कोई बड़ा है और कोई छोटा) यह फ़ित्री तौर पर जंगजू (Fighter) बच्चा होता है। चूंकि इसको अपने तहफ़्फ़ुज़ (Servival) के लिये बड़े से भी लड़ना पड़ता है छोटे से भी। वर्ना बड़े को ज़्यादा अहमियत मिलती है या छोटे को मिल जाती है और दर्मियान वाले आम तौर पर नज़र अंदाज़ (Ignore) हो जाते हैं। चूंकि यह बच्चे नज़रअंदाज़ होते हैं, इसलिये तबअ़न यह बच्चे फ़ाइटर क़िस्म के बच्चे होते हैं, मगर यह मुश्किलात को हल करने वाले (Problem Solver) भी होते हैं चूंकि इनकी बक़ा का मस्ला होता है, इनके सामने मस्ले आते हैं और यह उनको हल (Deal) करने की कोशिश करते हैं, (win) जीतने की कोशिश करते हैं, तो इनमें मुक़ाबला करने की सलाहियत (Sense of Competition) दूसरों की निस्बत ज़्यादा होती है।

सबसे छोटा बच्चा:

और एक होता है घर का सबसे छोटा बच्चा। जिसको (Baby of the Family) भी कहते हैं। आम तौर पर मुहब्बतें भी इसी को ज़्यादा मिलती हैं, तवज्जुहात भी इसी को ज़्यादा मिलती हैं। यह बच्चा आम तौर पर शो ब्वाय होता है लेकिन यह सलीक़ा (Manipulation) का मास्टर होता है,

यह अपनी हरकतों से दूसरों की मुहब्बतों को ज़्यादा से ज़्यादा समेटने की कोशिश करता है।

तो गोया किसी के अगर पांच बच्चे हैं तो जो बड़ा बच्चा है वह है Elder one (इल्डर वन) इसकी नफ़्सियात को इस तरह से समझें कि इसके अंदर नज़्म व ज़ब्त होगा, सीरियस बच्चा होगा, इसमें एहसासे ज़िम्मादारी ज़्यादा होगा। और दर्मियान के जो तीन बच्चे हैं, यह बच्चे मिडिल बेबीज़ (Middle Babies) कहलाएंगे, तीनों की नफ़्सियात एक ही जैसी होगी, इनको अपने हक़ के हुसूल के लिये लड़ना पड़ेगा, मसाइल को हल करना पड़ेगा। इनको जीने के लिये मेहनत (Struggle) करनी पड़ती है इसलिये इन बच्चों में आम तौर पर मेहनत की हिस (Sense of struggle) ज़्यादा होती है। एक होता है सबसे छोटा बच्चा, इसको आप यूंही समझ लें कि वह चूंकि घर का महबूब होता है, छोटी बेटी हो या छोटा बेटा हो, मुहब्बतें इन्हें ज़्यादा मिलती हैं, और आम तौर पर हमारे घरों का दस्तूर है कि मां बाप भी इसी के साथ रहते हैं, वह फिर अपनी पोज़ीशन का हमेशा फ़ाएदा उठाता है। अब यह ज़रूरी नहीं कि जो बातें कही गईं हर बच्चा ऐसा ही हो लेकिन जब आप एक हज़ार बंदों को देखेंगे तो आप महसूस करेंगे कि आम तौर पर बच्चों का रवय्या इसके मुताबिक़ ही होता है। सांइसदानों ने लाखों बच्चों को इस बात पर परखा और उन्होंने नफ़्सियात के यह उसूल निकाले, इसलिये बच्चों की यह तीन बातें हमेशा ज़हन में रखा करें कि बच्चे का पैदाइश का नम्बर (Birth Order) क्या है, इसी लिहाज़ से उनसे कुछ बातों की तवक़्क़ोअ़ रखनी चाहिये और फिर इसके

मुताबिक़ इसको डील करना चाहिये। यह एक जनरल बात आपको इसलिये कह दी कि आप के ज़हन में रहे कि बच्चों को डील करते हुए आप को पता हो कि आप किस बच्चे से डील कर रही हैं? उसके मसाइल (Problems) किस तरह के हो सकते हैं और आप ने उसके मस्ले किस तरह हल करना है।

बच्चे कच्चे होते हैं

एक बुन्यादी बात यह है कि बच्चे कच्चे होते हैं, उनके दिमाग़ अभी पुख़्ता नहीं होते, उनका कोई तजुर्बा नहीं होता है, छोटी उम्र होती है तो अपने कच्चे ज़हन की वजह से वह बच्चों वाली बातें करते हैं, तो बच्चे से बच्चों वाली बातों की ही तवक़्क़ोअ़ रखनी चाहिये। लिहाज़ा माओं और बहनों को चाहिये कि बच्चे से बड़ों वाली बातों की तवक़्क़ोअ़ मत करें। बच्चा जब बचपन की उम्र में है, ज़हन कच्चा है, तजुर्बा नहीं है, तो वह बचकाना बातें और हरकतें तो करेगा। लिहाज़ा तवक़्क़ुआ़त (Expectation) का लेवल भी इसी तरह रखना चाहिये।

बचपन तो बचपन ही होता है, बड़े बड़े औलिया का बचपन भी इसी तरह गुज़रा कि उन्होंने बचपन में ऐसे ही बचकाना फ़ितरत वाले कच्चे काम किये जो आम तौर पर बच्चे करते हैं।

नबी सल्ल0 के बचपन का एक वाक़िआः

नबी अलै0 के बचपन के वाक़िआत मुअर्रिख़ीन ने बहुत थोड़े लिखे हैं। सीरत की किताबों में आपकी जवानी के वाक़िआत देखें तो वह अगर निन्नावे फ़ीसद हैं तो बचपन के

वाक़िआत एक फ़ीसद भी नहीं मिलते। वजह यह थी कि कोई जानता भी नहीं था कि यह बच्चा जो आज गोदों में पल रहा है, उसने बड़े होकर पूरी दुन्या का मुअ़ल्लिम बनना है और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का महबूब होता है। इसलिये बचपन के वाक़िआत किताबों में इतने ज़्यादा नहीं क़लमबंद किये गये। चंद एक वाक़िआत हैं जिनमें से कुछ वाक़िआत तो नबी अलै० ने ख़ुद ही बतला दिये।

आम तौर पर बच्चे की आदत होती है कि उसके जब दांत निकल रहे हों तो कोई चीज़ भी उसके मुंह में डालो तो वह उसको काटता है। हर बच्चे की उम्र में एक ख़ास हिस्सा ऐसा आता है कि उसे चीज़ को चबाने की आदत हो जाती है। आप उंगली दें तो उंगली को काटेगा, अपनी हथेली दें तो हथेली को काटेगा, यह बच्चे की फ़ित्रत है।

ग़ालिबन ऐसी ही उम्र होगी कि जिसमें इंसान के दांत निकलते हैं और उसको काटने में मज़ा भी आता है। एक मर्तबा आप की रज़ाई बहन "शीमा" ने आपको उठाया और आपको कंधे से लगाया तो नबी अलै० ने कंधे पर दंदान मुबारक से काटा। यह इतना ज़्यादा था कि उसके निशान पड़ गए। अल्लाह की शान देखें कि यह निशान उनके रहा। एक मर्तबा किसी ग़ज़वा में उनके क़बीला के लोगों को गिरफ़्तार करके लाया गया, शीमा उस वक़्त बूढ़ी हो चुकी थीं, वह नबी अलै० की ख़िदमत में आई और उन्होंने आकर बताया कि मैं आपकी बहन हूं। नबी अलै० ने फ़रमाया कि मैं तो अपने बाप का एक ही बेटा हूं, आप मेरी बहन कैसे? उसने बताया कि मैं हलीमा की बेटी, आप की रज़ाई बहन हूं। निशानी के तौर पर

उसने कहा कि एक मर्तबा मैंने आपको उठाया हुआ था तो आपने मुझे काटा था और मेरे जिस्म पर वह निशान आज भी मौजूद है। नबी अलै0 ने उस निशान को देखा तो आपको भी याद आ गया कि हां बचपन में ऐसा मुआमला पेश आया था। इसके बाद नबी अलै0 ने अपनी चादर बिछाई और अपनी बहन को उस चादर पर बिठाया। देखें कि आप सल्ल0 मुस्तक़बिल के मुअ़ल्लिमे इंसानियत थे लेकिन आप सल्ल0 से भी बचपन में बचकाना फ़ित्रत का इज़्हार हो रहा है।

इसी लिये वालिदैन को चाहिये कि बच्चों से बचपन वाली बातों की ही तवक़्क़ोअ़ रखें कि बचपन की उम्र है, ज़हन कच्चा है, तजुर्बा नहीं है, तो वह इस क़िस्म की बातें और हरकतें करेगा। न करेग तो उसे बच्चा कौन कहे।

बच्चा या बूढ़ा:

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां रह0 ने एक मर्तबा हज़रत शाह गुलाम अली देहलवी रह0 से फ़रमाया "गुलाम अली किसी बच्चे को हमारे पास ले आना।" हज़रत शाह साहब अपने घर गए और बच्चे को हज़रत की ख़िदमत में लाने के लिये तैयार किया। काफ़ी देर उसे समझाते रहे कि हज़रत रह0 की ख़िदमत में ऐसे बैठना और ऐसे करना। ऐसे न करना"। बच्चा जब अच्छी तरह मुआमला समझ गया तो अगले दिन हज़रत शाह साहब उसे हज़रत रह0 की ख़िदमत में लाए। बच्चे ने सलाम किया और बाअदब एक तरफ़ बैठ गया। कुछ देर गुज़री तो हज़रत रह0 ने फ़रमाया "गुलाम अली हमने तो कहा था किसी बच्चे को हमारे पास ले आना।"। हज़रत शाह साहब ने अ़र्ज़ किया "हज़रत बच्चे को

तो ले आया हूं"। हज़रत रह० ने फ़रमाया "यह कोई बच्चा है यह तो बूढ़ा मअलूम होता है"। यअ़नी बच्चा तो उस वक़्त अच्छा लगता है जब बच्चों वाली बातें करे, उछल कूद करे, आपने बच्चे को बूढ़ा बनाकर बिठा दिया, वह लगता ही नहीं कि बच्चा है।

शैख़ सअ़दी रह० के बचपन के कुछ वाक़िआत:

☆......देखिये! हज़रत शैख़ सअ़दी अपनी बात ख़ुद बतलाते हैं। फ़रमाते हैं कि मुझे मेरी वालिदा ने सोने की अंगूठी पहना दी, मैं वह अंगूठी पहन कर बाहर गली में निकला तो एक ठग मिल गया, उस ठग के पास गुड़ की डली थी, उसने मुझे उठाकर प्यार किया और मुझे कहने लगा कि तुम अपनी अंगूठी को चखो! मैंने अंगूठी को ज़बान से लगाया तो बे ज़ाइक़ा थी। फिर इसके बाद उसने गुड़ की डली दी कि इसको चखो! जब मैंने गुड़ को चखा तो बड़ा मज़ेदार था, कहने लगा कि मज़ेदार चीज़ ले ले और बे मज़ा चीज़ दे दो। कहने लगे कि मुझ गुड़ का इतना मज़ा आया कि मैंने उसे अंगूठी उतारने दी और गुड़ की डली लेकर घर वापस आ गया। अब बच्चे थे, कच्चे थे, गुड़ की डली के बदले सोने की अंगूठी देकर आ गए। तो इस उम्र में इंसान ग़लतियां भी करता है और सीखता भी है।

☆......फ़रमाते हैं: कि मैं एक मर्तबा अपने वालिद के साथ मेला देखने गया, वालिद ने कहा कि बेटा! मज़बूती से मेरा हाथ पकड़ना, भीड़ ज़्यादा है, छोड़ना नहीं, मैंने कहा, बहुत अच्छा। अब मैं चल भी रहा था, इधर उधर भी देख रहा था, इधर उधर की चीज़ें देखने में ऐसा महव हुआ कि हाथ

छूट गया। इसके बाद बहुत देर वालिद मुझे ढूंढते रहे, मैं वालिद साहब को ढूंढता रहा, काफ़ी देर के बाद और परेशानी उठाने के बाद वालिद साहब ने मुझे ढूंढ लिया। जब उन्होंने मुझे ढूंढा तो मुझे कहा कि तुम्हें मैंने कहा था कि हाथ पकड़े रखना, तुमने क्यों छोड़ा? तो मैंने फिर उनको कहा कि मैं किसी चीज़ को देखने में मशगूल हो गया, तवज्जोह न रही, तो वालिद साहब ने मेरे कान खींचे और कान खींच कर कहा कि देखो बच्चे! जिस तरह तुमने अपने बड़े का हाथ मज़बूती से न पकड़ा तो दुन्या के मेले में गुम हो गए, इसी तरह तुम बड़े होकर अगर अपने बड़ों का हाथ मज़बूती से नहीं पकड़ोगे तो फिर दुन्या के मेले में गुम हो जाओगे। कहने लगे कि बचपन की वालिद साहब की बताई हुई यह बात मुझे आज भी याद आती है कि वाक़ई जो अपने बड़ों का साथ छोड़ बैठता है वह फिर दुन्या की झिलमिलाहट के अंदर गुम ही हो जाया करता है।

☆......फ़रमाते हैंः मैं छोटा सा था, अपने वालिद के साथ तहज्जुद में उठ जाया करता था। एक रात मैंने तहज्जुद पढ़ी तो घर कुछ लोग सोए हुए थे, मैंने अब्बू से कहाः अब्बू! देखो यह लोग सोए पड़े हैं, उठ कर तहज्जुद नहीं पढ़ते, तो वालिद साहब ने कहा कि बेटाः तुम अगर सोए रहते तो ज़्यादा बेहतर था, इसलिये कि अब जो तुमने यह बात की, यह ग़ीबत में दाख़िल है, इनको सोने पर इतना गुनाह नहीं होगा, जितना तुम्हें ग़ीबत के करने पर गुनाह हुआ। तो देखिये! किस तरह बच्चा बातें कर रहा है और अक़्लमंद बाप उस बच्चे को साथ साथ तअ़लीम भी दे रहा है, उसकी तरबियत भी कर रहा है।

☆......यह शैख़ सअ़दी रह0 एक बड़े उस्ताद के शार्गिद बने (जिनका नाम था "इब्ने जौज़ी रह0" जिन्होंने तलबीसे इबलीस लिखी) तो फ़रमाते हैं कि मैं शाफ़ई मज़हब पे था और उस्ताद मुझे इसके मुताबिक़ तअ़लीम दे रहे थे। एक दिन उस्ताद ने मुझे पढ़ाया कि रोज़े में मिस्वाक नहीं करनी चाहिये, इमामे अअ़ज़म अबू हनीफ़ा रह0 के नज़दीक रोज़े में मिस्वाक का करना जाइज़ है, मगर इमाम शाफ़ई रह0 इसमें बहुत एहतियात बरतते हैं, वह फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह को रोज़ेदार के मुंह की महक ही अच्छी लगती है तो मिस्वाक क्या करनी? बहरहाल उनका अपना नुक़्तए नज़र है। कहने लगे कि मैंने जब यह पढ़ा तो मैंने घर आकर अपने वालिद से कहा: अब्बू! रोज़े में मिस्वाक नहीं करनी चाहिये। जब मैंने यह बताया तो मेरे वालिद ने कहा कि बेटे! तुम रोज़े में मिस्वाक न करने की तो इतनी इहतियात कर रहे हो और अभी थोड़ी देर पहले जो तुमने बात की थी, वह ग़ीबत थी और तुमने गोया अपने मुर्दा भाई का गोश्त खा लिया, तो क्या रोज़े में यह गोश्त खाना तुम्हारे लिये जाइज़ था? कहने लगे: तब मुझे समझ में आई कि वाक़ई रोज़े की हालत में ग़ीबत से बहुत बचना चाहिये।

इस्लाह होनी चाहिये:

तो यह मैं मिसाल इसलिये अ़र्ज़ कर रहा हूं कि आपको यह पता रहे कि जो अहले इल्म होते हैं, मर्द हों या औरतें हों, वह भी अपने घर के बच्चों से बातें करते हैं। मगर वह बात बात पर उनको समझाते भी रहते हैं। और इसी तरह बच्चे (माशा अल्लाह) पलते रहते हैं और साथ संवरते भी रहते हैं।

और जिन वालिदैन को इल्म नहीं होता, या तो वह ग़लतियों पे भी दरगुज़र कर देंगे, प्यार कर लेंगे और या फिर इंसान को छोटी छोटी बात पर, जाइज़ सवाल पर भी डांट कर चुप करवा लेंगी। यह दोनों चीज़ें ग़लत होती हैं। बच्चे कच्चे होते हैं, ऐसे काम करते हैं, ऐसी हरकतें करते हैं कि जो नापसंदीदा होती हैं, मगर उनको तरीक़े से समझाना चाहिये और उनसे एक्सपेक्ट करना चाहिये कि यह शरारतें भी करेंगे, और कुछ और इस क़िस्म के काम भी करेंगे।

चुनांचे शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिया रह० फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा मुझसे बहुत मुहब्बत करती थीं, एक दफ़ा उन्होंने मुझे बड़ा खूबसूरत तकिया बनाकर दिया। मुझे वह तकिया बड़ा बच्छा लगता, मैं उसे सर के नीचे रखने की बजाए सीने पर रख लेता, एक दिन मेरे वालिद साहब ने तकिया मांगा तो मैंने पूछा कि कौनसा तकिया लाऊं, अपने वाला या दूसरा। वालिद साहब ने मुझे बुलाया और ज़ोरदार थप्पड़ रसीद किया, फ़रमाया "तूने कमाई की है जो अपना तकिया कहते हो" हज़रत शैख़ुल हदीस रह० फ़रमाया करते थे कि उसके बाद दुन्या की कोई चीज़ मुझे अच्छी नहीं लगती थी।

साहबज़ादगी

बअ़ज़ औक़ात जो बड़े उलमा या मशाइख़ के बच्चे होते हैं, जो साहबज़ादे होते हैं, उनमें थोड़ी अना पैदा हो जाती है। क्योंकि मौलाना साहब का हर मुअतक़िद आकर उससे लाड करता है। कोई उसे उठा रहा है, कोई चीज़ें लाकर दे रहा है, कोई घुमाने फिराने ले जा रहा है, तो इस नाज़ बरदारी की

वजह से बच्चे में कुछ जाह तलबी और ख़ुदग़र्ज़ी, कामचोरी या इस तरह की चीज़ें आ जाती हैं जिससे मिज़ाज बिगड़ जाता है। ज़ाहिर है जब मिज़ाज बिगड़ जाए तो फिर बात बात पर झगड़ा होता है, कभी दूसरे बच्चों के साथ फड्डा कभी अपने बड़ों के साथ ज़िद्द। लिहाज़ा उलमा और मुक़्तदा हज़रात को अपने बच्चों पर इस हवाले से ख़ास तौर पर नज़र रखने की ज़रूरत होती है। यही वजह है शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिया रह0 के वालिद उनको बचपन में बअ़ज़ औक़ात मारते थे और फ़रमाते थे कि यह साहबज़ादगी का शुऊर बड़ी मुश्किल से निकलता है। तो हमारे अकाबिर यूं अपने बच्चों को बचपन से ही सबक़ सिखाया करते थे।

बच्चे घर के माहौल के मुताबिक़ खेलते हैं:

बच्चे जो कुछ खेलते हैं तो वह भी अपने घर के माहौल के मुताबिक़ ही खेलते हैं। वह अपने बड़ों को जो करते देखते हैं फिर वही उनका खेल बन जाता है। इसीलिये हर घर का बच्चा, अपने घर वालों के माहौल और मिज़ाज के मुताबिक़ ढलता है।

मौलाना तलहा रह0 ख़ुद एक मर्तबा फ़रमाने लगे कि मैं छोटा, गली में बैठा हुआ था और एक बच्चे को बैअ़त कर रहा था, इसलिये कि मैंने अपने वालिद को बैअ़त करते देखा था। अब मैं छोटा सा! और एक बच्चे को बैअ़त के कलिमात पढ़ा रहा था, उसके हाथ अपने हाथ में लिये हुए थे। अल्लाह की शान कि उधर से मदनी र0 अ0 तशरीफ़ ले आए, उन्होंने मुझे आकर देखा तो चूंकि शफ़क़त बहुत थी, शैख़ुल हदीस रह0 के साथ बहुत ज़्यादा गहरा तअ़ल्लुक़ था। मुझे देखा तो

वह कहने लगे कि साहबज़ादे साहब! हमें भी बैअ़त कर लो। कहने लगे मैंने कहाः आएं बैठ जाएं! मुझे क्या पता था कि यह बड़े मियां कौन हैं? तो मैंने हज़रत मदनी रह0 के हाथ अपने हाथ में पकड़े और मैंने कुछ कलिमात पढ़ कर कहा कि अच्छा! मैंने आपको भी बैअ़त कर लिया। तो देखो! बच्चा है, लेकिन वह हज़रत मदनी रह0 को बैअ़त कर रहा है। बच्चे इसी तरह के काम करते हैं।

हज़रत मौलाना आज़ाद रह0 के बचपन के वाक़िआतः

☆......मौलाना आज़ाद रह0 फ़रमाते हैं कि मैं छोटा सा था तो घर में वालिद साहब का अमामा पड़ा होता था, मैं क्या करता! अपनी बहनों को इकट्ठा कर लेता और अपने सर पे अपने वालिद का अमामा रखता और बड़ी शान से अकड़ कर चलता और मैं बहनों को कहताः "हटो! रास्ता दो, देहली के मौलाना आ रहे हैं" इसलिये कि बचपन में मैंने सुना हुआ था कि देहली में कोई बड़े मौलाना रहते हैं। और फिर मैं अपनी बहनों को कहता कि तुम लोग मेरा इस्तिक़बाल करो और इस्तिक़बाल में तुम नअ़रे लगाओ! अब बहनें कहतीं कि हम क्यों नअ़रे लगाएं? इसलिये कि मौलाना जो आ रहे हैं, तो वह कहतीं कि नहीं मौलाना के इस्तिक़बाल के लिये तो हज़ारों लोग होते हैं, हम तो दो हैं, तो वह कहते कि नहीं तुम यूंही समझ लो कि तुम हज़ारों हो और मेरा इस्तिक़बाल कर रहे हो, लिहाज़ा तुम नअ़रे लगाओ! अब छोटा सा बच्चा! देखो! अपनी बहनों के साथ किस तरह इस बात पर खेल रहा है।

☆......उनकी एक बड़ी बहन थी, एक मर्तबा उसने बचपन में उनको कोई काम कहा, उन्होंने न किया, ज़िद कर

गए। तो बड़ी बहन ख़फ़ा हुई और उसने अपने वालिद को कहा कि अब्बू! यह हमारे बच्चे तो बिल्कुल सड़े हुए अंडों की तरह हैं, जब बहन ने कहा कि यह तो सड़े हुए अंडों की तरह हैं तो उन्होंने उसी वक़्त अपने मुंह से "चूं चूं" की आवाज़ निकालनी शुरू कर दी और कहा कि अगर अंडे सड़े हुए होते तो उसमें से यह मुर्ग़ी के बच्चे कैसे निकलते? अब छोटा बच्चा है, देखो! वह अपनी बहन की बात पर क्या रद्दे अमल दिखा रहा है?

ख़िलाफ़ तवक़्क़ोअ रद्दे अमल:

हां कई मर्तबा वह ऐसे React (रद्दे अमल) करते हैं कि बंदे को समझ ही नहीं आई कि मस्ला क्या है? इसलिये कि कभी वह सहम जाते हैं, कभी वह ख़ौफ़ ज़दा हो जाते हैं, कभी वह हिम्मत गिरा बैठते हैं, तो इस सूरत में बड़ों को थोड़ी हिक्मत और दानिशमंदी से उनको डील करने की ज़रूरत होती है।

चुनांचे मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0 अपने बारे में बताया करते थे कि जब मैं थोड़ा सा बड़ा हुआ तो मेरे घर में क़ुर्आन मजीद शुरू करने की तक़रीब हुई, उस ज़माने में उसको "रस्मे बिस्मिल्लाह" कहा जाता था और यह दो रसमें बड़े एहतिमाम से मनाई जाती थीं: एक "रस्मे बिस्मिल्लाह" क़ुर्आन मजीद शुरू करवाने से पहले और एक "रस्मे आमीन"। जब क़ुर्आन मजीद ख़त्म हुआ करता था, उस ज़माने की यह तक़रीबात हुआ करती थीं। कहने लगे कि अम्मी ने मुझे नहलाया, बहन ने मुझे अच्छे कपड़े पहनाए, ख़ुशबू लगाई, ख़ूब सजा दिया गया, घर के अंदर रिशतादारों

को बुलाया गया, सबने अच्छे कपड़े पहने हुए हैं, मिठाई का इंतिज़ाम किया हुआ है, हत्ता कि एक क़ारी साहब को भी बुला लिया गया, जिन्होंने आकर मुझे बिस्मिल्लाह पढ़ानी थी। अब जब सारे लोग खुशियों के साथ इकट्ठे मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुए, हत्ता कि घर की औरतें वह भी पर्दे के पीछे लग गईं और खुश हो रही हैं कि बच्चा आज अल्लाह का कुर्आन शुरू करेगा। चुनांचे क़ारी साहब ने मुझे कहा कि बच्चे! पढ़ो! बिस्मिल्लाह, कहने लगेः मुझे ऐसी चुप लग गई कि मैंने कुछ भी न पढ़ा। बार बार क़ारी साहब कह रहे हैं। हत्ताकि मुझे वालिद साहब ने कहा, दूसरों ने कहा, मगर माहौल कुछ ऐसा था कि मुझे चुप ही लग गई और मैं बोलने पर आमादा ही न हुआ। बहुत समझाया गया हत्ता कि दस पंद्रह मिनट खूब मन्नतें की गईं लेकिन मैं न बोला, चुप लगी हुई थी हत्ता कि लोग उठ गए कि चलो जी अगर नहीं पढ़ते तो कोई बात नहीं। औरतों के दिलों के अंदर भी उदासी आ गई कि बच्चे ने इस मौका पर नहीं पढ़ा, वालिद को गुस्सा आया तो वालिद ने मुझे फिर एक थप्पड़ भी लगा दिया, जब सब तुझे कह रहे हैं कि पढ़ो तो पढ़ क्यों नहीं रहे? कहने लगे, मैंने थप्पड़ भी खा लिया और आंसू भी बहा लिये, पढ़ता फिर भी नहीं।

ख़ैर क्या हुआ कि मेरे एक क़रीबी रिश्तेदार थे जो बड़े ही समझदार थे, उन्होंने मुझे उठा लिया और कहा कि क्यों रोते हो? कोई बात नहीं, रो नहीं। वह मुझे उठाने के बाद थोड़ा इधर उधर ले गए, मुझसे बातें करते रहे, बातें करने के बाद मुझे कहने लगेः अरे मियां! तुम्हारे अंदर इतनी हिम्मत ही

नही कि तुम दो लफ़्ज़ पढ़ दो, क्या तुम्हें लोग बेवक़ूफ़ कहें तो यह तुम्हें अच्छा लगेगा? मैंने कहाः नहीं, मैं तो बेवक़ूफ़ नहीं हूं। उन्होंने कहा कि अगर तुम्हें लोग गंदा बच्चा कहें तो अच्छा लगेगा? मैंने कहाः नहीं, मैं गंदा बच्चा तो नहीं हूं। उन्होंने कहा कि गंदे बच्चे नहीं हो तो फिर उनको पढ़कर सुना दो! कि तुम बिस्मिल्लाह पढ़ना जानते हो। कहने लगेः जब उन्होंने मुझे इस तरह Properly (सही अंदाज़ में) डील किया, तो मैंने इतने ज़ोर से बिस्मिल्लाह पढ़ी कि क़ारी साहब तो क्या, घर में बैठने वाली औरतों ने भी बिस्मिल्लाह की आवाज़ सुनी।

तो अब देखिये! कि है तो बच्चा, लेकिन अगर उसको थप्पड़ मारा तो चुप लगी हुई थी और प्यार के साथ उसको डील किया तो उसने इतना ऊंचा पढ़ा कि दीवार के पार भी उसकी आवाज़ें जाने लग गईं। तो यह बच्चे आम तौर पर ऐसे ही करते हैं। अगर आपने बच्चे को कोई बात कही, उसने न कर दी, मानने पे तैयार ही न हीं, गुस्सा मत करें, आप उसका थोड़ा सा माहौल बदल दें, बात बदल दें। और बात बदलने के थोड़ी देर बाद आप जब फिर वही बात कहेंगी तो वह फ़ौरन कर लेगा। बच्चे की अल्लाह ने मेमोरी बहुत शार्ट बनाई होती है। इस शार्ट मेमोरी का फ़ाएदा उठाना चाहिये। और इससे डील करना बंदे को आना चाहिये।

छोटे बच्चों की समझ छोटी होती हैः

कहने लगे कि मैं छोटा था तो एक दिन अम्मी अब्बू आपस में बैठे बात कर रहे थे तो किसी ने कहा कि क़यामत का दिन होगा, बहुत गर्मी होगी और सूरज तो सवा नेज़े पे

होगा और पसीना होगा और बहुत मुश्किल होगी। तो सारी बातें सुन के मैं हंस पड़ा, तो अम्मी ने कहा कि बेटे! हंस क्यों रहे हो? तो मैंने कहाः अम्मी! जब इतनी ज़्यादा गर्मी होगी तो मैं गर्मी से बचने के लिये कमरे में चला जाऊंगा। तो कहने लगेः सारे घर वाले हंसने लगे। कि हश्र की गर्मी का तज़किरा और बच्चे का हाल देखो कि कह रहा हैः अम्मी! इस गर्मी से बचने के लिये मैं उस दिन कमरे में चला जाऊंगा। तो बच्चे की इतनी ही सोच होती है और इतना ही उसका मुआमला होता है।

चुनांचे हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहारनपूरी रह0 उनके घर में एक ख़ादिमा काम करती थी और उस ख़ादिमा का नाम रहमती था। वह घर के काम समेटती थी, क़रीब ही रहती थी। उसने एक बकरी भी पाली हुई थी। चुनांचे उस बकरी ने एक बच्चा दिया, छोटा सा मेमना। मौलाना यूसुफ़ रह0 (जो हज़रत मौलाना इलयास रह0 के साहबज़ादे थे और जानशीन थे) बचपन की उम्र में थे और वह हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहारनपूरी रह0 के यहां आया जाया करते थे। फ़रमाते हैं कि मैं जब वहां जाता था तो मुझे वह बकरी का छोटा सा बच्चा बहुत अच्छा लगता था। तो मैं अक्सर उस बकरी के साथ, उस बकरी के बच्चे के साथ खेलता था तो एक दफ़ा क्या हुआ? कि लोग आपस में हज की बातें कर रहे थे कि हमने हज पे जाना है। मैं उनकी बातें सुनता रहा, सुनता रहा। तो आख़िर में फिर मैंने कहा कि हां मैं भी हज पे जाऊंगा। तो किसी ने पूछ लिया कि कैसे हज पर जाओगे? मैंने कहाः कि रहमती की बकरी का जो छोटा बच्चा हैं मैं

उसकी पीठ पे सवार होकर हज के लिये जाऊंगा। अब देखो! छोटा सा बच्चा बचपन की उम्र में यह जवाब दे रहा है कि मैं बकरी के बच्चे की पीठ पर बैठ कर हज करूंगा। कहने लगे: यह बात ऐसी मशहूर हुई कि मौलाना ख़लीलुर्रहमान सहारनपूरी अलै0 जब भी कभी मुझे मिलते तो बचपन में मुझे देखकर कहते: हां सुनाओ बच्चे! तुम हज पे कैसे जाओगे और मैं आगे से कह देता कि बकरी के बच्चे की पीठ पे बैठ कर हज करूंगा तो हज़रत मुस्कुराया करते थे।

छोटे बच्चों की तमन्नाएं भी छोटी होती हैं:

यह उम्र ऐसी ही होती है, इंसान की यही छोटी सी दुन्या होती है। छोटे बच्चों की तमन्नाएं भी छोटी होती हैं।

☆......हज़रत अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0 कहते हैं: उस बचपन की उम्र में बस सारा दिन मुझे एक ही फ़िक्र होती थी कि शाम को एक ख़्वांचे वाला आता था वह कभी गंडेरियां बेचता था और कभी समोसे बेचता था और इस तरह की चटपटी चीज़ें बेचता था। सारा दिन बस मुझे उसकी फ़िक्र होती थी कि कब अस्र का वक़्त आए? और वह ख़्वांचे वाला सदा लगाए और मैं अम्मी से पैसा लूं और उससे जाकर चटपटी चीज़ लाकर खाऊं गोया उस वक़्त बच्चे की ज़िंदगी का सबसे बड़ा मक़्सद यही बना हुआ था।

☆......हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ रह0 फ़रमाते हैं कि मेरी पैदाइश देवबंद में हुई, वालिदैन वहीं रहते थे और वहीं पर मेरे लड़कपन की उम्र गुज़री, पढ़ने की इब्तिदा भी वहीं से हुई। फ़रमाते हैं: कि मैं अपने कज़न आक़िल के साथ खेल रहा था और हम आपस में सरकंडे खेल रहे थे यअ़नी चंद

सरकंडे के छोटे से टुकड़े थे एक दूसरे के साथ खेल रहे थेः यूं रखो, यूं फैंकों, तुम जीत जाओगे, यह हार जाएगा। कहने लगेः सरकंडों का खेल खेल रहा था कि उसने सारे ही सरकंडे मुझसे जीत लिये। फ़रमाते हैंः मैं इतना डिप्रेस हुआ कि इतना मेरा नुक़्सान हो मया। अब सोचो कि बच्चे की दुन्या क्या है कि अगर उससे किसी ने सरकंडे जीत लिये तो गोया उस पर पहाड़ टूट पड़ा। वह समझता है कि दुन्या का इतना बड़ा ख़ज़ाना उसके हाथ से किसी ने लूट लिया। बाद में फ़रमाते थे कि अब मैं सोचता हूं कि पूरी दुन्या की मेरी सामने क्या हक़ीक़त है? मगर बचपन में मेरा क्या हाल था! कि सरकंडों के चले जाने पर मैं इस क़द्र परेशान हो गया था। तो बचपन में इंसान की ऐसी ही उमंगें होती हैं और तमन्नाएं होती हैं।

अजीब व ग़रीब तोहफ़ाः

बल्कि अक्बर इलाहाबादी बड़े ज़रीफ़ शाइर गुज़रे हैं, मगर बहुत तअ़लीम याफ़्ता थे और अपने वक़्त के जज थे। चुनांचे उनका बेटा जब जवान हुआ तो उन्होंने उसकी शादी की। अब वलीमा की तक़रीब थी, इस वलीमा की तक़रीब में उन्होंने बड़े अच्छे तबक़े के लोगों को बुलाया हुआ थाः अमीर लोग, पढ़े लिखे लोग, मुआशरे के ज़िम्मादार लोग, बड़े बड़े इस तरह के जो लोग थे, वह आए हुए थे। और बेटा भी (माशा अल्लाह) जवानुल उम्र था और उस वक़्त उसकी ख़ुशी की तक़रीब थी, तो इस ख़ुशी की तक़रीब में उन्होंने एलान किया कि आज मैं अपने बेटे को एक तोहफ़ा दूंगा। अब उन्होंने तोहफ़ा एक काग़ज़ के अंदर लपेटा हुआ था यअ़नी गिफ़्ट पैक करवाया हुआ था। कहने लगे कि सारा मज्मा

मुतवज्जेह हो गया। बेटे की शादी है, वलीमा की तक़रीब है, बाप इतना मुअ़ज़्ज़ज़ आदमी है और वह अपने बेटे को वलीमा के ऊपर एक तोहफ़ा पेश कर रहा है। तो लोग समझते थे पता नहीं कि सोने का बना होगा? कोई डाइमंड होगा या कोई क़ीमती घड़ी होगी, क्या चीज़ होगी? कहने लगे कि सब लोगों ने दिलचस्पी ली कि आख़िर इस गिफ़्ट पैक के अंदर छिपा हुआ क्या है? कहने लगे कि जब वालिद साहब ने मुझे कहा: बेटे! इस गिफ़्ट पैक को खोलो! मैंने उसे खोलना शुरू किया तो एक तह थी, फिर उसके अंदर दूसरी तह, फिर उसके अंदर तीसरी तह, अब मैं खोलता जा रहा हूं और लोगों का तजस्सुस बढ़ता जा रहा है, खुद मेरा तजस्सुस भी बढ़ गया कि अब्बू मुझे इस मौक़ा पर क्या चीज़ दे रहे हैं? कहने लगे: कि जब मैंने आखिर में आख़िरी तह उतारी तो अंदर एक बच्चों के खेलने का छोटा सा खिलौना था, जब वह खिलौना निकला तो सारा मज्मा हंसने लगा। मैं थोड़ा सा शर्मिंदा भी हुआ कि मेरी वलीमा की तक़रीब थी और वालिद साहब ने मुझे यह खिलौना देना था और लोगों के सामने मेरी जग हंसाई होनी थी, मैं ज़रा ख़ामोश हो गया। ख़ैर लोग तो हंसे, मुस्कुराए, इंज्वाए किये और चले गए।

चंद दिन के बाद अब्बू से मेरी बात हो रही थी। मैंने कहा: अब्बू! आपने मेरे साथ ठीक नहीं किया......क्यों बेटे? इसलिये कि आपने मुझे इतने बड़े मज्मा के सामने मज़ाक़ बना दिया। सारे मुझ पर हंसने लगे कि मुझे आप ने इस तक़रीब की खुशी में यह छोटा सा खिलौना दिया। तो उस वक़्त वालिद ने बात समझाई कि देखो बेटा! मैं तुम्हें एक

मैसेज देना चाहता था, एक पैग़ाम समझाना चाहता था। बचपन में एक मर्तबा मेरे पास पैसे नहीं थे और तुमने इसी खिलौने का मुझसे मुतालबा किया था, जो मैं ख़रीद न सका। तो आप इतना रोए, इतना ख़फ़ा हुए कि एक हफ़्ता मुझसे बोले भी नहीं कि मुझे खिलौना क्यों नहीं लेकर दिया? इस खिलौने की आपको इतनी चाहत थी कि अपने वालिद से एक हफ़्ता कलाम तक न किया। मैंने यह सोचा कि आज इस शादी की खुशी की तक़रीब में, मैं यह खिलौना आपको लेकर दूं और आपको यह समझाऊं कि देखो बेटे! बचपन में इस खिलौने को लेना यह आपकी आरज़ू थी, आप की तमन्ना थी लेकिन जब आप जवानी में पहुंचे और भरे मज्मा में लोगों के सामने आपकी तमन्ना को पेश किया, तो आपको खुद भी शर्मिंदगी हुई कि क्या इस चीज़ के पीछे मैंने अपने वालिद से मुंह मोड़ लिया था! मैं यह पैग़ाम देना चाहता था कि बेटे! बचपन की तमन्नाएं अगर बंदे के सामने जवानी में खोली जाएं, तो भरे मज्मा में बंदे को शर्मिंदगी होती है। तुम जवानी में अपनी कोई ऐसी आरज़ू और तमन्ना मत बनाना कि कल क़्यामत के मज्मा में अगर उसे खोल दिया जाए तो तुम्हें वहां जाकर शर्मिंदगी हो। तो देखिये! जो अच्छे मां बाप होते हैं वह बच्चों को इन छोटी छोटी बातों में ही अच्छी तअ़लीम देते हैं। और बिलआख़िर बच्चों को अच्छा इंसान बना देते हैं।

ज़िम्मादाराना तर्ज़े अमलः

अब देखिये! कि कुछ बच्चे ऐसे होते हैं कि जिनमें शुरू से ही एहसासे ज़िम्मादारी होता है और लड़कपन में ही वह बड़े ज़िम्मादार बन कर रहते हैं। जैसे हज़रत मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह

रह0 फ़रमाते हैं कि बचपन में मेरे घर के हालात ग़रीबी के थे, मगर मैंने किसी से टोपियां बनाना सीख लिया था, जैसे औरतें कुरैश के साथ बैठ के मुख़्तलिफ़ चीज़ें बनाती रहती हैं। कहने लगे कि बस मैं भी इसी तरह बैठ कर वह टोपियां बनाता रहता था हत्ता कि कई मर्तबा उस्ताद क्लास में पढ़ा रहा होता था मैं पीछे बैठा होता था, सबक़ भी सुन रहा होता था और साथ साथ टोपी भी बना रहा होता था। मगर अल्लाह ने ज़हन ऐसा दिया था कि साथ वाले बच्चे अगर कोई चीज़ नहीं समझ सकते थे तो मैं टोपी बनाना छोड़कर उनको वह बात सुना देता था। तो वह हैरान होते थे कि टोपियां बनाते हुए उस्ताद का दर्स सुनते हो और इतना तुम्हें याद होता है। फ़रमाते कि मैं इस तरह टाइम बचा के टोपियां बनाता, उनको बेचता और उससे जो मुझे थोड़े से पैसे मिलते, उससे मैं अपने मदरसे का ख़र्चा चलाया करता था। तो बअ़ज़ बच्चे से भी होते हैं कि बचपन में उनको अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त एहसासे ज़िम्मादारी दे देता है।

खुद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ रह0 फ़रमाते हैं कि मैं अपनी बस्ती से जब दारुल उलूम में पढ़ने के लिये आता तो सर्दियों की रातों में इम्तिहानों के क़रीब ज़रा देर तक पढ़ना होता था, तैयारी करनी होती थी। जब मैं वापस लौट के आता तो घर के सारे लोग सोए होते थे। अम्मी उठती और उस वक़्त मुझे खाना गर्म करके देती तो मैं अम्मी की मन्नत समाजत करता कि आप क्यों सर्दियों में उठती हैं? बस आप खाना रख दिया करें, मैं खुद ही आके खा लिया करूंगा, बड़ी मुश्किल से अम्मी को मैंने मनाया। फ़रमाते हैं कि मैं जब

आता तो सालन जमा हुआ होता, मैं उसके ऊपर से जमी हुई तह हटा दिया करता था और ठंडा खाना खाकर गुज़ारा कर लेता, लेकिन मैं अपनी तअ़लीम में हर्ज नहीं आने देता था। अब देखो! जिन बच्चों के अंदर बचपन, लड़कपन से यूं इल्म का शग़फ़ हो, शौक़ हो, तलब हो, एहसासे ज़िम्मादारी हो और वह इल्म की ख़ातिर इस तरह अपनी ज़रूरतों को भी क़ुर्बान करें, यह वह बच्चे होते हैं जो अपनी जवानी में आसमाने इल्म पर सितारे बन कर चमका करते हैं। फिर एक वक़्त आया, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस बच्चे को मुफ़्तिये अअ़ज़म पाकिस्तान बना दिया।

अच्छी दोस्ती के असरातः

बचपन में बच्चे का ज़हन कच्चा होता है। मां बाप को यह चाहिये कि वह इस बात पर बहुत ज़्यादा तवज्जोह दें कि वह किनके साथ खेल रहा है। इसलिये कि दोस्त से वह इतना कुछ सीखता है कि जितना मां बाप से नहीं सीखता। बच्ची है तो सहेली से सीखेगी। बच्चा है तो अपने दोस्त से सीखेगा। इसलिये मौलाना यहया रह0 फ़रमाते थे कि अगर्चे बच्चा बिल्कुल कुंद ज़हन हो, लेकिन दोस्त उसका नेक हो तो उस बच्चे की कशती कभी न कभी किनारे लग जाएगी और बच्चा कितना ही ज़हीन क्यों न हो, अगर दोस्त उसका बुरा हो तो कभी न कभी उसकी कशती बीच दरिया में डूब जाएगी। चुनांचे उन्होंने हज़रत शैखुल हदीस रह0 की कितनी अच्छी तरबियत की कि उनके बेटे फिर अपने वक़्त के शैखुल हदीस बने और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको क्या क़बूलियते आम्मा अता फ़रमाई!

सआदत आसार बच्चे:

बअ़ज़ बच्चे बचपन में ही सआ़दत के आसार लेकर आते हैं। हज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी रह० के एक बेटे थे, हाफ़िज़ अहमद साहब। अल्लाह की शान कि उनकी शादी हुई, एक बच्चा हुआ जो बचपन में ही फ़ौत हो गया, फिर कुछ अर्सा बच्चे ही नहीं हुए, उम्मीद ही नहीं लगी। सब लोग फ़िक्रमंद थे और सब चाहते थे कि ख़ानदाने क़ासमी का यह सिलसिला चलता रहे, इल्मी घराना और यह इल्मी यादगारें आगे बढ़ती रहें, क़्यामत तक इनका फ़ैज़ चले, सब लोग दुआएं करते थे, कोई उम्मीद ही नहीं नज़र आती थी। एक बुज़ुर्ग थे, फ़तहपूर के रहने वाले, किसी ने उनकी तरफ़ किसी जाने वाले आदमी के हाथ पैग़ाम देकर भेजा कि हज़रत! हाफ़िज़ अहमद साहब के लिये औलाद की दुआ करें। यह गए और इन्होंने जाकर पैग़ाम दिया, वह बुज़ुर्ग इस ख़ानदान की इल्मी वजाहत और इल्मी मक़ाम को जानते थे, इन्होंने जब सुना तो थोड़ी देर तो ख़ामोश रहे फिर कहने लगे: हां हां बच्चा होगा, हाफ़िज़ होगा, क़ारी होगा, हाजी होगा, आलिम होगा, अपने वक़्त का मुक़्तदा होगा, यह अलफ़ाज़ कहे। इसके चंद दिन बाद उनकी अहलिया को उम्मीद लग गई और अल्लाह ने उनको बेटा दिया, जो बड़ा होकर हज़रत क़ारी मुहम्मद तय्यब (रह0) बना। तो देखिये! बसा औक़ात ऐसे भी होता है कि मां के पेट से ही अल्लाह उनको विलायत का नूर अता फ़रमा देता है। ऐसी शख़्सियत ने पैदा होना होता है तो बच्चे को बहुत सारी बातें बचपन में पेश आती हैं।

ज़िद्द का इलाज कैसे किया?

मां बाप को मअ़लूम होना चाहिये कि बच्चे को इस उम्र

में डील कैसे करना है। हज़रत मुफ़्ती रशीद अहमद गंगोही रह0 फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा वालिदा ने दूध दिया हम दो भाईयों को मेरा बड़ा भाई था और मैं था, तो मैं ज़िद्द करने लगा कि पहले मैं पियूंगा। चूंकि वालिदा ने ग्लास भाई के हाथ में दिया था, इसलिये भाई ने कहा कि नहीं पहले मैंने ही पीना है। अब मैं जितना रो रहा हूं ज़िद्द कर रहा हूं। भाई कहता है हरगिज़ नहीं मैं पहले पियूंगा। कहने लगेः जब मैं ज़्यादा रोया धोया और ऊधम मचाया तो भाई ने गुस्से में आके अपना भी दूध पिया और मेरे हिस्से का भी दूध पी लिया और ख़ाली ग्लास एक तरफ़ को रख दिया कि अब तुम्हें दूध मिलना ही नहीं। फ़रमाते हैं कि ऐसा यह वाक़िआ मेरे ज़हन पर नक़्श हुआ कि इसके बाद पूरी ज़िंदगी मैंने कभी भी ज़िद्द न की, यह सोचते हुए कि ज़िद्द करने से तो इंसान अपने हिससे से भी महरूम हो जाया करता है। तो एक सबक़ सीखा उन्होंने इस बचपन की ज़िंदगी में।

ताहम यह तो जनरल बातें थीं। जो आप को बच्चों के बारे में बताईं ताकि अंडरस्टैंडिंग रहे कि बच्चे से डील करते हुए हमें क्या चीज़ ज़हन में रखनी चाहिये?

झगड़े के तीन मरहलेः

हां! बच्चों के झगड़े में यह बात समझें कि झगड़े होने के तीन Step (क़दम) होते हैंः पहला क़दम यह होता है कि कोई चीज़ बच्चे को पसंद नहीं आती वह उसे Dislike (नापसंद) करता है। फिर दूसरा क़दम होता है कि उस नापसंदीदा चीज़ या बात पर उसको नाराज़गी हो जाती है। और नाराज़गी के बाद तीसरा क़दम फिर झगड़ा बनता है। यअ़नी झगड़ा एक दम नहीं हो जाता बल्कि झगड़े से पहले दो

Step (क़दम) होते हैं।

झगड़ों की नौइयत:

बच्चों के झगड़े छोटी छोटी चीज़ों पर होते हैं, मसलन किसी ने खिलौना छीन लिया, आपस में झगड़ा हो गया, आम घर में लगा हुआ था, दरख़्त से नीचे आ गिरा, एक ने कहा मैंने उठाना है, दूसरे ने कहा मैंने, चलो इस बात पर आपस में झगड़ा हो गया।

एक बच्चा बड़ा था एक छोटा, बड़े ने छोटे को मुंह चिड़ा दिया और इस बात पर आपस में झगड़ा हो गया। दो बच्चे आपस में खेल रहे थे, खेलते हुए एक जीत गया तो हारने वाले ने झगड़ा कर दिया, रोना धोना शुरू कर दिया तो बच्चे की यह फ़ितरत होती है कि वह चाहता है मेरी ख़्वाहिश पूरी हो।

बच्चे अपने जज़्बात का इज़्हार रोकर करते हैं:

यह बात ज़रा तवज्जोह से सुनें! बच्चे की अल्लाह ने यह फ़ितरत बनाई होती है कि वह चाहता है मेरी बात पूरी हो, इसलिये तो इंसान के नफ़्स को बच्चे से तश्बीह देते हैं कि नफ़्स भी यही चाहता है कि मेरी ख़्वाहिश पूरी हो, हर बच्चे की यह फ़ितरत होती है कि मेरी ख़्वाहिश पूरी हो, मगर इसके इज़्हार में वह बच्चा बेतकल्लुफ़ होता है। वह गहराई नहीं होती कि अंदर से और और ऊपर से और, यह कैफ़ियत अल्लाह तआला बड़ों को दे देते हैं कि वह ऊपर से Smiling (मुस्कुराहट) और अंदर से Boiling (उबाल) होते हैं। उनके अंदर यह दो रंगी आ जाती है। इतनी गहराई आ जाती है कि वह दूसरे को अपने जज़्बात का पता नहीं चलने देते कि अंदर

क्या है? बच्चे, बच्चे होते हैं, वह अपने जज़्बात के इज़्हार में बेतकल्लुफ़ होते हैं। कोई भी मुआमला हो, वह अपनी ख़ुशी का इज़्हार बेतकल्लुफ़ कर देते हैं और अपनी नापसंदीदगी का इज़्हार भी बेतकल्लुफ़ कर देते हैं, इसको वह होल्ड नहीं कर सकते। और फिर कई मर्तबा उनको ज़बान से इज़्हार करने का पूरा तरीक़ा नहीं आता, अलफ़ाज़ ही नहीं आते तो उनके पास एक रोना धोना ही तो होता है। इसलिये बच्चे नापसंदीदगी का इज़्हार रो धोकर किया करते हैं।

बच्चे कई मर्तबा अपने रोने को टोल के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। जैसे कई मर्तबा जानवर होता है, कि दूर से ही आवाज़ निकालते कि जैसे हमला कर रहा है मगर हमला नहीं करना होता वह कह रहा होता है कि Beware (ख़बरदार) ज़रा दूर रहो। काशन तो उसने वह देनी होती है मगर काशन देने के लिये वह करता ऐसे है जैसे हमला कर रहा है इसको Mock Attack (दिखावे का हमला) कहते हैं।

तो बच्चे कई मर्तबा अपनी मां को मुतवज्जेह करने के लिये दिखावे का रोना रोते हैं। तो जो माएं ज़रा सी ऊं ऊं पर फ़ौरन भागी आती हैं फिर उन बच्चों को रोने की आदत भी पड़ जाती है और गोदों का भी चस्का पड़ जाता है, वह फिर नीचे उतरने का नाम ही नहीं लेते। बच्चे का रो पड़ना कोई इतनी बड़ी बात नहीं होती, कई मर्तबा उसके रोने को बर्दाश्त करना होता है। बच्चे को समझाना होता है कि हर मर्तबा हर बात पे रो पड़ना, यह कोई अच्छी आदत नहीं होती। चुनांचे जिन बच्चों को रोने की आदत पड़ जाती है, वह माओं के लिये मुसीबत बने रहते हैं। उनको सुख का सांस ही नहीं लेने

देते। तो इसलिये बच्चों के रोने पर कब सही रीएक्ट करना है और कब उसको नार्मल लेना है? इस बात का अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है।

रोते बच्चों को कैसे डील करें?:

लिहाज़ा माओं की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि खेलने वाले, छोटी उम्र के बच्चे, जब किसी बात पर रोना शुरू कर दें तो आप फ़ौरन तैश में मत आ जाएं, आप फ़ौरन लड़ाई का हिस्सा न बन जाएं, बच्चे बच्चे हैं, हो सकता है जो छोटा बच्चा रो रहा है मुम्किन है कि इस रोने की वजह बहुत ही मअ़मूली हो। हमने देखा कि एक बड़ा बच्चा है एक छोटा, अब छोटा बड़े को मारना चाहता है और वह मारने नहीं देता, इस पर छोटा रोना शुरू कर देता है। अब यह मज़लूम थोड़ा है जो रो रहा है, नहीं! यह इसलिये रो रहा है कि यह बड़ी बहन मुझे मारने नहीं देती। तो फिर क्या बच्चे के रोने पर फ़ौरन आप गुस्से में आ जाएंगी? नहीं ऐसी बात नहीं है।

आम तौर पर देखा कि चूंकि मां को मुहब्बत होती है, ज़रा बच्चे की रोने की आवाज़ निकली और मां के मुंह से अलफ़ाज़ निकलने शुरू हो जाते हैं, बोलना शुरू कर देती है, दूसरे बच्चों को गालियां देना, दूसरे बच्चों को कोसना, दूसरे बच्चों को मूरिदे इलज़ाम ठहराना शुरू कर देती हैं। याद रखें जब आपने छोटे बच्चे की मअ़मूली बात से रोने पर बड़े को डांटना शुरू कर दिया तो बड़े बच्चे के अंदर आपने अपनी नाइंसाफी का बीज बो दिया, उसके दिल में डाल दिया कि अम्मी ना इंसाफ है। क्योंकि बच्चा बग़ैर इलज़ाम के कोई

डांट, बग़ैर ग़लती के कोई इलज़ाम अपने ऊपर बर्दाश्त नहीं करता। जब उसके दिल में होता है कि मैंने ग़लती नहीं की तो उसको समझ नहीं आती कि मुझे क्यों डांटा जा रहा है? तो वह मां से फिर नफ़रत करने लग जाता है, मां को बुरा समझना शुरू कर देता है? सोचता है कि बस मां तो हमेशा छोटे ही की साइड लेती है।

और कई मर्तबा होता ही ऐसे है कि अगर बेटा छोटा है तो बड़ी बहनों की शामत आई रहती है, हर बात पर बहनों को डांट पड़ रही है। भई! बच्चा है, अब उस बच्चे की ख़ातिर आप दूसरों को तो बर्बाद न करें। इसलिये यह चीज़ ज़हन में रखें कि बच्चे का रोना हमेशा मज़लूमियत का रोना नहीं होता, कई मर्तबा बच्चा ख़ुद दूसरे बच्चों को मारता है। एक दफ़ा मारा, दूसरी दफ़ा मारा, तीसरी दफ़ा मारा, जब बहन को दो चार दफ़ा उसने मारा, उसने भी ग़ुस्से में आकर एक थप्पड़ लगा दिया। जब उसने एक लगाया अब बच्चा रोता हुआ आ गया। अब वह जो रोता हुआ आ रहा है तो यह मार खा के नहीं आ रहा, यह तीन दफ़ा मार के आ रहा है। हज़रत लुक़मान अलै० ने फ़रमायाः "अगर कोई तुम्हारे पास आए और वह दिखाए कि मेरा एक कान किसी ने काट दिया है तो तुम फ़ैसला में जल्दी न करना जब तक कि तुम दूसरे बंदे से न पूछ लो, हो सकता है कि इसने उसके दोनों कान काट दिये हों।" अगर कोई कहे कि जी उसने मुझे मुक्का मारा, और वाक़ई मारा भी है तो फ़ैसला न करें, जब तक सही सूरते हाल मअ़लूम न कर लें, हो सकता है कि उसने पहले उसके दो

मुक्के मारे हों या और कोई ज़्यादती की हो।

छोटों के झगड़े, बड़ों के झगड़े कैसे बनते हैं?

आम तौर पर यह देखा गया कि इसमें बड़ों की ग़लती यह होती है कि वह जल्दबाज़ी कर लेते हैं। तो ग़लतियां छोटों की होती हैं और मअ़मूली होती हैं लेकिन बड़ों की जल्दबाज़ी की वजह से फिर वह ईशू बन जाया करती हैं, वह फिर बड़ों के झगड़े बन जाया करते हैं। चुनांचे अगर कोई दूसरा बच्चा पड़ोसी के बच्चे के साथ खेल रहा है और क़ुसूर भी अपने बच्चे का है, लेकिन अगर उसने रोना शुरू कर दिया तो अब यह ख़ातून पड़ोसी के बच्चे को कोसना शुरू कर देगी और जब उसकी मां यह आवाज़ सुनेगी तो यह आपस में लड़ना झगड़ना शुरू कर देंगी। छोटों की बात थी, बड़ों के झगड़े बन गए और आपस में नफ़रतें पैदा हो गईं। तो ऐसी जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिये।

मगर इसमें एक और भी अहम बात है। वह यह कि बच्चे अगर छोटी छोटी बातों पर आपस में झगड़ पड़ते हैं तो अल्लाह तआला ने भी उनकी मेमोरी इतनी शार्ट रखी हुई है कि चंद मिनट के बाद फिर आपस में खेल रहे होते हैं। बच्चे के रोने में और बच्चे के हंसने में पांच सेकंड का फ़र्क़ भी नहीं हुआ करता। अभी बच्चे के आंसू बह रहे हैं, अभी उसको मां ने उठा लिया, उसके आंसू ख़त्म, उसका रोना ख़त्म। बच्चे का रोना और, बड़े का रोना और होता है। इसलिये बच्चों के रोने की हक़ीक़त को समझने की कोशिश करें और यह भी ज़हन में रखें कि भई इन बच्चों के रोने पर या झगड़े पर हम इसको

बड़ों का झगड़ा नहीं बना सकते, इसलिये कि बच्चे थोड़ी देर के बाद इसको भूल कर फिर एक दूसरे के साथ घुल मिल जाएंगे।

इबरत अंगेज़ वाक़िआ:

चुनांचे हम एक वाक़िआ जानते हैं कि बच्चे थोड़ी सी बात पर झगड़ पड़े। मां ने दूसरे बच्चे के थप्पड़ लगा दिया, उसकी मां ने भी आकर उससे झगड़ा करना शुरू कर दिया। दोनों तरफ़ के ख़ाविंद आ गए हत्ता कि एक दूसरे को उन्होंने ज़ख़्मी कर दिया, पुलिस आ गई, इतना पड़ोसियों में फ़साद फैला कि ख़ुदा की पनाह! जब अगले दिन मां बाप सुब्ह उठते तो क्या देखा कि गली में दोनों बच्चे फिर खेल रहे थे। तो बच्चों की लड़ाई ऐसी ही होती है। तो बच्चों की लड़ाई पर इतना मां बाप का उलझ पड़ना कि एक दूसरे को ज़ख़्मी कर दें, पुलिस आ जाए, ज़िंदगी भर के लिये तअ़ल्लुक़ मुन्क़तअ़ हो जाए, यह इंतिहाई जहालत की बात होती है। लिहाज़ा बच्चों के झगड़े की हक़ीक़त को समझना चाहिये! हां जब बच्चा लड़ाई कर ले तो अब समझें कि बच्चे ने आख़िर झगड़ा क्यों किया? फिर इसके बाद बच्चे को समझाएं।

बच्चों की पांच सिफ़ात:

चुनांचे एक किताब में एक हदीस नज़र से गुज़री, अगर्चे अहादीस की कुतुब से मैंने ख़ुद यह हदीस नहीं पढ़ी मगर किसी और किताब में पढ़ी, इसलिये यह बात मैं नक़्ल कर देता हूं मुम्किन है कि हदीस मुबारका ही हो। (उलमा बेहतर

समझते हैं)। नबी अलै० ने फ़रमायाः कि बच्चों की पांच सिफ़ात बड़ी अजीब होती हैं।

पहली सिफ़तः

बच्चे रो रो कर अपनी बात को मनवाते हैं। वाक़ई यह कितनी प्यारी सिफ़त है। अगर बड़ों को यह सिफ़त मिल जाए और वह अल्लाह के दर पर रो रो कर अपनी बात को मनवाएं तो कितनी अअ्ला बात है। अल्लाह करे कि यह सिफ़त हमें भी हो जाए।

दूसरी सिफ़तः

फ़रमाया कि बच्चे मिट्टी से खेलते हैं। चुनांचे किसी वज़ीर या अमीर का बेटा क्यों न हो, ज़रा मौक़ा मिले तो वह ज़मीन पर बैठेगा, ज़मीन पर लेटेगा, ज़मीन पर भागेगा। तो बच्चा चाहे क़ालीनों में रहने वाला बच्चा हो, सोने के पंघोड़ों में पलने वाला बच्चा हो, ज़रा मौक़ा मिले तो उसको मज़ा ज़मीन के साथ ही आता है। वह ज़मीन पर ही बैठता है, ज़मीन पर ही लेटता है। तो फ़रमाया कि ज़मीन के साथ तबई मुनासिबत, बच्चे के अंदर तवाज़ोअ़ की दलील होती है। तवाज़ोअ़ की वजह से बच्चा ऐसा कर रहा होता है तो यह भी एक अच्छी सिफ़त है।

तीसरी सिफ़तः

फ़रमायाः बच्चों के अंदर एक आदत होती है कि उन्हें जो मिल जाता है, वह उसे मुंह में डालते हैं और खा लेते हैं। और वाक़ई हमने ग़रीब घर के बच्चों को देखा, कि बच्चा जब रोता है तो उनको ख़ुश्क रोटी का टुकड़ा दे देते हैं, वह ख़ुश्क रोटी

का टुक्ड़ा चबाते हुए खुश हो जाते हैं। तो बच्चों को जो दे दो, सादा खाना दे दो, पुर तकल्लुफ़ दे दो, बच्चे उसी को खा लेते हैं। और जब उनको भूक होती है तो अपने पेट को भर लेते हैं। गोया खाने पीने के मुआमले में अल्लाह ने बच्चों को बेतकल्लुफ़ बनाया होता है।

चौथी सिफ़तः

फ़रमायाः कि आम तौर पर बच्चों को देखा कि जब खेलते हैं तो वह मिट्टी के घर बनाते हैं, खुद ही मिट्टी के घर बनाते हैं और खुद ही उन घरों को तोड़ देते हैं। फ़रमाया कि यह सिफ़त कितनी अच्छी है कि वह बता रहे होते हैं कि दुन्या दारुल फ़ना है, एक वक़्त आएगा कि हमें इस दुन्या के कारख़ाने की हर चीज़ को छोड़ कर यहां से चले जाना है।

पांचवीं सिफ़तः

फ़रमायाः कि बच्चों के अंदर यह सिफ़त बहुत अच्छी है कि अगर बच्चे थोड़ी देर के लिये एक दूसरे से झगड़ा कर लेते हैं तो फिर सुलह करने में जल्दी करते हैं। उनके सीने मे कीना नहीं होता, यह दिलों में नफ़रतें नहीं रखा करते। यह सिफ़त बच्चों के अंदर बहुत अच्छी होती है। तो वाक़ई यह बात सही है कि बच्चों के अंदर इतनी गहराई नहीं होती कि पुरानी बातों को याद रख सकें।

इसी लिये जब मां बाप आपस में बहुत लड़ते हैं और फिर बड़े चाहते हैं कि हमारे बच्चे भी एक दूसरे से न बोलें तो याद रखना कि बच्चों के लिये (मां बाप की ख़ातिर) मस्नूई लड़ाई लड़ना, इंतिहाई मुश्किल काम होता है। बच्चे अपने मां बाप

की वजह से मस्नूई लड़ाई नहीं लड़ सकते। इसलिये बच्चों की फ़ितरत को समझिये और उनके झगड़ों को इसी तरह से डील कीजिये बल्कि उनके झगड़ों को तो झगड़ा कहना ही नहीं चाहिये। पसंद और नापसंद का इज़्हार कहना चाहिये। आपस में उनके झगड़े तो मअ़मूली बातें होती हैं। लिहाज़ा छोटी सी बातों पर उसका पतंगड़ नहीं बना लेना चाहिये और इस पर बड़ों को Involve (शरीक) नहीं हो जाना चाहिये।

बच्चों को नसीहत करें:

अगर बच्चे झगड़ पड़ें तो आप हक़ीक़त को मअ़लूम कर लें और जिसका क़ुसूर हो उसको सौरी करने के लिये कहें, उसको मुआफ़ी मांगने के लिये कहें। जिसने दिल दुखाया है ज़्यादती की है उसको कहें कि हाथ जोड़ के मुआफ़ी मांगे और उसको समझाएं कि "والصلح خير"। सुलह के अंदर अल्लाह ने ख़ैर रखी है और बच्चे को समझाएं कि जो दुन्या में दूसरे की ग़लती को जल्दी मुआफ़ कर देगा, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी ग़लतियों को जल्दी मुआफ़ फ़रमा देगा। जब बच्चे को सुलह की अच्छाई बताएंगी और मुआफ़ करने की ख़ूबी बताएंगी तो ग़लती करने वाला मुआफ़ी भी मांग लेगा और जिसके साथ ज़्यादती हुई वह जल्दी मुआफ़ भी कर देगा और वह बच्चे फिर आपस में मुहब्बत प्यार से खेलने लग जाएंगे। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमारे घर के बच्चों के अंदर से इन झगड़ों को ख़त्म फ़रमा दे और बड़ों को इन झगड़ों में उलझने से अल्लाह महफ़ूज़ फ़रमाए। इसलिये कि

झग़ड़े फ़साद होते हैं और अल्लाह फ़साद को नापसंद करते हैं। अल्लाह तआला हमें फ़साद से बचाए ही रखे।

وآخر دعونا ان الحمد لله رب العلمين

☆☆☆

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बड़ों के झगड़े

अज इफ़ादात

पीरे तरीकत रहबरे शरीअत मुफ़क्किरे इस्लाम

महबूबुल उलमा वस्सुलहा

हज़रत मौलाना पीर जुलफ़क़ार अहमद

मुजद्दिदी नक्शबंदी मद्दज़िल्लुहू

बड़ों के झगड़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُوْنَ. وَسَلَامٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

बड़ों के झगड़े भी बड़े:

आज का उन्वान है "बड़ों के झगड़े"। जो लोग जवानी की उम्र में पहुंच जाते हैं, अक़्ल पुख़्ता हो जाती है, उनकी भी एक दूसरे के साथ रंजिशें होती हैं लेकिन यह उम्र ऐसी होती है कि जज़्बात और ख़्यालात में पुख़्तगी आ जाती है, लिहाज़ा उन पर हर बात का असर देर पा होता है। उन्हें मुद्दतों बात याद रहती है और इसमें इस वजह से Complication (पेचीदगी) आ जाती है। इस उम्र में पहुंच कर इंसान इतना Mature (पुख़्ता) हो चुका होता है कि वह दूसरे बंदे को अपने हालात व कैफ़ियात का पता भी नहीं चलने देता। लिहाज़ा आप चेहरे से देखकर यह समझेंगी कि यह मेरे साथ बिल्कुल ठीक है जबकि उसके दिल के अंदर कोई न कोई चीज़ खटक रही होगी। तो बड़ी उम्र के बंदे को ख़ुशी और ग़मी को छुपाने में महारत हासिल हो जाती है। एक तो बात का असर देर तक रहा और दूसरा उन्होंने अपने अंदर की Feelings (एहसासात) का दूसरे को पता ही न चलने दिया,

तीसरा, जलती पर तेल का काम यह होता है कि इंसान को दूसरों की अच्छाईयां तो भूल जाती हैं, मगर उनकी ग़लतियां हमेशा याद रहती हैं। तीन बातें ऐसी हैं कि जिस वजह से बड़ों के झगड़े भी बड़े बन जाते हैं, देर पा होते हैं।

बड़ों की सोचः

फिर इसमें एक चीज़ मज़ीद शामिल हो जाती है कि बड़ों के अंदर सोच का माद्दा भी ज़्यादा होता है, वह एक छोटे से मुआमले को अपने ज़हन में लेकर सोचना शुरू कर देते हैं। उनको Food For Thought (सोचने के लिये मवाद) मिल जाता है और वह इसके ऊपर एक ख़्याली इमारत बनाना शुरू कर देते हैं, अच्छा फ़लां ने आज अच्छे कपड़े नहीं पहने हुए थे लगता है अपने घर में खुश नहीं, लगता है ख़ाविंद के साथ नहीं बनती, हो सकता है कि सास पसंद न करती हो, कोई न कोई वजह तो है। अब एक औरत जो सादगी की नियत से बयान सुनने के लिये सादा कपड़े पहन कर आ गई, अब इस प्वाइंट को लेकर उन्होंने इस पुराने ख़्यालात के ताने बाने बनने शुरू कर दिये और एक स्टोरी बना ली कि हमें तो लगता है कि फ़लां लड़की जिसकी अभी शादी हुई है अपने घर में खुश नहीं। स्टोरी भी बन गई और नतीजा भी निकल गया।

बदगुमानी की नहूसतः

फिर इसमें हमारा एक दुशमन है, जिसको शैतान कहते हैं, और एक जिसे नफ़्स कहते हैं, वह बदगुमानी के ज़रीए सूरते हाल को और ज़्यादा बुरा बना देते हैं। छोटी छोटी बातों को ज़ोन कर देते हैं, जिसकी वजह से इंसान दूसरे की छोटी

ग़लती को बड़ा समझता है। और अपनी बड़ी ग़लतियों को भी वह छोटी समझता है।

दूसरे के बारे में कोई बुरी बात ज़ेहन में सोचना, यह चीज़ बदगुमानी कहलाती है, शरीअ़त ने बदगुमानी को हराम क़रार दिया है। बड़ों के झगड़ों की बुन्याद में अक्सर व बेशतर बदगुमानी की नहूसत शामिल होती है। नबी स० अ० व० ने इर्शाद फ़रमायाः

إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ

कि तुम गुमान से बचो क्योंकि अक्सर गुमान झूट होते हैं

तो बजाए नेक गुमान करने के, शैतान बदगुमानी करवाता है और इंसान को फ़ित्नों में मुब्तला करता है।

बदगुमानी गुनाहे कबीरा है:

ईमान वालों के साथ बदगुमानी, यह कबीरा गुनाह है। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त फ़रमाते हैं:

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا

और इनमें से अक्सर सिर्फ़ ज़न (गुमान) की पैरवी करते हैं और कुछ शक नहीं कि ज़न (गुमान) हक़ के मुक़ाबले में कुछ भी कारआमद नहीं हो सकता।

इसलिये मोहसिने इंसानियत सय्यदना रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया

ظُنُّوا بالمومنين خيرًا

ईमान वालों के साथ नेक गुमान रखो, बदगुमानी न रखो।

चुनांचे इमामे अअ़ज़म अबू हनीफ़ा रह० ने इस हदीसे

मुबारक से यह मतलब निकाला कि अगर किसी बंदे में उनहत्तर बातें ऐब की निकलती हों लेकिन एक रास्ता ख़ैर का निकल सकता हो तो तुम उस एक बात की वजह से उसके साथ नेक गुमान रखो! लेकिन हमारा क्या हाल है? हर चीज़ बता रही होती है कि काम तो ठीक है लेकिन हम इसमें से बदगुमानी का रास्ता तलाश कर रहे होते हैं।

अब चूंकि हुक्म फ़रमाया कि मोमिनीन के साथ नेक गुमान रखो तो ज़रा तवज्जोह फ़रमाइये कि क़यामत के दिन इंसान पेश किया जाएगा कि तूने फलां के बारे में बदगुमानी क्यों की? इस पर हमें सबूत पेश करो! तो मुक़द्दमा अपने ऊपर क्यों क़ाइम करवा लिया? और अगर बंदा नेक गुमान रखेगा अगर्चे दूसरा बंदा बुरा हो तो सवाब तो उसको खुद बखुद मिल जाएगा। तो यह कितने मज़े की बात है कि नेक गुमान रखो अगर्चे कोई बुरा हो, अल्लाह तआला नेकी फिर भी दे देते हैं और अगर बदगुमानी कर ली तो क़यामत के दिन उसके ऊपर दलीले शरई पेश करनी पड़ेगी, सबूत देना पड़ेगा, वर्ना इंसान इस जुर्म के अंदर खुद गिरफ़्तार होगा।

बदगुमानी एक अख़्लाक़ी बीमारीः

यह बदगुमानी तमाम झगड़ों की बुन्याद है। शैतान फ़साद पैदा करने के लिये पहला काम ही यह करता है कि लोगों को आपस में बदगुमान करता है। किसी के दिल में दूसरे के बारे में ग़लत अंदाज़े, ग़लत ख़्यालात पैदा करके उनको एक दूसरे से मुतनफ़्फ़िर करता है। बात इतनी होती नहीं जितनी उसे नज़र आ रही होती है। ख़्वाह मख़्वाह के एतिराज़ पैदा हो जाते हैं जिनका हक़ीक़त से दूर का भी तअल्लुक़ नहीं होता।

क़यामत के दिन कई लोग होंगे कि वह अपने आपको अच्छा समझ रहे हों और वह दूसरों के सामने पहले जहन्नम में औंधे मुंह डाले जाएंगे। इसलिये कि अल्लाह की मख़्लूक़ के साथ बदगुमानी करने की उनको आदत होती है। यह एक आदत है, इसका तअ़ल्लुक़ आदत से है कि अपने सवांगाह में कोई जपता ही। लाख अच्छाइयां किसी की हों नज़र ही नहीं आतीं। तो बुराइयों के ऊपर तो दूरबीन फ़िट की होती है। बल्कि मैं तो कहूं कि ख़ूर्दबीन फ़िट किये बैठे होते कि कुछ नज़र आए। जी हां, जो मुआमला आप उसके साथ कर रहे हैं वही मुआमला अल्लाह तआला आपके साथ करेंगे। ज़रा ज़रा सी बातों पर बदगुमानियां होने लग जाएंगी, हम आपस में एक दूसरे के क़रीब रहते हुए छोटी छोटी बातों पर बदगुमनानियां शुरू कर दें तो फिर आपस में झगड़े और नफ़रतें ही पैदा होंगी। इसलिये अल्लाह तआला से रो रोकर मुआफ़ी मांगनी चाहिये और इस बीमारी से अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिये।

बदबूदार चांद:

एक औरत अपने बच्चे की नेपी तबदील करवा रही थी तो उसकी कहीं उंगली के ऊपर थोड़ी सी नजासत लग गई, इतने में घर के बच्चों ने शौर मचा दिया पहली का चांद नज़र आ गया, पहली का चांद नज़र आ गया। उसने सोचा कि मैं भी पहली का चांद देख लूं, अब यह पहली का चांद जब देखने लगी तो औरतों की आदत होती है कि उंगली अपने नाक पर रख लेती हैं। उसने उंगली अपने नाक पर रखी जब चांद देखा कहने लगी हां है तो पहली का चांद पता नहीं इस

दफ़ा बदबूदार क्यों है। हक़ीक़त यह है कि चांद बदबूदार नहीं था, उसकी उंगली की बदबू उसकी नाक में आ रही थी। तो एतिराज़ करने वालों का आम तौर पर यही मुआमला होता है।

शैतान के ख़िलाफ़ दो मुअस्सिर हथियारः

यहां एक नुक्ते की बात समझने की कोशिश करें कि शैतान इंसान के ज़हन में बुरे वस्वसे डालता है। यह वस्वसे अगर आप अपने ज़हन से निकाल दें तो फिर आप बदगुमानी से बच जाएंगे। वह Food for thoughts (सोचने के लिये मवाद) दे देता है और उस पर बंदे सोच बिचार करके बिलआख़िर बदगुमानी के मुर्तकिब हो जाते हैं। जब भी शैतान ज़हन में कोई वस्वसा डाले, आप उस वस्वसे को सोचने की बजाए फ़ौरन لا حول ولا قوة الا بالله पढ़ा करें। किसी के बारे में बुरे ख़्याल ज़हन में आएं, देवरानी, जिठानी के बारे में, सास के बारे में, पड़ोसन के बारे में किसी के बारे में कोई बुरा ख़्याल ज़हन में आए तो फ़ौरन पढ़ें। لا حول ولا قوة الا بالله इस ख़्याल को न सोचें, न इसकी तसदीक़ करने की कोशिश करें, इसलिये कि शैतान बदगुमान का मुर्तकिब करवा कर आप को ख़ैर से महरूम कर देगा।

तो शैतान तो ऐसा बदबख़्त है कि बस वह वस्वसा ज़हन में डालता है, तो वस्वसे को मत सोचें, इस ख़्याल को मत आगे बढ़ाएं बल्कि हमारे पास दो हथियार हैं एक हथियार - لا حول ولا قوة الا بالله और दूसरा हथियार - اعوذ بالله من الشيطن الرجيم कुछ भी पढ़ लें इन दोनों से उसी वक़्त शैतान भागता है, दूर चला जाता है और अल्लाह तआला उस

बंदे की शैतान के वस्वसे से हिफ़ाज़त फ़रमा देते हैं।

इब्ने अरबी अलै0 का शैतान से मुकालिमा:

इब्ने अरबी अलै0 फ़रमाते हैं कि मेरी एक मर्तबा शैतान से मुलाक़ात हुई तो मुझे कहने लगा: इब्ने अरबी! बड़े आलिम हो, मैंने कहा हां। कहने लगा: मेरे साथ आज मुनाज़िरा कर लो, मैंने कहा: मैं हरगिज़ नहीं करूंगा। कहने लगा: क्यों? मैंने कहा कि अल्लाह तआला ने मुझे तेरे लिये एक डंडा दिया है जिसका नाम है - لا حول ولا قوة الا بالله मैं यह डंडा इस्तेमाल करके तुझे यहां से दूर भगा दूंगा। मुझे तुझसे बहस में पड़ने की ज़रूरत ही नहीं। और वाक़ई अगर वह बहस में पड़ जाते तो शैतान उनके दलाइल को तोड़ कर शायद उनको किसी बुरे प्वाइंट पर ले आता।

इमाम राज़ी र0 अ0 और शैतान का मुबाहिसा:

कहते हैं कि इमाम राज़ी अलै0 किसी बुज़ुर्ग से बैअ़त थे। उन्होंने वजूदे बारी तआला के बारे में सौ दलाइल इकट्ठे किये। इमाम राज़ी र0 अ0 बड़े खुश थे कि मैंने वजूदे बारी तआला में सौ दलाइल बड़े ठोस और मज़बूत इकट्ठे कर लिये हैं। एक मर्तबा शैतान से मुलाक़ात हो गई, शैतान ने कहा कि राज़ी अल्लाह तआला मौजूद नहीं है। उन्होंने कहा हैं। दलील दो! उन्होंने पहली दलील दी, शैतान ने तोड़ दी, दूसरी दलील दी, शैतान ने फिर तोड़ दी, यह सिलसिला चलता रहा हत्ता कि जब उनकी सौ की सौ दलीलें टूट गईं। इमाम राज़ी र0 अ0 उस वक़्त बहुत परेशान हुए मगर उनका तअ़ल्लुक़ अपने शैख़ के साथ था राबता सलामत था, कहते हैं कि उस वक़्त उनको आंखों के सामने शैख़ की शक्ल नज़र आई और शैख़

बड़े जलाल में थे और वह कह रहे थे कि राज़ी! तुम इस मरदूद को क्या दलीलें देने में लगे हो? तुम इसको यह कहो कि मैं बग़ैर दलील के अपने रब की ज़ात को मानता हूं। चुनांचे इमाम राज़ी र० अ० ने यह कहा कि मैं बग़ैर दलील के अल्लाह के वजूद पर ईमान रखता हूं, इस को शैतान न तोड़ सका। इमाम राज़ी र० अ० का ईमान महफ़ूज़ हो गया।

वसाविस का क्या इलाज?

चंद सहाबा नबी अलै० की ख़िदमत में आए, ऐ अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल०! हमारे दिल में बअ़ज़ औक़ात ऐसे ख़्यालात आ जाते हैं कि हम फांसी पे लटक जाते, आग में पड़ जाते यह ज़्यादा बेहतर था, बनिस्बत इसके कि ऐसे ख़्याल हमारे ज़हनों में आएं। तो नबी अलै० ने फ़रमाया कि यह तुम्हारे ईमान की अलामत है, जब भी बुरा ख़्याल आए और बंदा उसको नापसंद करे तो यह अलामत है कि वाक़ई अल्लाह ने उस बंदे के दिल में ईमान को भर दिया है। यह वस्वसे तो आते ही रहेंगे, इनसे परेशान नहीं होना चाहिये।

इसकी मिसाल ऐसे ही है कि जैसे एक बड़ी सड़क है, उस पर बस भी चल रही है, कार भी चल रही है, गधा गाड़ी भी चल रही है, साईकल वाला भी कोई जा रहा है, अब यह मुख़्तलिफ़ लोग उस सड़क के ऊपर जा रहे हैं तो कार वाला परेशान तो नहीं होता कि जी गधा गाड़ी वाला यहां पर क्यों चल रहा है? उसको तो अपने काम से काम रखना चाहिये। बिल्कुल इसी तरह इंसान का ज़हन शाहराह की मानिंद है, मोटर वे के मानिंद है, इस मोटर वे के ऊपर मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ख़्यालात आते रहते हैं, कभी अच्छे, कभी बुरे, कभी नफ़्स

की तरफ़ से, कभी शैतान की तरफ़ से और कभी रहमान की तरफ़ से ख़्यालात आते हैं, लेकिन मोमिन को चाहिये कि वह ख़ैर के ख़्याल अपनाए, इसके बारे में सोचे और जो दूसरे किस्म के वस्वसे और ख़्यालात हों, उनको अपने ज़हन से ही निकाल दे, उनकी तरफ़ ध्यान ही न दे। उनको Don't care case बना दे। जब आप उनके ऊपर ध्यान ही नहीं देंगे तो वह आपका कुछ बिगाड़ ही नहीं सकेगा। चुनांचे नबी अलै0 ने दुआ मांगी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ رَدَّ اَمْرَهٗ اِلَی الْوَسْوَسَةِ

तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह तआला के लिये जिसने
शैतान के मुआमले को वस्वसे की हद तक रखा।

अब कोई शैतान हमारा हाथ पकड़ कर तो नहीं गुनाह करवा सकता। वस्वसा ही डाल सकता है ना। इस वस्वसे को मानना या न मानना तो बंदे के अपने इख़्तियार में होता है। तो अगर यह बात समझ आ जाए तो फिर बंदों को वस्वसों की परवा नहीं होती।

मन्फ़ी वसाविस को नज़र अंदाज़ करें:

कई लोगों को देखा कि वस्वसों की वजह से ही परेशान हो जाते हैं। ओ जी! पता नहीं मेरा ईमान है भी या नहीं। भई! क्यों नहीं है आपका ईमान? जी मेरे ज़हन में ऐसे ख़्याल आते हैं। भई! ख़्याल आने से कोई इंसान वैसा तो नहीं बन जाता। देखें! रमज़ानुल मुबारक का महीना है, अगर आपके ज़हरन में बार बार यह ख़्याल आए कि फ्रीज में शर्बत पड़ा है, मैं उठ के पी लूं तो क्या उससे रोज़ा टूट जाएगा? जब तक आप पियेंगे नहीं उस वक़्त तक रोज़ा नहीं टूटेगा, चाहे यह

ख़्याल एक हज़ार मर्तबा आपको आ जाए। इसी तरह जब तक इस वस्वसे पर अमल न किया जाए तो वस्वसा इंसान को कोई नुक़्सान नहीं दे सकता।

चलें एक और मिसाल, हर इंसान के जिस्म के अंदर नजासत किसी न किसी हद में हर वक़्त होती है (पेशाब, पाख़ाना) लेकिन जब तक वह इंसान के जिस्म से ख़ारिज न हो उस वक़्त तक उसका वुज़ू नहीं टूटता? तो अब कोई बंदा इस वजह से परेशान है कि जी मैं कैसे नमाज़ पढ़ूं? मेरे तो पेट में पाख़ाना है। तो बेवक़ूफ़ों वाली बात है नां। लिहाज़ा वसाविस के आ जाने पर परेशान हीं होना चाहिये बल्कि ऐसे वसासिव को नज़र अंदाज़ कर देना चाहिये और नेक ख़्यालात के बारे में सोचना चाहिये।

वुस्अते नज़र और वुस्अते ज़र्फ़:

हां जो इंसान वसीउन्नज़र हो जाता है हमेशा उसके एतिराज़ात दूसरों पर कम हो जाते हैं। यह ज़हन में रखना! जिस का ज़र्फ़ बड़ा होता है, जिसका दिल बड़ा होता है उसको दूसरों पर एतिराज़ करने की ज़रूरत ही नहीं पेश आती। और यह कम ज़र्फ़ी की अलामत होती है कि इंसान दूसरों पर एतिराज़ करता फिरता है और ख़ुद अपना मुआमला इससे ज़्यादा बुरा होता है।

तो हमें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के बारे में भी नेक गुमान रखना है और मोमिनीन के बारे में भी नेक गुमान रखना है। किसी की एक बात के अंदर अगर बुराई का पहलू निकलता है तो आप सोचें कि अगर कोई अच्छाई का पहलू निकल सकता है तो आप उसी अच्छाई के पहलू के बारे में सोचें और

उसके साथ ख़ैर का गुमान रखें, हत्ता कि अगर सत्तर बुराई के पहलू निकलते हैं और एक ख़ैर का निकलता है तो बुराई के सत्तर पहलूओं को नज़र अंदाज़ कर दें और एक पहलू को क़बूल कर लें और उसके बारे में नेक गुमान रखें। इस तरह से इंसान फिर बदगुमानी के गुनाह से बच जाता है।

फ़साद के चार मरहले:

चुनांचे बड़ों की लड़ाइयों में चार मरहले आते हैं:

पहला मरहला: बदगुमानी

पहला step (क़दम) बदगुमानी हुआ। आम तौर पर पहले बदगुमानी आती है, शैतान बंदे के दिल में दूसरे के बारे में उल्टे सीधे ख़दशात और वसाविस डालता है जिनका अक्सर हक़ीक़त से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होता। लेकिन जब वह दिल में पुख़्ता हो जाते हैं तो दिल में दूसरे के बारे में कीना पैदा होता है, यूं झगड़े की बुन्याद खड़ी हो जाती है।

दूसरा मरहला: ग़ीबत

दूसरे मरहले में जिसकी बदगुमानी दिल में पैदा हुई बंदा उसकी ग़ीबत शुरू कर देता है, बदगुमानी ग़ीबत की शक्ल इख़्तियार कर लेती है। दिल में किसी के बारे में बदगुमानी आई और उसकी ग़ीबत करनी शुरू कर दी, उसके बारे में Comments (तब्सिरे) देने शुरू कर दिये, उसकी बुराईयां बयान करनी शुरू कर दीं।

तीसरा मरहला:

और तीसरा Step (क़दम) होता है आपस में लड़ाई झगड़ा और फ़साद होता है। जब ग़ीबतें शुरू हो जाती हैं तो दूसरे को पता चलता है वह दो की चार सुनाता है। बस फिर

एक दूसरे पर गोला बारी शुरू रहती है। हत्ता कि कभी बराहे रास्त हाथा पाई की भी नौबत आ जाती है।

चौथा मरहलाः

जब चपक़लिश इस हद तक बढ़ गई अब चौथा क़दम होता है एक दूसरे के साथ तअ़ल्लुक़ को ख़त्म कर लेते हैं, बोलचाल, आना जाना बंद हो जाता है, इसे क़तअ़ रहमी कहते हैं यह भी बड़े गुनाह की बात है।

तो शैतान और नफ़्स बदगुमानी से सफ़र शुरू करवाते हैं और क़तअ़ रहमी तक इंसान को पहुंचा देते हैं। वह जानते हैं कि क़तअ़ रहमी ऐसा गुनाह है कि शबे क़द्र में भी क़तअ़ रहमी करने वाले की अल्लाह तआला मग़फ़िरत नहीं फ़रमाते। अल्लाहु अक्बर कबीरा। तो सोचिये कि यह बदगुमानी कहां इंसान को लेकर गिराती है?

وَيَقْطَعُوْنَ مَا اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖ اَنْ يُّوْصَلَ

और काटते हैं (रिशतों को) जिनको अल्लाह ने
जोड़ने का हुक्म दिया है। (अलबक़रा:27)

पहले क़दम पर ही रुक जाएं!

इसलिये पहले क़दम पर ही शैतान को रोक दीजिये और दूसरों के बारे में नेक गुमान रखने की आदत बना लीजिये! दिल को यह समझाएं कि मेरे अपने ही मस्ले कौनसे थोड़े हैं कि मैं दूसरों के बारे में सोचती फिरूं। मेरा ही बोझ मेरे सर पर इतना है कि क़्यामत के दिन इस बोझ को उठा पाई तो बड़ी बात है। ख़्वाह मख़्वाह दूसरों के बारे में क्यों मैं कोई राए दूं? हो सकता है अल्लाह उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दे और हो सकता है कि मेरी ख़ताओं के बारे में मुझसे सवाल कर

ले। तो दूसरों के मुआमले को आप हमेशा लाइट लिया करें। नफ़्स के बारे में अपने आपको हमेशा टाईट किया करें।

☆☆☆

रंजिश की पांच वुजूहात

जब आपस में रंजिशें होती हैं तो ज़ाहिर में भी इसकी कुछ न कुछ वुजूहात होती हैं। तो उमूमन पांच वुजूहात की वजह से आपस में रंजिश होती है।

पहली वजहः मिल जुल कर रहना

पहली वजह मिल कर रहना जब भी Combined Family System (मुशतर्का ख़ानदानी सिस्टम) में इंसान रहता है तो एक दूसरे के साथ फिर रंजिशें हो जाती हैं। कहीं सास बहू की लड़ाई, कहीं नंद और भाभी की लड़ाई, कहीं देवरानी जिठानी की लड़ाई, बस यूं समझें कि शैतान के लिये यह सूरते हाल बड़ी अच्छी होती है। छोटी छोटी बातों पर बदगुमानी पैदा करके आपस में एक दूसरे से उलझा देता है। तो मिलजुल कर रहें, मगर कुछ ऐसा तरीक़ा हो कि हर एक की अपनी प्राईवेट लाइफ़ अलग रहे। मसलनः अल्लाह तआला ने वुस्अत दी है, बच्चों की शादियां कीं तो बेशक क़रीब क़रीब बनाएं, मगर सबके अपने अपने हों ताकि अपने अपने घरों में मियां बीवी अपनी चाहत के मुताबिक़ वक़्त गुज़ार सकें। यह न हो कि एक ख़ाविंद अपनी बीवी के लिये कोई खाने की चीज़ लाए और दूसरी इसी को ईशू बना कर सास की नज़र में पेश कर दे। इतना ओपन एक दूसरे के क़रीब रहना कि दूसरे के लिये पर्सनल लाइफ़ को भी देखना आसान हो यह झगड़े का सबब बनता है। तो शरीअ़त ने हुक्म दिया कि जितना भी मुम्किन हो सके क़रीब रहो मगर अपनी पर्सनल लाइफ़ को

अलग रखो ताकि दूसरों को एतिराज़ का मौक़ा कम मिले।

दूसरी वजह: ज़्यादा तवक़्क़ुआत

दूसरी बात जिसकी वजह से आम तौर पर बड़ों के झगड़े होते हैं कि एक दूसरे Over Expect (ज़्यादा तवक़्क़ुआत वाबस्ता) कर लेते हैं, बअ़ज़ औक़ात ज़्यादा उम्मीद लगा लेते हैं। मसलन: मंगनी की और बहन ने इस तरह ख़ुशी का इज़्हार न किया जैसे बंदा चाहता था, हालांकि उसके दिल में तो ख़ुशी थी, बस मौक़ा पर उसने कोई दो चार लफ़्ज़ कहने थे वह न कह पाई, बस इसी पर बदगुमान हो गए। ओ जी! मेरी बेटी की मंगनी पर तो बहन को कोई ख़ुशी ही नहीं हुई। यह तो अंदर से उससे बड़ी ख़फ़ा है कि अच्छी जगह रिशता क्यों हो गया? अब लो मअ़मूली सी बात थी और बात का पतंगड़ बन गया। तो यह आदत अपने अंदर डालें कि आप दूसरे से ज़्यादा उम्मीदें न रखा करें। जब उम्मीद टूटती है तो बंदे के दिल में दूसरे के बारे में दुशमनी आती है, बदगुमानी आती है, और बंदा क़तअ़ तअ़ल्लुक़ी कर बैठता है। उम्मीदें लगाने की एक ही ज़ात है जिसका नाम परवरदिगार है, सारी उम्मीदें मोमिन की अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के साथ ही होनी चाहियें।

तीसरी वजह: सोच का फ़र्क़

बड़ों की लड़ाई की तीसरी वजह आम तौर पर सोच में फ़र्क़ होता है। Level of understanding (समझ) का फ़र्क़ Way of thinking (सोचने के तरीक़ाकार) का फ़र्क़। एक बंदा चीज़ को एक ज़ाविये से देखता है दूसरा उसी चीज़

को दूसरे ज़ाविये से देखता है। मिसाल के तौर पर एक के मेहमान आए, उसके ज़हन में यह था कि मेहमान नवाज़ी करनी चाहिये, उसने मेहमान नवाज़ी की नियत से खूब पुर तकल्लुफ़ खाने बनाए, और दूसरी ने इतने पुर तकल्लुफ़ खाने देखकर कहा कि यह तो बड़ी ही फ़ुज़ूल ख़र्च है। तो एक की नियत मेहमान नवाज़ी की थी और दूसरी की ज़हन में आया कि तो बड़ी फ़ुज़ूल ख़र्च है, ख़ाविंद का पैसा बर्बाद करती है। इस सोच के फ़र्क़ की वजह से आपस में फिर लड़ाइयां शुरू होती हैं, बदगुमानी की वजह से।

चौथी वजहः रस्म व रिवाज

चौथी वजह बड़ों की लड़ाई की रस्म व रिवाज हैं। कोई चाहता है कि मैं सुन्नत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारूं, और रिशतादार चाहते हैं कि यह रस्म भी पूरी हो, यह रिवाज भी पूरा हो। चुनांचे रस्म और रिवाज के पीछे एक दूसरे के साथ लड़ाइयां छिड़ जाती हैं। तब्सिरे होते हैं, फ़साद खड़ा हो जाता है। और यह जो वक़्त गुज़ारी के लिये तेरी मेरी बातें करना है, यह भी फ़साद की बुन्याद है। बअ़ज़ औरतें फ़ारिग़ होती हैं तो बैठ कर दूसरी औरतों की बातें छेड़ लेती हैं, फ़लां की बात ऐसी है, फ़लां के हालात ऐसे हैं। तो यह ज़हन में रखना कि वक़्त गुज़ारी के लिये तेरी मेरी बातें करना, फ़साद की बुन्याद होती है। अगर अल्लाह ने वक़्त दिया है तो बजाए बैठ कर लोगों पर तब्सिरा करने के, आप नेक अअ़्माल करें, इबादत करें, अपने आप को किसी अच्छे काम में मसरूफ़ कर दें।

पांचवीं वजहः बदमुआमलगी

आपस में झगड़े की पांचवीं वजह बदमुआमलगी, कि हमें

बअ़ज़ दफ़ा दूसरों के साथ अच्छा मुआमला करना नहीं आता, अपनी कमज़ोरियों की वजह से हम लोगों को डील ठीक नहीं करते और अच्छी डीलिंग न होने की वजह से फिर दर्मियान में झगड़े शुरू हो जाते हैं। मिसाल के तौर पर दो बहनें क़रीब क़रीब रहती थीं, अब उसने ज़रूरत पड़ने पर बहन का धागा इस्तेमाल कर लिया, नियत यह थी कि ख़रीद कर वापस कर दूंगी और फिर ख़रीदना भी भूल गई, अब जब बहन अपनी चीज़ वापस मांगेगी और उस वक़्त जवाब मिलेगा कि जी आपकी चीज़ तो मैंने इस्तेमाल कर ली और बताया भी नहीं तो फिर झगड़ा तो ख़ुद बख़ुद शुरू हो जाएगा। तो बदमुआमलगी से बचें, यह जो बुरी डीलिंग है इससे बचें। लोगों के साथ अच्छी डीलिंग करें! अच्छी डीलिंग करने वाले लोग दूसरों की मुहब्बतों को समेटा करते हैं और दूसरों की बदगुमानियों से बच जाते हैं। शरीअ़त ने इन्हीं को अख़्लाक़े हमीदा का नाम दिया, हुस्ने मुआशिरत का नाम दिया। दुआएं मांगीं कि अल्लाह तआला हमें हुस्ने मुआशिरत अता फ़रमाए।

ख़ानदानी अदावत......अल्लाह का अज़ाबः

यह बात ज़हन में रखें कि बड़ों की जो रंजिशें होती हैं वह फिर बड़ी बन जाया करती हैं। वह पहले होती हैं एक घर की रंजिशें फिर ख़ानदान की रंजिशें बन जाया करती हैं बल्कि ख़ानदानी अदावतें बन जाती हैं। और यह ख़ानदानी अदावतें इस दुन्या में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का अज़ाब है। इस अज़ाब से अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से पनाह मांगीं।

मुआफ़ी मांगने में आफ़ियत हैः

आप महसूस करें कि किसी का दिल दुखा, किसी को

परेशानी हुई या मैं किसी की तवक़्क़ुआत को पूरा नहीं कर सकती तो फ़ौरन उससे मुआफ़ी मांग लें। यह आसान तरीक़ा होता है मुआमले को सुलझाने का। मुआफ़ी मांगने में परेशान न हों, यह बहुत अच्छी आदत है और बड़े बड़े बोझ इंसान के सर से टल जाते हैं।

हमारे एक क़रीबी मेहरबान थे, उनकी आदत थी जिसको मिलते थे उसको जुदा होने से पहले कहते थे, जी! आपके मेरे ऊपर बड़े हुक़ूक़ थे मैं उनको पूरा नहीं कर सका, आप मुझे अल्लाह के लिये मुआफ़ कर दें। ऐसी बात अल्लह ने उनको यह समझा दी थी हर एक को यही कहते थे। जी! आप के मेरे ऊपर बड़े हुक़ूक़ थे, मैं पूरा नहीं कर सका आप मुझे अल्लाह के लिये मुआफ़ कर दें। इतनी लजाजत और आजिज़ी के साथ कहते थे कि दूसरे बंदे को उन पर प्यार आ जाता था। तो बंदे को इसी तरह दूसरों से मुआफ़ी मांगनी चाहिये। ज़ाहिर में कोई अगर ग़लती भी नज़र आ रही फिर भी मुआफ़ी मांग ले। इसका फ़ाएदा ही है कि क़ुसूर मुआफ़ हो जाएंगे।

हज़रत उमर रज़ि० का मुआफ़ी मांगना:

एक मर्तबा सय्यदना बिलाल रज़ि० बैठे हुए थे, कोई बात चली तो उमर रज़ि० ने कोई सख़्त लफ़्ज़ इस्तेमाल कर दिया। जब उमर रज़ि० ने सख़्त लफ़्ज़ इस्तेमाल किया तो बिलाल रज़ि० का दिल जैसे एक दम बुझ जाता है इस तरह से हो गया और वह ख़ामोश हो कर वहां से उठ कर चले गए। जैसे ही वह डठ कर गए, उमर रज़ि० ने महसूस कर लिया कि उन्हें मेरी इस बात से सदमा पहुंचा है। चुनांचे उमर रज़ि० उसी

वक़्त उठे, बिलाल रज़ि0 को आकर मिले, कहने लगेः ऐ भाई! मैंने एक सख़्त लफ़्ज़ इस्तेमाल कर लिया। आप मुझे अल्लाह के लिये मुआफ़ कर दें। उन्होंने कहा जी जी। मगर उमर रज़ि0 को तसल्ली नहीं हो रही थी इसलिये कि वह ज़रा ख़ामोश ख़ामोश थे, दिल जो दुखा था। तो जब उमर रज़ि0 ने देखा कि बिलाल का दिल ख़ुश नहीं हो रहा तो बात करने के बाद बिलाल रज़ि0 के सामने ज़मीन पर लेट गए और कहाः भाई! मेरे सीने पर अपने क़दम रख दो! मेरी ग़लती को अल्लाह के लिये मुआफ़ कर दो! बिलाल रज़ि0 की आंखों से आंसू आ गए, अमीरुल मोमिनीन! मैं ऐसी हरकत कैसे कर सकता हूं? जो बड़े हज़रात थे अपनी ज़िंदगी के मुआमले को ऐसे समेटा करते थे। याद रखें! आज दूसरों के बारे में कुछ अलफ़ाज़ कह देना आसान है लेकिन अगर कल क़्यामत के दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमें खड़ा कर के पूछ लिया, बताओ! तुमने फ़लां को कमीना क्यों कहा था? तुमने फ़लां को ज़लील क्यों कहा था? तुमने फ़लां को बेईमान क्यों कहा था? सोचो! हम इन बातों को उस दिन कैसे साबित कर सकेंगे? यह वह दिन होगा जिसमें अंबिया भी घबराते होंगे। अल्लाहु अक्बर कबीरा।

आज वक़्त हैः

आज वक़्त है कि हम दूसरों के बारे में नेक गुमान रखें, लड़ाई झगड़े को इब्तिदा से ही ख़त्म कर दें। ज़्यादती हो जाए तो दूसरे से मुआफ़ी मांग लें और उस आपस के लड़ाई झगड़े को अल्लाह का अज़ाब समझते हुए अल्लाह से उसकी पनाह मांगें और उस फ़साद से हम अपने आप को बचाने की

कोशिश करें। यह दिल में तमन्ना हो कि हम अपने घरों को, अपने ख़ानदानों को इस फ़साद वाले अज़ाब से बचाएंगे और मुहब्बत और उलफ़त की ज़िंदगी गुज़ारेंगे। अल्लाह तआला हमारी कोताहियों को मुआफ़ फ़रमाए और हमें अपने मक़्बूल बंदे, बंदियों में शामिल फ़रमाये।

☆......☆......☆

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

बड़ों के झगड़े

अज़ इफ़ादात

पीरे तरीकृत रहबरे शरीअ़त मुफ़क्किरे इस्लाम

महबूबुल उलमा वस्सुलहा

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद

मुजद्दिदी नक़्शबंदी मद्दज़िल्लुहू

घरेलू झगड़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُوْنَ. وَسَلَامٌ عَلٰى
الْمُرْسَلِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

घर के झगड़े:

आपस के लड़ाई झगड़ों में झगड़े की एक नौइयत घरेलू होती है कि घर के अंदर जो लोग रह रहे हैं वह आपस में झगड़ा कर लें। जैसे आपस में बहन भाई का झगड़ा या औलाद वालिदैन के दर्मियान झगड़ा। इसको समझने के लिये शरई तौर पर जो घर का सेटअप है उसको समझने की ज़रूरत है।

इंसानी जिस्म ज़िद्दैन का मज्मूआ:

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इंसान को ऐसे अअ़ज़ा दिये जो एक दूसरे की ज़िद में हैं। अपनी सिफ़ात के एतिबार से यह अअ़ज़ा एक दूसरे की ज़द में हैं। इसलिये कहते हैं कि इंसान ज़िद्दैन का मज्मूआ है। जैसे आंख देख सकती है बाक़ी पूरा जिस्म नहीं देख सकता, यह एक दूसरे की ज़िद हुई। ज़बान बोल सकती है बाक़ी पूरा जिस्म नहीं बोल सकता, तो एक दूसरे की ज़िद हुए। कान सुन सकते हैं, बाक़ी पूरा जिस्म नहीं सुन सकता, यह एक दूसरे की ज़िद हुए। तो मअ़लूम हुआ कि

इंसानी जिस्म ऐसे अअ्ज़ा से मिल कर बना है जो अपनी सिफ़ात के एतिबार से एक दूसरे के मुख़ालिफ़, एक दूसरे की ज़िद हैं।

रूह अअ्ज़ा में जोड़ पैदा करती है:

लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस जिस्म के अंदर एक नेअ्मत को उतारा जिसको रूह कहते हैं। लिहाज़ा रूह की मौजूदगी में सब अअ्ज़ा एक बन कर काम करते हैं। उनका आपस में जोड़ भी होता है, एक दूसरे के साथ Co-ordination (रब्त) होता है। चुनांचे एक आदमी के अगर सर में दर्द हो तो आंखों में से आंसू आएंगे। आंख कभी यह तो नहीं कहेगी कि यह मेरा प्राबलम नहीं यह तो सर का प्राबलम है। चूंकि एक बने हुए हैं, लिहाज़ा एक की ख़ुशी सबकी ख़ुशी, एक का ग़म सब का ग़म। अगर सर में दर्द है तो आंखों से आंसू आएंगे, ज़बान से आवाज़ें निकलेंगी, पांव चल कर डाक्टर के पास जाएंगे, आप उसकी दवा पियेंगे, तो गोया रूह की मौजूदगी में जिस्म के अअ्ज़ा एक होते हैं, एक दूसरे के साथ मिल जुल कर ज़िंदगी गुज़ारते हैं। कोई दुशमन अगर किसी के सर पर डंडा मारना चाहे तो आप देखेंगी कि फ़ौरन इसके साथ उठेंगे और उस डंडे को पकड़ने की कोशिश करेंगे। ऐसा क्यों कर रहे हैं? वह कोई हाथों पर तो डंडा नहीं मार रहा, वह सर पर डंडा मारना चाहता है मगर चूंकि यह सब एक हैं लिहाज़ा सर की तकलीफ़ पूरे जिस्म की तकलीफ़ होगी। इसलिये हाथ उसको बचाने के लिये उठे और पांव वहां से भागने के लिये हरकत में आए, तो ज़िंदा इंसान के सब अअ्ज़ा में एक क्वारडीनेशन होती है।

अब अगर इस इंसान के जिस्म से रूह निकाल दिया जाए, तो आप देखेंगी कि सब अअ़ज़ा एक दूसरे से अजनबी बन जाएंगे। जिस इंसान की रूह निकल गई उसकी ज़बान को भी कोई आदमी अगर काट दे, न आंखों से आंसू आएंगे, न उसके मुंह से तकलीफ़ की आवाज़ निकलेगी, न हाथ पांव हिलेंगे और न उधर से भागने की कोशिश करेंगे, क्योंकि जिस चीज़ ने सबको एक बनाया हुआ था वह रुख़्सत हो गई, अब अअ़ज़ा सारे एक दूसरे से अजनबी हो गए। अगर कोई इंसान यूं सोचे कि बंदे की रूह तो निकल गई, हम उसके मुंह को सील कर देते हैं और उसके नाक के रास्ते से उसके अंदर हवा भर देते हैं, तो क्या हवा भरने से वह इंसान ज़िंदा हो जाएगा? हरगिज़ नहीं रूह का क़ाइम मक़ाम और कोई चीज़ नहीं बन सकती।

घर का सेटअपः

अब इस मिसाल को ज़हन में रखते हुए एक घर को अपने सामने रखिये! हर घर ऐसे अफ़राद का मज्मूआ है जो अपनी पोज़ीशन, अपने मक़ाम के एतिबार से एक दूसरे के मुख़ालिफ़ हैं। मसलन बाप, बाप है, उसकी पोज़ीशन घर में कोई दूसरा नहीं ले सकता। मां, मां है, उसकी पोज़ीशन बेटी नहीं ले सकती, उसकी पोज़ीशन घर में कोई दूसरा नहीं ले सकता। बेटी, बेटी है, उसका मक़ाम मां नहीं ले सकती। भाई, भाई है, उसका अपना एक मक़ाम है जो कोई दूसरा नहीं ले सकता। तो मां, बाप, बहन, भाई यह मिल कर एक घर बन गया, मगर हर एक की अपनी एक Identity (शनाख़्त) है। यूं कह सकते हैं कि घर ऐसे अफ़राद का मज्मूआ है जो एक

दूसरे की ज़िद हैं, मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इनमें एक नेअ़मत को उतारा जिसकी मौजूदगी में यह अफ़राद इस तरह मिलकर एक और नेक बन कर काम करते हैं, जिस तरह रूह की मौजूदगी में जिस्म के अअ़ज़ा एक बन कर काम करते हैं। इस नेअ़मत का नाम है "दीन"। लिहाज़ा जिस घर के अंदर दीन होगा, नाम का नहीं, अमल में होगा, तो आप देखेंगी कि घर के लोगों के दर्मियान उलफ़तें और मुहब्बतें होंगी और वह एक दूसरे के करीब होंगे। एक फ़र्द की ख़ुशी सारे घर की ख़ुशी होगी और एक फ़र्द का ग़म सारे घर का ग़म होगा। यह ज़िंदा जिस्म की तरह घराना है। और अगर दीन को घर से निकाल दिया जाए तो जिस तरह रूह की अदम मौजूदगी में अअ़ज़ा एक दूसरे से अजनबी हो जाते हैं, तो दीन की अदम मौजूदगी में यह सारे अफ़राद एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। जिस तरह जिस्म में हवा भर दी जाए तो जिस्म ज़िंदा नहीं हो सकता उसी तरह अगर घर में (इंसान के बने हुए) कोई उसूल लागू कर दिये जाएं, कोई अज़्म लागू कर दिया जाए तो इससे घर के अंदर वह मुहब्बतें पैदा नहीं होतीं।

दिलों का जोड़:

इस दुनिया में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दो चीज़ों को जोड़ने के लिये कोई न कोई तीसरी चीज़ बनाई है। मसलन दो ऊंटों को जोड़ने के लिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सीमेंट को बना दिया लेकिन लकड़ी के दो टुक्ड़ों को जोड़ने के लिये सीमेंट काम नहीं आएगा, वहां आप कील इस्तेमाल करेंगे चुनंचे लकड़ी के दो टुक्ड़े बिल्कुल यक जान हो जाएंगे। अगर काग़ज़ के दो टुक्ड़े जोड़ने हों तो न सीमेंट काम आएगा, न

कील काम आएगा, वहां पर ग्लू Glue काम आएगी। कपड़े के दो टुकड़े जोड़ने हों, न सीमेंट काम आएगा, न कील काम आएगा, न गोंद काम आएगा, वहां पर सूई धागा काम आएगा। तो देखें! मुख़्तलिफ़ चीज़ों को जोड़ने के लिये कोई न कोई अल्लाह ने तीसरी चीज़ बनाई है। सवाल पैदा होता है कि दो इंसानों को दिलों को जोड़ने के लिये अल्लाह ने क्या चीज़ बनाई? तो इसका जवाब "दीने इस्लाम" है। अगर वह दोनों लोग शरीअ़त पर अमल करे लग जाएं, नेकी तक्वा पर अमल करने लग जाएं तो इस नेकी की वजह से अल्लाह उनके दिलों में खुद बखुद मुहब्बत पैदा फ़रमा देगा। और इसकी दलील कुर्आन अज़ीमुश्शान में से, अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं:

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا

"जो लोग ईमान लाएंगे, नेक अ़अ्माल करेंगे, हम उनके दिलों के अंदर मुहब्बतें भर देंगे"

तो नेकी पर होना, दीन पर होना, यह आपस में दिलों में मुहब्बतें होने का ज़रीआ़ होता है। इसलिये जो मियां बीवी दीनदार हों तो उनके दर्मियान मिसाली मुहब्बतें होती हैं, जो मां बाप सब के सब दीनदार हों उनके दर्मियान आपस में मिसाली तअ़ल्लुक होता है। इसलिये घर के अंदर मुहब्बतों को फैलाने के लिये, खुशियों भरी ज़िंदगी गुज़ारने के लिये सब अफ़राद को दीन पर ज़िंदगी गुज़ारनी चाहिये। बेटी भी दीनदार, बेटा भी दीनदार, मां बाप भी दीनदार, तो दीन पर अमल की बरकत से अल्लाह तआला दिलों के अंदर मुहब्बतें

भर देगा। कुफ़्र के माहौल में मां बाप और औलाद के दर्मियान वह मुहब्बत हरगिज़ नहीं होती जो दीनदार घरानों के अंदर होती है।

घरेलू झगड़ों की नौइयतः

ताहम इंसान, इंसान है, ग़फ़लत का शिकार हो जाता है। हम देखते हैं कि हमारे घरों में अगर्चे मां बाप और औलाद के दर्मियान मुहब्बतें होती हैं, लेकिन कहीं कहीं हमें झगड़े भी नज़र आते हैं, अब इन झगड़ों की नौइयत दो क़िस्म की होती हैः एक बहन भाई के दर्मियान लड़ाई झगड़ा, और दूसरा मां बाप और औलाद के दर्मियान लड़ाई झगड़ा।

पहला ज़ाविया

बहन भाईयों के दर्मियान झगड़े

घर के झगड़ों का एक ज़ाविया बहन भाईयों के आपस में झगड़ों का है। आम तौर पर देखा गया (चूंकि भाई बहन होते हैं या भाई भाई होते है, एक मां बाप की औलाद होती है) तो नौजवानी की उम्र में आपस में उनके दर्मियान हंसी मज़ाक़ होता है और ज़्यादातर यही हंसी मज़ाक़ एक दूसरे के साथ झगड़े की बुन्याद बन जाता है।

भाईयों की आम तौर पर आदत होती है कि बहनों को तंग करते हैं, मज़ाक़ करते हैं, किसी काम पर डांट दिया, उसके काम में कोई ऐब निकाल दिया, या फिर कभी उसको धोका दे दिया, उसके बाल खींच दिये, उल्टा जवाब दे दिया भरी महफ़िल में उसको मज़ाक़ बना दिया। तो आम तौर पर भाई, बहनों के साथ ऐसा करते रहते हैं। अब यह जो कर रहे होते हैं वह नफ़रत से न हीं कर रहे होते, मुहब्बत से कर रहे होते हैं, लेकिन चूंकि बच्चे होते हैं उनको यह पता नहीं होता कि इसको दूसरा कैसे महसूस करेगा, अब इसके जवाब में बहन हाथ तो नहीं उठा सकती, वह ज़बान चलाती है वह फिर आगे से कड़वी कसैली सुनाती है तो यूं लड़ाई झगड़े की बुन्याद बन जाती है, बल्कि कई मर्तबा तो भाई अगर अपनी बहन को मारने लगता है तो बहन आगे से बद्दुआएं देना शुरू कर देती है। वैसे देखो तो एक दूसरे के साथ बहुत मुहब्बत, लेकिन उम्र के कच्चेपन की वजह से एक दूसरे के साथ लड़ाई झगड़ा अभी बहुत है। अच्छा तुमने मुझे चीज़ नहीं दी थी, मैं तुम्हें क्यों दूं? उसने ऐसे कहा था तो मैं ऐसे क्यों न कहूं?

बस इस क़िस्म की छोटी छोटी बातें होती हैं, जिन पर आपस में एक दूसरे के साथ खटक पैदा होती रहती है। तो बुन्यादी वुजूहात इसकी:

(1) एक दूसरे के साथ हंसी मज़ाक़,

(2) एक दूसरे के साथ हसद या बदगुमानी

एक सोचता है कि मां बाप इसको तर्जीह ज़्यादा देते हैं, मुझे नहीं देते। बड़े भाई की बात तो सब मानते हैं, मेरी बात तो कोई सुनता ही नहीं है। इस क़िस्म के जो ख़्यालात हैं, वह आपस में भाई बहनों की लड़ाई का ज़रीआ बनते हैं।

भाईयों, बहनों में दो रिश्ते:

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त चाहते हैं कि एक मां बाप की औलाद आपस में उलफ़तों, मुहब्बतों की ज़िंदगी गुज़ारे। लिहाज़ा अगर दो भाई हैं तो उनको समझना चाहिये कि हमारे दर्मियान एक खून का रिशता भी है और दूसरा दीन का रिशता भी है। खून के रिशते से मुराद यह है कि मां बाप चाहेंगे कि दोनों हमारे बेटे हैं, यह आपस में मुहब्बत प्यार से रहें। और दीन के रिशते से मुराद यह है कि अल्लाह तआला चाहते हैं दोनों मेरे बंदे हैं आपस में मुहब्बत प्यार से रहें। तो इन दोनों भाईयों को चाहिये कि आपस में इतनी मुहब्बत पैदा कर लें कि लोग इन भाईयों को भाई भी समझें और एक दूसरे का दोस्त भी समझें। जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस रिशतादारी पे खुश होते हैं तो क्या ज़रूरत है मुहल्ले के लोगों को दोस्त बनाने की? क्या ज़रूरत है स्कूल में दोस्त बनाने की? एक घर में अगर दो तीन भाई हैं, तो वह आपस में एक दूसरे को दोस्त बनाएं, मदद लेनी है तो भी एक दूसरे से लें,

खेलना है तो भी मिल कर खेलें, कोई काम करना है तो भी मिल जुल कर करें।

कई घरानों में ऐसा देखा गया कि भाईयों के अंदर इतनी मुहब्बत होती है, इतनी क्वारडीनेशन होती है कि वह भाई, कम नज़र आते हैं, दोस्त ज़्यादा नज़र आते हैं, हर काम एक दूसरे के मशवरे से करते हैं, एक दूसरे का इक्राम करते हैं, इज़्ज़त व एहतिराम करते हैं। इससे घर के अंदर मुहब्बतें बढ़ती हैं, सुकून बढ़ता है, परेशानियां घट जाती हैं।

भाई......दुन्या व आख़िरत के साथीः

और सच्ची बात यही है कि दुन्या हो या आख़िरत, बंदे पर जब भी मुसीबत आए तो याद तो भाई ही आते हैं। इसकी दलील कुर्आन अज़ीमुश्शान में से, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जब हज़रत मूसा अलै0 को नुबुवत से सरफ़राज़ फ़रमाया तो हुक्म दियाः

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى.

जाइये! फ़िरऔन के पास कि वह सरकश हो रहा है। (ताहाः 24)

तो सय्यदना मूसा अलै0 समझे कि यह बहुत बड़ा बोझ है मुझ अकेले के लिये उठाना मुश्किल होगा, अब इस बोझ को उठाने के वक़्त उनको अपना भाई याद आया। क्या दुआ मांगी।

رَبِّ اشْرَحْ لِىْ صَدْرِىْ. وَيَسِّرْلِىْ اَمْرِىْ. وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِىْ يَفْقَهُوْا قَوْلِىْ.

ऐ अल्लाह मेरा सीना खोल दे और मेरा काम आसान कर दे और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे ताकि वह

मेरी बात समझ लें। (ताहाः 25-28)

फिर आगे कहाः

وَاجْعَلْ لِّیْ وَزِیْرًا مِّنْ اَهْلِیْ هَارُوْنَ اَخِیْ

ऐ अल्लाह! मेरे भाई हारून को आप मेरा वज़ीर बना दीजिये।

तो देखिये! इस बोझ को उठाते हुए मूसा अलै0 को अपना भाई याद आया। इसी तरह आख़िरत में भी होगा। चुनांचे क़ुर्आन मजीद में है कि जब एक आदमी के गुनाह ज़्यादा होंगे, नेकियां थोड़ी होंगी, परेशान होगा, उसे कहा जाएगा कि तुम अपने मुतअ़ल्लिक़ीन से नेकियां ले सकते हो तो ले लो, तो यह सब से पहले किसकी तरफ़ रुजूअ़ करेगा? क़ुर्आन मजीद ने कहाः

یَوْمَ یَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِیْهِ

(अबसः 34)

भाई का नाम सबसे पहले आया। तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने यह एक ऐसा रिशता बनाया है कि दुन्या आख़िरत में इंसान उसकी तरफ़ रुजूअ़ करता है।

हम खुर्मा वहम सवाबः

तो जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त चाहते हैं कि दो भाई मुहब्बतों से रहें, तो हम आपस में मुहब्बत से रहें, ज़िंदगी भी अच्छी गुज़रेगी और नामा अअ़माल में नेकियां भी लिखी जाएंगी, इसको कहते हैं "हमखुर्मा व हमसवाब" खजूरें भी खाओ और सवाब भी लो! एक दूसरे की ग़लतियों को मुआफ़ कर देना अज़मत हुआ करती है। आपस में हंसी मज़ाक़ हो जाता है, एक सीरियस बैठा है, दूसरा ख़्वाह मख़्वाह मज़ाक

करके उसको तंग कर रहा है तो फिर आपस में उलझ पड़ते हैं, यह गलत बात है। मज़ाक़ उस हद तक करना चाहिये जो दूसरा बर्दाश्त कर सके। जब दूसरे का दिल दुखे तो ऐसा मज़ाक़ अच्छा नहीं बल्कि बुरा हुआ करता है। दूसरे को छेड़ना, उसको किसी ग़लती पे आर दिलाना, उसका रीकार्ड लनाना, इससे फिर दूसरे बंदे का दिल दुखता है।

हमारे बुज़ुर्गों ने एक उसूल बताया, फ़रमायाः अगर अमपनी इज़्ज़त कराना चाहते हो तो तुम दूसरों की इज़्ज़त करो! यह नहीं हो सकता कि एक तो मज़ाक़ ही उड़ाता है और दूसरा उसकी इज़्ज़त करता रहे। ताली दो हाथों से बजती है। छोटा, बड़े के साथ इकराम का मुआमला करे कि वह बड़ा है, बड़ा छोटे के साथ शफ़क़त रखे कि मेरा भाई है, मुझसे छोटा है। जब एक तरफ़ से शफ़क़त होगी दूसरी तरफ़ से इज़्ज़त होगी तो आपस में उलफ़तें, मुहब्बतें बढ़ जाएंगी। तो भलाई और ख़ैरख़्वाही का रवय्या अपनाने से दिलों में एहतिराम पैदा होता है।

सिलहरहमी और क़तअ़ रहमी

यह जो आपस में तअ़ल्लुक़ जोड़ता है इसको शरीअ़त ने "सिलह रहमी" कहा। सिलह रहमी का मतलब यह है कि जिन रिश्ते नातों को शरीअ़त ने कहा कि इनको मज़बूत रखा जाए, उन रिश्तों को आपस में मेलजोल, लेनदेन, प्यार मुहब्बत से निभाया जाए, इसको "सिलह रहमी" कहते हैं। और एक दूसरे के साथ बोलना छोड़ देना, मिलना जुलना छोड़ देना, उसको क़तअ़ तअ़ल्लुक़ी और क़तअ़ रहमी कहते हैं। अल्लाह तआला को क़तअ़ नापसंद है और सिलह रहमी पसंद

है।

सिलह रहमी और क़तअ़ रहमी दोनों का बदला जल्द मिलता है:

हदीसे पाक में आता है कि दो चीज़ों का बदला बहुत जल्दी मिल जाता है: तवज्जोह से सुनें और नौजवान बच्चे और बच्चियां इस बात को पल्ले बांध लें कि दो चीज़ों का बदला इंसान को बहुत जल्दी मिलता है:

(1) अगर आपस में सिलह रहमी करे तो इसकी बरकतें उसकी ज़िंदगी में बहुत जल्दी ज़ाहिर होती हैं

(2) अगर कोई बंदा क़तअ़ रहमी करे, मसलन किसी पर तकब्बुर का बोल बोल दिया या जुल्म किया तो इसका अज़ाब इंसान को बहुत जल्दी आंखों से देखना नसीब होता है।

तो सिला रहमी का सवाब जल्दी मिलता है, जुल्म का अज़ाब जल्दी मिलता है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम आपस में सिला रहमी के साथ रहें।

सिलह रहमी के तीन इन्आ़मात:

एक हदीसे मुबारका में नबी अलै० ने इर्शाद फ़रमाया कि सिला रहमी पर अल्लाह तआला बंदे को तीन इन्आम अता करते हैं। सिला रहमी के तीन इन्आ़म

पहला इन्आम......अल्लाह तआला बंदे की उम्र को तवील कर देते हैं लम्बी उम्र अता करते हैं।

दूसरा इन्आ़म......अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस बंदे का रिज़्क़ कुशादा फ़रमा देते हैं। खुला रिज़्क़ अता फ़रमा देते हैं। सिला रहमी करने वाले को कभी भी रिज़्क़ की तंगी में अल्लाह नहीं

डालते।
और तीसरा इन्आ़म......कि सिला रहमी करने वाले को अल्लाह तआला बुरी मौत से महफ़ूज़ फ़रमा देते हैं।
तो मौत भी कलिमे पे नसीब हो गई, माल में भी बरकत हो गई, उम्र में भी बरकत हो गई तो बताइये कि इसके अलावा बंदा और क्या चाहता है? अक्सर हमारे जो मसाइल हैं, या सिहत से मुतअ़ल्लिक़ या कारोबार से मुतअ़ल्लिक़ या दीन से मुतअ़ल्लिक़, तो तीनों मसाइल का हल सिला रहमी में है। जब उम्र तवील होगी तो इसका मतलब यह कि सिहत अच्छी होगी। जब रिज़्क़ कुशादा होगा तो इसका मतलब फ़र्ज़ों, मर्ज़ों से जान छूट जाएगी, ग़ैर के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। अल्लाह तआला लेने वाले की जगह बंदे को देने वाला बनाएंगे और बुरी मौत से हिफ़ाज़त से मुराद यह है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बंदे को दीन वाली ज़िंदगी अता फ़रमाएंगे ताकि उसकी ज़िंदगी भी महमूद और फिर उसकी मौत भी महमूद हो सके। इन तीन इन्आ़मात को सामने रखें! तो जी चाहता है कि बहन भाई आपस में मिसाली मुहब्बत की ज़िंदगी गुज़ारें। घर में बच्चों को यह हदीस पाक सुनाएं! और इसके फ़ाएदे उनको खोल खोल कर बनाएं कि देखो! तुम आपस में झगड़ते हो, एक दूसरे के साथ रूठते हो, बोल चाल बंद कर देते हो, मार कुटाई का मुआमला करते हो, जबकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त चाहते हैं कि मुहब्बत प्यार से रहो फिर देखो कितने बड़े बड़े इन्आ़म मिलेंगे।

जन्नत में दाखिला आसानः

एक और हदीस पाक में है, तबरानी शरीफ की रिवायत

है, नबी अलै0 ने इर्शाद फ़रमायाः जो बंदा चाहे कि मेरा हिसाब आसान हो और मैं जल्दी से जन्नत में दाख़िल हो जाऊं तो उसको चाहिये कि

صِل مَنْ قَطَعَکَ وَاعْفُ عَنْ مَّنْ ظَلَمَکَ وَاَعْطِ مَنْ حَرَمَکَ

जो तुझ से तोड़े उससे जोड़, जो तुझ पर ज़ुल्म करे उसे मुआफ़ कर दे, अता कर जो तुझसे रोक ले।

जो इस से तोड़े यह उससे जोड़े। यअ़नी जो भाई बहन उससे दूर होना चाहे यह उसको क़रीब करने की कोशिश करे, कोई रूठ जाए यह उसको मना ले, कोई परेशान हो तो यह उसकी परेशानी को ख़त्म करने में मदद करे ताकि दिल एक दूसरे के साथ मज़ीद न हो जाएं। फ़रमाया "तो तुझसे तोड़े तू उससे जोड़"! यह नहीं कि जैसे हम कहते हैं कि हमारे साथ कोई अच्छा रहेगा तो हम अच्छे रहेंगे, अगर बुरा होगा तो हम भी बुरे बनेंगे, यह तो तिजारत हुई। नबी अलै0 ने इर्शाद फ़रमायाः जो तुझ से तोड़े तू उससे जोड़! यअ़नी जो तुझ से दूर होना चाहे तू उसको अपनी मुहब्बत प्यार से क़रीब कर ले।

दूसरा फ़रमाया "जो तुझ पर ज़ुल्म करे तू अल्लाह के लिये उसको मुआफ़ कर दे"। लिहाज़ा भाई बहनों में आपस में किसी ने मज़ाक़ कर दिया, ज़्यादती कर दी, दूसरे का दिल दुखाया, गो ऐसा नहीं करना चाहिये, मगर मुआफ़ करने वाले को चाहिये कि जल्दी मुआफ़ कर दे ताकि अल्लाह की रहमतों से उसको हिस्सा नसीब हो।

और तीसरा फ़रमाया "जो तुझे महरूम करे तू उसको अता कर दे" बहन भाईयों में यह भी मस्ला होता है, यह

चीज़ लाया था उसने मुझे नहीं दी थी, मैं उसको क्यों दूं? फलां मौक़ा पर उससे खिलौना मैंने खेलने के लिये मांगा था, कम्पयूटर का कहा था कि मैं इस्तेमाल कर लूं, उसने मुझे नहीं करने दिया था। तो फ़रमायाः जो तुझे महरूम करे तू उसको अता कर दे। जो बंदा यह तीन काम करेगा उसका हिसाब आसान होगा और वह जन्नत में जल्दी दाख़िल हो जाएगा। यह दीने इस्लाम कितना प्यारा है! शरीअ़त के अंदर क्या हुस्न है! कि ज़िंदगी गुज़ारने के इतने बेहतरीन उसूल बता दिये गये।

इतने फ़वाइद......

अब अगर पहली हदीस और दूसरी हदीस को मिला कर देखें तो मअ़लूम यह हुआ कि जो बंदा सिला रहमी करेगा, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त दुन्या में उसको लम्बी उम्र देंगे, दुन्या में उसको फ़राख़ रिज़्क़ अता करेंगे, और अल्लाह तआला उसको ईमान पर मौत अता करेंगे और चौथी बात कि क़्यामत की रुसवाई से बचाएंगे और आसानी से उसको जन्नत मे दाख़िल फरमा देंगे। तो यह कैसा प्यारा अमल है! कि जिस एक अमल के करने पर इंसान सीधा जन्नत में जाएगा। तो नौजवान बच्चे बच्चियों को यह अहादीस सुना कर उसकी अहमियत को उजागर करें कि आपस में उन्हें मुहब्बत प्यार से रहना है।

सिला रहमी के फ़वाइद हर एक के लियेः

आज का उन्वान चूंकि घर के झगड़ों का है। लिहाज़ा इसमें मियां बीवी का नाम आ रहा है न पड़ोसी का न किसी और का। सिला रहमी में तो वह तमाम रिशतादार शामिल हैं

जो शरीअत ने क़रार दिये हैं। तो फ़रमायाः सिला रहमी अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त को इतनी पसंद है कि घर के लोग अगर गुनाहगार भी होंगे, अल्लाह उनको सिला रहमी करने की वजह से माल और औलाद की कसरत अता फ़रमा देगा। अल्लाहु अक्बर कबीरा। इसलिये आप देखेंगी कि कितने लोग होते हैं! ज़ाहिर में नमाज़ का एहतिमाम नहीं, रस्म व रिवाज की ज़िंदगी लेकिन माल भी खूब होता है, औलाद भी खूब होती है। वजह क्या कि आपस में वह मुहब्बत व प्यार से रह रहे होते हैं। इस अमल की वजह से अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उनको माल में भी कसरत दे देता है, औलाद में भी कसरत दे देता है। तो सोचिये! अगर गुनाहगार बंदों को भी अल्लाह तआला यह नेअ़मतें दे देता है तो जो नेकूकार बन कर ज़िंदगी गुज़ारेंगे और सिला रहमी करेंगे, फिर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की कितनी बरकतें उनको नसीब होंगी।

दूसरा ज़ाविया

मां बाप और औलाद के झगड़े

वालिदैन की रोक टोक नागवार लगती है:

दूसरा ज़ाविया मां बाप और औलाद के दर्मियान झगड़ों का है। आम तौर पर देखा गया है कि मां बाप, औलाद की तरबियत चाहते हैं, उनको रोक टोक करते हैं। नौजवान बच्चों को रोकटोक बुरी लगती है। मां ने कह दिया कि बेटी तुमने फ़लां के घर नहीं जाना, उसके रोकने में कोई हिक्मत होगी। अब बेटी को गुस्सा चढ़ गया, अम्मी तो पाबंदियां ही लगाती रहती है, बाजी को जाने देती है मुझे क्यों नहीं जाने देती? मां ने कहा कि बेटी तुम दूपट्टे का ख़्याल नहीं रखती......क्या

मुसीबत है, अम्मी घर में भी आराम से नहीं रहने देती? तो बजाए इसके कि बच्चे चूं कहे कि हां अम्मी! यह अच्छी आदत है, मुझे अपनानी चाहिये, उसको पाबंदियां नज़र आती हैं। जब नफ़्स के अंदर अनानियत होती है तो इस्लाह की हर बात बंदे को बुरी लगती है, -

"मैं उसे समझूं हूं दुशमन जो मुझे समझाए है"

जो समझाए वही दुशमन नज़र आता है। फ़ोन उठाया, मां ने कह दियाः बेटी जब मैं भी मौजूद हूं, तेरे भाई भी मौजूद हैं तो घर में दूसरे लोग फ़ोन उठा लेंगे, आप क्यों उठाती हैं? बस इस पर झगड़ा। मां ने कह दिया (दस्तरख़्वान पर बैठे हुए) कि फलां चीज़ कम है ले कर आओ!......हर वक़्त मुझे ही काम कहा जाता है, मुझे सुकून से अम्मी खाना भी नहीं खाने देती। तो नौजवानों की थ्योरी भी अजीब होती है।

रोकटोक बच्चों के लिये रहमत हैः

मां बाप बच्चों के मोहसिन होते हैं, वह उनको अच्छी बातों पर रोकटोक कर रहे होते हैं, मगर यह इस बात को समझ नहीं रहे होते। लिहाज़ा रोकटोक से दिल का तंग होना यह इंतिहाई बुरी बात है! रोकटोक को अपने लिये बेहतर समझना चाहिये। नौजवान बच्चे यह समझें कि शुक्र है हमारे करीब कोई तो ऐसा है जो हमें ग़लती होने से पहले (इससे) बचा लेता है। हर बंदे को तजुर्बात करने की ज़रूरत नहीं। ज़िंदगी के नफ़ा व नुक़्सान के तजुर्बे हर किसी को करने पड़ें तो मुसीबतों में से गुज़रना पड़ जाए, ज़िल्लतें उठानीं पड़ जाएं, परेशानियां सर पर खड़ी रहें। इसलिये हर एक को नफ़ा व नुक़्सान के तजुर्बे करने की ज़रूरत नहीं। मां बाप ने धूप में

बाल सफ़ेद नहीं किये होते। ज़िंदगी के जो तजुर्बे वह कर चुके हैं, औलाद को चाहिये कि इनसे फ़ाएदा उठाए। मां बाप की बात का लिहाज़ रखे। इसलिये मां बाप की बात को सुनना अच्छी आदत है और उनकी बात को दर्मियान में काट देना, इंतिहाई बुरी बात है।

बच्चों की अजीब नफ़्सियात:

नौजवान बच्चों को यह भी देखा कि हर बच्चे का दिल चाहता है कि मुझे हर मशवरे में शामिल किया जाए, क्योंकि टीनेजर हो जाते हैं। वह समझते हैं कि घर के मशवरे में हमारी बात ही नहीं सुनते। मुझे कोई पूछता ही नहीं! या छोटा कहता है कि जी बड़े भाई से तो पूछ लेते हैं मुझसे तो कोई पूछता ही नहीं! यह उम्र ही ऐसी है कि इस उम्र में बच्चा चाहता है कि मेरी बात सुनी जाए, मानी जाए। अब अगर मान लो तो बच्चे के अंदर एहसासे बरतरी आ जाता है, वह समझेगा कि बस मेरी ही बात मानी जाती है, मैं दूसरों से सीनियर हूं। और अगर न मानी जाए तो उसमें एहसासे कमतरी आ जाता है, डीप्रेशन का शिकार होता है। तो दोनों बातें अजीब हैं।

तहम्मुल मिज़ाजी की ज़रुरत:

अब यहां तहम्मुल मिज़ाजी काम आती है। मां बाप अक़्लमंदी के साथ बच्चे को डील करें, न उसमें एहसासे बरतरी पैदा होने दें और उन में एहसासे कमतरी पैदा होने दें। चूंकि उम्र ऐसी है कि फ़ौरन गुस्सा आता है और नौजवान बच्चों को जब ग़ुस्सा आता है तो लगता है कि कोई सैलाब आ गया है। उसी वक़्त जुदा होने की बातें करते हैं, घर से

निकल जाने की बात करते हैं, बस मरने मारने पर तुल जाते हैं। उनका गुस्सा उनके कंट्रोल में ही नहीं होता।

बच्चों की नशो व नुमा में बड़ों का किरदारः

अब नौजवान बच्चों से यह पूछा जाए कि आप को किसने पाल पोस कर बड़ा किया? जवाब मिलेगाः मां बाप ने। भई मां बाप के साथ बड़े बहन भाईयों का भी तो हिस्सा है, उन्होंने भी तो मां बाप का साथ दिया। छोटे होते हैं तो बड़ी बहन, मां की तरह उसका ख़्याल रखती है। जो क़रीबी रिशतादार होते हैं, वह मोरल सपोर्ट देते हैं। ख़ाला, फूफो, और इस क़िस्म के जो भी रिशते होते हैं, उनकी मोरल सपोर्ट होती है। बच्चे ख़ुद बख़ुद तो पल कर जवान नहीं हो जाते, उनके बड़े और जवान होने में क़रीब के लोगों का हिस्सा होता है। तो जब छोटे थे और हर काम में दूसरों के मोहताज थे, तब आख़िर किसी ने तो तुम्हारा ख़्याल रखा।

तुम्हारी मां रातों को जागती थी। उसने बचपन में विलादत के बाद स्लीप एट नाइट्स गुज़ारीं, कि साल दो साल तक बच्चे आम तौर पर रातों को जागते हैं, रोते हैं, मां थकी हुई भी हो तो उसको बच्चे की ख़ातिर जागना पड़ता है। और जो छोटे बच्चे होते हैं, उनकी तो हमने अजीब आदत देखी, अल्लाह के फ़ज़्ल से पूरा दिन वह सोते हैं और जब रात मां बाप के सोने का वक़्त होता है, उस वक़्त वह जागते हैं। और मैं अपने दोस्तों को अक्सर यही कहता हूं कि बच्चों की बरकत है कि आपको भी तहज्जुद पढ़नी नसीब हो जाती है। तो मां बाप ने भी आख़िर जाग के ज़िंदगी की रातें गुज़ारी। पहले बच्चे को खिलाया, बाद में मां ने खाया। पहले बच्चे को

पिलाया, बाद में मां ने पिया। पहले बच्चे को सुलाया और बाद में मां जाकर सोई। कितनी उसकी कुर्बानी थी! तो आख़िर कुर्बानी का कोई रेटरन होना चाहिये था। क्या इतना भी उस मां का हक़ नहीं कि वह नौजवान बच्चे को कोई बात समझाए तो यह उसकी बात को तसल्ली से सुन ले? आजकल नौजवान तो बस मां को अल्लाह मियां की गाए समझते हैं, लिहाज़ ही नहीं करते।

वालिदैन के बारे में शरीअ़त का हुक्मः

आइये देखिये! शरीअ़त ने क्या कहा। क़ुर्आन अज़ीमुश्शान में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं:

وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا

कि तुम मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक का मुआमला करो।

मां बाप दोनों के साथ अच्छा सुलूक करो।

गो कि एक सहाबी ने नबी अलै० से पूछा कि मैं किसके साथ हुस्नू सुलूक करूं? फ़रमायाः मां के साथ। फिर पूछा, किसके साथ? फ़रमाया, मां के साथ। तीसरी मर्तबा पूछा, किसके साथ? फ़रमाया, मां के साथ। चौथी मर्तबा पूछा, तो फ़रमायाः हां बाप के साथ भी हुस्ने सुलूक करो। तो इस हदीसे पाक से यह मतलब निकला कि बाप के साथ भी हुस्ने सुलूक करना है मगर मां का इससे भी ज़्यादा ख़्याल रखना है। इसलिये कि मां ने तकलीफ़ ज़्यादा उठाई होती है। एक साल तो उसने पेट उठाया होता है। फिर इसके बाद दो साल उसने गोद में उठाया होता है। हर वक़्त बच्चे ही में मसरूफ़ होती है, चौबीस घंटे की ख़ादिमा। कोई ड्यूटी थोड़ी होती है! कि

आठ घंटे में बच्चे को अटेंड करूंगी और फिर ड्यूटी ख़त्म नहीं। मां बाप के तो चौबीस घंटे उसके लिये वक़्फ़ होते हैं, बल्कि पहले वक़्तों में जब आज के डाइपर नहीं होते थे और बच्चे रात को सर्दी के मौसम में सोए हुए अपने बिस्तर पर पेशाब कर देते थे तो हमने ऐसी मिसालें भी सुनीं कि मां बच्चे को खुश्क बिस्तर पर लिटा देती थी और गीली बिस्तर पर खुद लेट जाती थी। अल्लाहु अक्बर कबीरा।

एक मां का मुजाहिदाः

हमारे करीब रिशतादारों में एक लड़की ने नियत कर ली कि अल्लाह ने मुझे बेटा दिया है मैं इसको हमेशा बावुजू दूध पिलाऊंगी। अल्लाहु अक्बर कबीरा। हमने जो उसको देखा इतना मुजाहिदा, इतना मुजाहिदा! हैरान रह गए। इसलिये कि मदर फ़ीडिंग खुद करती है और उसने कहा कि मैंने नियत की हुई है कि बावुजू पिलाऊंगी। अब हर वक़्त तो वुजू नहीं रहता, चलो दिन में तो गुज़ारा हो जाता। सर्दी के सख़्त ठंडी रातों में बच्चे को दूध पिलाया और पिला के वह बेचारी लेटी तो पांच मिनट उसकी आंख लगी कि बच्चा फिर रोने लगा। अब गर्म बिस्तर में से उठ कर वह जाती और बाथ रूम में वुजू करके फिर आके दूध पिलाती। फिर बच्चे को फ़ीड देती और अभी आधा घंटा बच्चा नहीं सोया था कि फिर रोना शुरू कर दिया। अल्लाह की शान कि बच्ची को फिर वुजू के लिये जाना पड़ा। एक एक रात में वह बच्ची पंद्रह पंद्रह दफ़ा जाकर वुजू करके आती। सोचें! वह बच्ची रात को क्या सोती होगी? इसी तरह सफ़र में बच्चे के लिये वुजू का काइम रखना कितना मुश्किल काम है। किस किस जतन से उसने अपने

उस बेटे को दूध पिलाया! यही सोच सोच कर मुझे हैरत होती है और दिल कहता है कि वाक़ई अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने जो मां का यह मक़ाम बताया, यह उस मां का हक़ बनता है।

मां का मक़ाम:

इसी लिये हदीसे पाक में आता है कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त शबे क़द्र में बड़े बड़े गुनाहगारों की मग़फ़िरत फ़रमा देते हैं लेकिन जो मां बाप का नाफ़रमान होता है, शबे क़द्र में भी अल्लाह उसकी मग़फ़िरत नहीं फ़रमाया करते। नबी अलै0 की ख़िदमत में एक सहाबी आए और कहने लगे: ऐ अल्लाह के नबी! मुझसे बड़ा गुनाह सरज़द हो गया। नबी अलै0 ने फ़रमाया: जाओ! अपनी मां से दुआ करवा लो। उसने कहा, ऐ अल्लाह के नबी मेरी मां तो फ़ौत हो चुकी। पूछा, तुम्हारी ख़ाला है? जी वह ज़िंदा है, फ़रमाया: जाओ ख़ाला से दुआ करवा लो, अल्लाह तुम्हारे बड़े गुनाह को बख़्श देगा। सोचिये! जब कबीरा गुनाहों को अल्लाह तआला मां के हाथ उठने पर मुआफ़ फ़रमा देते हैं तो अल्लाह तआला के यहां मां का क्या मक़ाम होगा? इसलिये जो शख़्स अपने मां बाप से हुस्ने सुलूक करता है, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उस बंदे की ज़िंदगी में बरकतें अता फ़रमाते हैं।

अदले का बदला:

हदीसे पाक का मफ़हूम। सुनें और दिल के कानों से सुनें! जो शख़्स अपने मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक का मुआमला करता है, उसकी आने वाली औलाद कल उसके साथ हुस्ने सुलूक का मुआमला करेगी। यह है "अदले का बदला"। "जैसी करनी वैसी भरनी"। जो नौजवान लड़के लड़कियां,

आज अपने मां बाप की ख़िदमत करेंगे कल जब उनकी शादियां होंगी और वह खुद मां बाप बनेंगे, अल्लाह उनको भी फ़रमांबरदार औलाद अता फ़रमाएंगे, क्या मज़े की बात है! तो इसलिये नौजवान बच्चे बच्चियों को चाहिये कि ख़िदमत करके मां बाप को राज़ी करें ताकि औलाद उनको राज़ी करे और इसके ज़रीए से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त भी उनसे राज़ीं हो जाएं।

मां बाप फ़ौत हो जाएं तो......

इसलिये शरीअ़त ने कहा कि मां बाप अगर फ़ौत हो जाएं तो बंदे को चाहिये कि जो मां बाप के तअ़ल्लुक़ वाले थे, इंसान उनके साथ हुस्नू सुलूक का मुआमला करे। मसलन एक बंदा कहता है: मैं अपनी मां की ख़िदमत न कर सका, फ़ौत हो गई, तो भई अब आप अपनी ख़ालाओं की ख़िदमत करो। जी ख़ाला भी कोई नहीं तो भई मां जिनसे तअ़ल्लुक़ रखती थी जिनको वह अपने क़रीबी समझती थी, अगर उनका इक्राम करोगे तो तुम्हें अपनी वालिदा का इक्राम करने का सवाब दिया जाएगा।

वालिदैन की ख़िदमत का सिला:

यह अमल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को इतना पसंद है कि इंसान को दुन्या की मुसीबतों से भी बचाता है। चुनांचे बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि बनी इस्राईल के तीन बंदे सफ़र पर निकले, बारिश हो गई तो उससे बचने के लिये वह ग़ार के अंदर चले गए। बारिश की वजह से एक बड़ी चट्टान गिरी और ग़ार के मुंह के ऊपर आ गई। इतनी वज़नी थी कि तीनों ने मिलकर ज़ोर लगाया, मगर वह हिलती ही न थी। अब कोई

वहां था ही नहीं जो उनकी मदद करे, तीनों ज़ोर लगा लगा कर ज़ब थक गए, आजिज़ आ गए, तो अब उनको मौत आंखों के सामने नज़र आने लग गई, कि ग़ार का मुंह बंद है, हम भूके प्यासे एड़ियां रगड़ कर यहीं मर जाएंगे। उस वक़्त उन्होंने सोचा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने कोई अपने अमल पेश करो! जिन अमलों को क़बूल करके अल्लाह हमें इस मुसीबत से नजात दे दे। चुनांचे उन्होंने अपने अपने अमल पेश किये।

इनमें से एक ने यह कहा कि मैं बकरियां चराता था और जब घर वापस आता तो मैं अपनी वालिदा को दूध दिया करता था। एक रात जब मैं आया तो वालिदा सो चुकी थी, मैंन दूध लेकर खड़ा रहा कि वालिदा की आंख खुलेगी तो मैं दूध दूंगा। या अल्लाह! वह पूरी रात सोई रहीं, उनकी आंख नहीं खुली, और मैं पूरी रात हाथ में दूध का ग्लास लेकर इंतेज़ार करता रहा। अगर यह मेरा अमल आपको पसंद है हमें इस मुसीबत से नजात दीजिये! तो इस अमल की बरकत से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने तीसरा हिस्सा (ग़ार का जो मुंह था) वह खोल दिया।

फिर दूसरे ने अपना अमल पेश किया क मेरी एक कज़्न थी, मेरा उसके साथ नफ़्सानी, शहवानी तअ़ल्लुक़ था। मैंने किसी बहाने से उसको ज़िना पर आमादा कर लिया, जब मैं ज़िना करने लगा तो उस वक़्त उसने मुझे कहा कि तुम अल्लाह की मुहर को क्यों तोड़ते हो? जो चीज़ शरीअ़त में तुम्हारे लिये हराम है, तुम उसका इर्तिकाब क्यों करते हो? उसकी बात मेरे दिल पर ऐसी बैठ गई कि मौक़ा के बावजूद

मैंने उसको भेज दिया और इस गुनाह का इर्तिकाब नहीं किया। इस अमल को अल्लाह क़बूल कर ले! चुनांचे इस अमल की वजह से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने एक तिहाई और ग़ार का मुंह खोल दिया।

फिर तीसरे ने अपना अमन पेश किया कि मैंने बकरियां पालीं, मेरा एक पार्टनर था, कुछ अर्से के बाद वह चला गया, मैं उसके माल को उसी तरह बढ़ाता रहा, कई सालों के बाद जब वह आया और उसने मांगा तो मैंने उसका पूरा माल उसे दे दिया। वह हैरान हो गया और सारा माल लेकर चला गया। ऐ अल्लाह! मैंने आपके लिये यह अमल किया, अगर यह आपको पसंद है तो हमें नजात दीजिये! तो वह चट्टान मुंह से हट गई और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने तीनों को इस मुसीबत से नजात अता कर दी।

अपने फ़राइज़ का ख़्याल रखें:

अब यहां यह बात सोचने की है कि मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक भी, उन अअ़्माल में से एक है कि जिन अअ़्माल का वास्ता दिया जाए, इस अमल की बरकत से अल्लाह बंदे को दुन्या की मुसीबतों से भी बचा देते हैं। इसलिये नौजवान बच्चों को चाहिये कि वह भी अपने मां बाप की ख़िदमत करें, उनकी दुआएं लें और मां बाप को भी चाहिये कि वह औलाद के साथ पलंग और चारपाई वाला मुआमला न करें कि इधर से उठा कर उधर रख दी, ज़रा सी बात पर डांट पिला दी। वह भी उनको इंसान समझें, उनकी बात को सुनें और उनको समझाने की कोशिश करें। ज़बरदस्ती अपनी राए बच्चों पर ठूंसने की बजाए, उन बच्चों को समझाना चाहिये, नफ़ा व

नुक़्सान बताना चाहिये, ताकि बच्चे अपनी ख़ुशी के साथ एक काम को कर रहे हों। तो मां बाप को भी इसका ख़्याल करना चाहिये।

और औलाद को भी ख़्याल करना चाहिये। अगर बिलफ़र्ज़ मां बाप ख़्याल नहीं कर पाते तो क्या फिर भी नौजवानों को ख़्याल नहीं रखना चाहिये? शरीअ़त कहती है कि मां बाप ने अगर ख़्याल न भी रखा तुम्हें अज्र तब मिलेगा जब तुम इसके बावजूद उनकी ख़िदमत करोगे। हैरत की बात है कि शरीअ़त कहती हैः मां बाप अगर काफ़िर हैं और मुश्रिक हैं।

وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا

तुम इस दुन्या में उनके साथ फिर भी अच्छाई का मुआमला करो।

तो काफ़िर और मुश्रिक मां बाप के साथ अगर अच्छाई का हुक्म है तो जो ईमान वाले मां बाप हैं, जिन्होंने बच्चे को छोटी उम्र में कलिमे की नेअ़मत दे दी, उनके साथ अच्छा सुलूक करना अल्लाह तआला को कितना प्यारा होगा?

लिहाज़ा अगर बहन भाई आपस में मुहब्बत व प्यार से रहें। औलाद, मां बाप की साथ मुहब्बत व प्यार से रहे, उनकी ख़िदमत करे, तो घर फिर एक जन्नत का नमूना बन जाता है। अल्लाह तआला उस घर में इ़ज़्ज़तें भी देते हैं, सिहत देते हैं, रिज़्क़ में बरकतें औलाद में बरकतें, मौत भी आती है तो ईमान पर और आख़िरत में भी हिसाब आसान और जन्नत में जाना आसान। तो इस अमल पर देखिये! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की कितनी रहमतें होती हैं?

अल्लाह की रज़ा, वालिदैन की रज़ा में है:

यह पक्की बात है कि अल्लाह की रज़ा वालिदैन की रज़ा में है। जब तक वालिदैन राज़ी न होंगे, बंदे के अअ़माल भी क़बूल न होंगे। हमारे क़रीब के एक देहात में एक वाक़िआ पेश आया जो सुना कर यह आजिज़ अपनी बात को मुकम्मल करता है। उम्मीद है कि नौजवान बच्चे और बच्चियां इस बात को दिल के कानों से सुनेंगे।

देहाती इलाक़े में बूढ़े मां बाप थे, अल्लाह ने बुढ़ापे में उनको औलाद अता कर दी। बच्चे को उन्होंने पढ़ाया, बच्चा ज़हीन था, हत्ता कि वह बच्चा पढ़ लिखकर इंजीनियर बन गया। अब जब वह इंजीनियर बना तो शहर के अंदर उसको बड़ी अच्छी नौकरी मिल गई, कोठी मिल गई, कार मिल गई। उसने मां बाप को कहा: जी आएं! मेरे साथ शहर में रहें। वह बेटे के पास शहर में आ गए। मां बाप चूंकि देहात में रहने के आदी थे, रिशतेदारियां वहीं थीं और आज़ाद फ़ज़ा थी और वह उस माहौल में एडजस्ट हो चुके थे। वह कुछ दिन तो बाहर में रहे लेकिन रिशतादारों की ख़ुशी ग़मी में बार बार गांव जाना पड़ता था। तो मां बाप ने कहा कि बेटे! हम से बार बार यह सफ़र नहीं होते, हमें आप वहीं देहात में रहने दो। आपने अगर रहना है तो आप शहर में रह लो, हमसे मिलते रहना।

चुनांचे इस तरह बेटे ने शहर में रहना शुरू कर दिया। कुछ अर्से बाद उसने सोचा कि भई अब हर तरह से मैं सेट तो हो ही चुका हूं तो मुझे शादी करवा लेनी चाहिये। शहर के एक बड़े मुअ़ज़्ज़ज़ घराने की एक ख़ूबसूरत और ख़ूब सीरत लड़की का पता चला, उसने उनकी तरफ़ निकाह का पैग़ाम

भेजा। मां बाप से पूछा, मां बाप ने कहा कि बेटे! ज़िंदगी आप ने गुज़ारनी है जहां आप खुश होंगे हम भी वहीं खुश होंगे। उसकी शादी भी हो गई।

अब शादी के बाद यह अपनी बीवी को घर लेकर आया, तो बीव कुछ अर्सा तो उसके मां बाप को मिलने देहात में जाती रही। फिर जब बच्चों के सिलसिले शुरू हो जाते हैं तो आना जाना भी मुश्किल हो जाता है। मां बाप उस बच्चे को कहते कि आप हमारे पासा हफ़्ते में एक दफ़ा आकर मिल जाया करो। यह एक दफ़ा मिलने चला जाता। अब बंदा है, कई दफ़ा प्लानिंग करता है कि मैं दो घंटे में आ जाऊंगा और दो घंटे की जगह छः घंटे लग जाते हैं। तो जब इस तरह ज़रा देर होनी शुरू हुई तो बीवी को भी बुरा लगा, वह फिर बोलना शुरू हो गई। जैसे औरतों की एक लेंगवेज होती है। अब यह नौजवान शरीफ़ुन्नफ़्स था। अपनी बीवी को समझाता, वह भी अमीर घराने की थी, और आगे से बात को बढ़ा देती थी, ख़्वाह मख़्वाह का बहस मुबाहिसा आपस में हो जाता, और यह हर हफ़्ते का मस्ला होता। दो चार साल गुज़रे। तो अब बीवी जो थी वह मां बाप के पास जाने से इलर्जिक हो गई। जब यह जाने लगता तो वह हंगामा कर देती। यह परेशान कि वहां न जाऊं तो मां बाप नाराज़, और अगर जाऊं तो यही बीवी नाराज़। सोचता था कि मैं कैसे इस मुसीबत से जान छुड़ाऊं?

इतने में उसको सऊदी अरब से एक जाब आफ़र आ गई। बहुत मअ़कूल पेकेज था। उसने मां बाप को जाकर बताया कि मुझे तो सऊदी अरब में नौकरी मिल रही है। मां

बाप बड़े खुश हुए, बेटे! हमारा अल्लाह हाफ़िज़ है तुम उस देस में जाओगे, अल्लाह का घर देखोगे, बेटे! हमारे लिये यही खुशी काफ़ी है। मां बाप ने इजाज़त दे दी। यह बीवी बच्चों को लेकर मक्का मुकर्रमा आ गया। उस ज़माने में टेलीफ़ोन तो ज़्यादा होते नहीं थे। बस हज और उम्रे पर जो लोग आते थे उन्ही के ज़रीए पैग़ाम रसानी होती थी। या कोई चीज़ एक दूसरे को पहुंचा दी जाती थी। चुनांचे यह नौजवान शुरू में उनके लिये ख़र्चा भेजता रहा और कभी कभी सिहते खुशी के पैग़ाम भी भेजता रहा, लेकिन तेरह साल यह वहीं पर रहा और अपने वालिदैन की तरफ़ वापस न आ सका। नेक था, हर साल हज करता था। एक मर्तबा हज के दूसरे तीसरे दिन यह मताफ़ में खड़ा था, बैतुल्लाह के सामने ज़ार व कतार रो रहा था। किसी अल्लाह वाले ने देखा, पूछा नौजवान! क्या हुआ, कहता है कि मुझे तेरह साल हो गए हैं, हर दफ़ा मैं हज करता हूं लेकिन हज के दो तीन दिन के बाद मैं ख़्वाब देखता हूं कि कोई कहने वाला कहता है "तेरा हज कबूल नहीं" और मैं परेशान हूं कि पता नहीं कौनसी मुझसे ऐसी ग़लती हुई है कि मेरा हज अल्लाह की बारगाह में कबूल ही नहीं? वह अल्लाह वाले थे, बंदे की नब्ज़ पहचानते थे, उन्होंने दो चार बातों में गेस कर लिया। कि उसने तेरह साल से मां बाप को शक्ल ही नहीं दिखाई, उनके पास गया ही नहीं तो साफ़ ज़ाहिर है कि बूढ़े मां बाप उस पर ख़फ़ा होंगे। उन्होंने बात समझाई कि बेटे! जाओ! मां बाप ज़िंदा हैं उनकी ख़ैर ख़बर लो, फिर वापस आना। ख़ैर यह आया और इसने आकर फ़ौरन अपनी टिकट बुक करवा ली। बीवी ने कुछ आएं बाएं

शाएं करने की कोशिश की, मगर यह नौजवान भी सीरियस था इसने उसको भी शेर की आंखें दिखाईं। जब बीवी ने देखा कि यह बहुत सीरियस नज़र आता है तो चुपके से डर के मारे भीगी बिल्ली बन कर बैठ गई।

ख़ैर उसने तैयारी की और वापस अपने मुल्क आया, अब जब अपने गांव के क़रीब पहुंचा तो उस नौजवान को यह भी पता नहीं था कि मेरे मां बाप इस वक़्त ज़िंदा भी हैं या नहीं? अब यह सोच रहा है कि पता नहीं मेरे मां बाप किस हाल मैं हैं? तेरह साल गए हुए हो गए थे। उसको एक नौ दस साल का लड़का मिला। उसने उससे पूछा कि वह फ़लां बड़े मियां का क्या हाल है? उसने बताया कि वह बड़े मियां तो छः महीने हुए फ़ौत हो गए, अलबत्ता वह बूढ़ी औरत अभी ज़िंदा है, घर में है और बड़ी बीमार है। मैंने सुना है कि उनका एक बेटा है जो सऊदी अरब गया हुआ है, पता नहीं वह कैसा ना मअ़कूल बेटा है जो अपने मां बाप की ख़बर ही नहीं लेता। बच्चा बात करके चला गया लेकिन उस नौजवान के दिल की तार को छेड़ गया। अब उसको एहसास हुआ, ओ हो! वालिद दुन्या से चले गये, मैंने आख़िरी वक़्त में उनकी शक्ल ही नहीं देखी। अब तो अम्मी मुझसे नाराज़ होगी और अम्मी तो मेरा चेहरा ही नहीं देखेगी, अम्मी तो मुझे घर से ही निकाल देगी, मेरे साथ बात ही नहीं करेगी। अब यह सोच रहा है कि अम्मी को कैसे मनाऊंगा? मग़मूम दिल से घर की तरफ़ जा रहा था। बिलआख़िर जब उसने घर के दरवाज़े पर पहुंच कर देखा, तो दरवाज़ा खुला हुआ था, किवाड़ मिले हुए थे। उसने आहिस्ता से दरवाज़ा खोला, अंदर दाख़िल हुआ,

क्या देखता है कि सिहन में चारपाई के ऊपर उसकी बूढ़ी बीमार वालिदा लेटी हुई हैं। हड्डियों का ढांचा थी, वह चारपाई के साथ लगी हुई थी। उसको ख़्याल आया कि कहीं अम्मी सो न रही हो, तो मैं पहले आहिस्ता आहिस्ता चलते हुए क़रीब जाता हूं। चूंकि उसकी वालिदा की आंखों पर मोतिया आ चुका था, जब वह दबे पांव बिल्कुल क़रीब पहुंचा तो हैरान हुआ कि उसकी वालिदा के उस वक़्त हाथ उठे हुए थे और वह कुछ अलफ़ाज़ कह रही थी, गोया अल्लाह तआला से दुआ मांग रही थी। उसने जब क़रीब होकर सुना तो मां यह अलफ़ाज़ कह रही थी, या अल्लाह! मेरा ख़ाविंद दुन्या से चला गया, मेरा एक ही बेटा है जो मेरा महरम है, अल्लाह! उसे बख़ैरियत वापस पहुंचा देन, ताकि अगर मेरी मौत आए तो मुझे क़ब्र में उतारने वाला कोई तो मेरा महरम मौजूद हो। मां यह दुआएं मांग रही है और बेटा समझता है कि मां मुझे देखना भी गवारा नहीं करेगी। उसने जब मां के यह अलफ़ाज़ सुने उसने फ़ौरन कहा, अम्मी! मैं आ गया हूं, तो मां चौंक उठी, आवाज़ सुनते ही बोलीः मेरे बेटे! आ गए, जी अम्मी! मैं आ गया हूं। मां कहने लगीः बेटे! ज़रा क़रीब हो जाना, मैं तुम्हारी शक्ल तो देख नहीं सकती, मुझे अपना बोसा ही लेने दो, मुझे अपने जिस्म की ख़ुशबू सूंघने दो, यह मां की मुहब्बत होती है। ख़ैर यह बेटा दो चार दिन वहां रहा, अल्लाह की शान कि मां बीमार थी, चंद दिनों में फ़ौत हो गई। उसने अपनी वालिदा को दफ़नाया कफ़नाया और इस ज़िम्मादारी से फ़ारिग़ होकर, कुछ अर्से के बाद यह वापस मक्का मुकर्रमा आ गया। कहते हैं, अगले साल जब हज का मौक़ा आया, उसने

हज के दूसरे दिन फिर ख़्वाब देखा, जिस शख़्स को देखता था उसने देखा कि वही है और उसको कह रहा है: अल्लाह ने तेरे इस हज को भी क़बूल कर लिया और तेरे पिछले तेरह हजों को भी क़बूल कर लिया। जब मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बंदे के अमलों को क़बूल कर लेते हैं और उसके साथ रहमतों का मुआमला करते हैं तो नौजवानों को चाहिये कि घरों में न आपस में उलझें, न मां बाप की बेक़द्री करें। मां बाप शफ़क़तों वाला मुआमला करें, औलाद ख़िदमत का मुआमला करे। सब मुहब्बत प्यार के साथ रहें लड़ाई झगड़े से बचें। यह फ़साद है और।

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ

अल्लाह तआला फ़साद को पसंद नहीं फ़रमाते। अल्लाह तआला हमें नेक बन कर और एक बन कर ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

وآخر دعونا ان الحمد لله رب العلمين

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सुसराल के झगड़े

अज़ इफ़ादात

पीरे तरीकत रहबरे शरीअ़त मुफ़क्किरे इस्लाम
महबूबुल उलमा वस्सुलहा

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद
मुजद्दिदी नक़्शबंदी मद्दज़िल्लुहू

सुसराल झगड़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُوْنَ. وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

आज का उन्वान:

मुसलमान मुआशरे में हर फ़र्द को उलफ़त व मुहब्बत की ज़िंदगी गुज़ारनी होती है। हुस्ने अख़्लाक़ के ज़रीए, ईसार के ज़रीए, दूसरे बंदे को खुशियां पहचानती होती हैं, लेकिन हम आजकल अपने घरों में देखते हैं कि हर घर के अंदर कहीं न कहीं झगड़ा और फ़साद है। तो इस रमज़ानुल मुबारक में इस उन्वान पर मुस्तक़िल बात करने का इरादा किया गया। अब तक हम यह बयान कर चुके कि बच्चों के आपस में झगड़े क्यों होते हैं, बड़ों के आपस में झगड़े क्यों होते हैं? औलाद और मां बाप के दर्मियान झगड़े क्यों होते हैं? आज का उन्वान "सुसराल के झगड़े"।

पेचीदा उन्वान:

यह इतना पेचीदा उन्वान है कि रस्सी की डोर का सिरा पकड़ना भी मुश्किल नज़र आता है। Multiple factor (कई पहलू) इसमें involve (शामिल) होते हैं, मगर नतीजा यह निकलता है कि सुसराल में एक खींचा तानी का माहौल होता

है। सास से पूछो तो वह अपनी जगह सच्ची, बहू से पूछो वह अपनी जगह सच्ची, नंदों से पूछो तो वह अपनी जगह सच्ची, सच्ची भी सब होती हैं और परेशान भी सब होती हैं। तो आख़िर कोई न कोई तो बात होती है कि यह घर के अंदर Tension (तनाव) की कैफ़ियत है। एक दूसरे की ग़ीबतें हो रही होती हैं, इख़्तियारात की जंग हो रही होती है। घर पर सुकून होने की बजाए, दंगा और फ़साद का माहौल नज़र आता है।

सुसराल......लड़की का असली घरः

हर लड़की को ज़हन में यह बात सोचनी चाहिये कि मेरा असली घर सुसराल है। बेटी हमेशा पराए घर की अमानत होती है, मां बाप गो उसे पालते हैं लेकिन बिलआख़िर उसे दूसरे का घर जाकर बसाना होता है। इसलिये बच्ची के ज़हन में शुरू से यह बात डालनी होती है कि अपना घौंसला अपना......कच्चा हो या पक्का। जब बच्ची शुरू से ही घर बसाने की नियत लेकर जाएगी तो वह घर में मौजूद जो पहली ख़्वातीन हैं, उनके साथ अच्छा तअ़ल्लुक़ बनाकर रखेगी और मुहब्बत प्यार के साथ रहेगी। घर में पहले से मौजूद ख़्वातीन को चाहिये कि वह इस नई आने वाली बच्ची को अपने घर का एक फ़र्द समझें। इतनी कुर्बानी करके आई, मां बाप को छोड़ा, बहन भाई को छोड़ा, मैके में जहां रहती थी वहां अपनी सहेलियों को छोड़ा, सब कुछ छोड़ छाड़ कर अगर उसने कुर्बानी की और अपनी ख़ाविंद की ख़ातिर यहां आ गई तो इस कुर्बानी की भी तो आख़िर कोई Value (क़द्र) होती है। अगर सब लोग अपनी अपनी ज़िम्मादारियों का एहसास करें

तो इन झगड़ों को ख़त्म किया जा सकता है। आम तौर पर जब किसी बच्चे की शादी होती है तो वह अपने मां बाप के घर रहता है और बच्ची को एक आबाद घर के अंदर आना पड़ता है, यह उसकी ज़रूरत भी है, लेकिन यहां आकर उसको एडजस्मेंट का मस्ला होता है।

झगड़ों की बुन्यादी वुजूहात

अब हमें पहले यह सोचना है कि यह झगड़ों की बुन्यादी वुजूहात क्या होती हैं ताकि इन वुजूहात को ख़त्म किया जा सके।

सास की तरफ़ से झगड़ों के अस्बाबः

तो सबसे पहले सास की तरफ़ से झगड़ों के अस्बाब।

(1) बदगुमानीः

सास की तरफ़ से झगड़ों के अस्बाब में से पहला सबब "बदगुमानी" होता है कि सास के दिल मे एक fear of unknown (अंजाना ख़ौफ़) होता है कि यह आने वाली लड़की, कहीं मेरे बेटे के दिल पर क़ब्ज़ा न कर ले और उसको लेकर कहीं दूर न चली जाए, लिहाज़ा जब वह देखती है कि मियां बीवी आपस में मुहब्बत के साथ रह रहे हैं तो ऐसे हर्बे इस्तेमाल करना शुरू करती है कि मियां बीवी की मुहब्बत ज़्यादा पक्की न हो। चुनांचे वह अपने बेटे को उसकी बीवी के बारे में शिकायतें लगाना शुरू कर देती है, ताकि उस बढ़ती मुहब्बत को कम कर सके। ज़हन में उसके यह डर होता है कि अगर इस लड़की ने मेरे बेटे के दिल पर क़ब्ज़ा कर लिया तो यह मुझे दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल कर बाहर फैंक देगी। लिहाज़ा महाज़ आराई शुरू हो जाती है।

(2) हुक्मरानीः

दूसरी वजह यह होती है कि बहू के आने से पहले सास अपने घर में All in all (सब कुछ) होती है उसका हुक्म चलता है वह घर की मालिक है, बड़ी है। जब बहू आती है तो सास अपनी इस हुकूमत के अंदर किसी की दख़ल अंदाज़ी बर्दाश्त नहीं करती, लिहाज़ा उसकी कोशिश होती है कि आने वाली लड़की मेरी बांदी बन कर रहे। ख़ाविंद की बजाए मेरे इशारों पर चले, जो मैं चाहूं इस घर में वही हो। बअ़ज़ घरों मे हमने यह भी सुना कि सास की हुकूमत इतनी मज़बूत होती है कि अगर बहू को कोई चीज़ खानी और पीनी है तो फ्रीज का दरवाज़ा खोलने से पहले सास से इजाज़त लेनी पड़ती है। अब अगर आने वाली किसी बच्ची को इस तरह महकूम बना दिया जाए कि फ्रिज में खाने पीने की चीज़ों में भी उसका इख़्तियार नहीं तो फिर झगड़े नहीं होंगे तो और क्या होगा?

अब बीवी अपने ख़ाविंद के लिये तो हर कुर्बानी बर्दाश्त कर लेती है, लेकिन बेजा दूसरे बंदे का उसकी Personal life (ज़ाती ज़िंदगी) के अंदर इतना दख़ल अंदाज़ होना उसको भी बुरा लगता है। चुनांचे यह आपस में झगड़े की दूसरी वजह बन जाती है।

(3) बेटे की कमाई पर इस्तिहक़ाक़ः

तीसरी वजह यह होती है कि मां यह समझती है कि बेटा जो कमाई कर रहा है वह सारी की सारी मेरी है, बहू यह समझती है, मेरे मियां की कमाई है, इसमें मेरा भी हक़ है। चुनांचे यह आपस में एक दूसरे के साथ झगड़ा पैदा होने की तीसरी वजह होती है।

(4) बद एतिमादीः

फिर चौथी वजह सास के दिल में यह डरा और ख़तरा भी रहता है कि यह बहू हमारे घर की चीज़ें और पैसे अपने मैके न भेजे, अपनी बहन को, अपनी सहेलियों को न भेजे। चुनांचे इस पर भी शक की नज़र से उसको देखती है और कई दफ़ा इस पर तल्ख़ी भी हो जाती है।

(5) सास की तल्ख़ मिज़ाजीः

आपस की रंजिश की बुन्यादी वजह सास की तल्ख़ मिज़ाजी और बुढ़ापा होता है। वह अपनी जवानी की ज़िंदगी गुज़ार चुकी होती है और भूल जाती है कि आने वाली बच्ची, नौजवान है, उसने अपने मियां के साथ इब्तिदाई तौर पर ज़्यादा वक़्त गुज़ारना होता है। तो शादी के दिनों में जब मियां बीवी एक दूसरे के साथ ज़्यादा वक़्त गुज़ारते हैं तो मां समझती है कि मुझे तो Ignore (नज़र अंदाज़) ही किया जा रहा है, हालांकि इसमें नज़र अंदाज़ करने वाली कोई बात नहीं होती।

चुनांचे कई मर्तबा सास अपनी बेटे को कहती है कि तुम पहले रात को मेरे पासा आकर बैठा करो! और फिर रात को देर से उसे अपने कमरे में सोने के लिये जाने देती है, और सुब्ह भी बहुत जल्दी अपनी बहू को नाशता बनाने के नाम पर उसके कमरे से बुला लेती है। यह जो मियां बीवी की ज़िंदगी में दख़ल अंदाज़ी हो रही होती है यह भी आपस की टेन्शन का सबब बन जाती है।

यह वह वुजूहात हैं जो आम तौर पर सास की तरफ़ से होती है।

नंदों की तरफ़ से झगड़े के अस्बाब:

बअ़ज़ औक़ात नंदों की तरफ़ से भी इस लड़ाई झगड़े के अस्बाब होते हैं। इसकी बुन्यादी वजह यह होती है कि भाभी के आने से पहले नंदें अपने घर के अंदर बेटियां होती हैं, बेपरवाही की ज़िंदगी गुज़ारती हैं, कोई ऊंच नीच कर भी लें तो मां है, बाप है और भाई है, सब उसकी ग़लतियों को छिपाते हैं। उसकी कोताहियों से दरगुज़र करते हैं और उसके ऐबों पर सब के सब पर्दा डालते हैं। अब जब घर में एक जीता जागता इंसान और आ जाता है तो नंदें यह महसूस करती हैं कि हमारी हर बात को नोट किया जा रहा है, हम किससे फ़ोन पर बात कर रही हैं? किस का फ़ोन हमें आ रहा है? हम किस वक़्त कैसे कपड़े पहन रही हैं? कहां जा रही हैं? उन्हें यूं महसूस होता है कि हमारे ऊपर एक निगरान आंख आ गई है। एक वीडियों कैमरा हमारे ऊपर फ़िक्स हो चुका है लिहाज़ा वह अपनी आज़ादी के अंदर उसको एक पाबंदी समझती हैं। चुनांचे वह कोशिश करती हैं कि किसी न किसी हीले बहाने से अपनी भाभी को अपने दबाव में रखें, ताकि यह भाभी हमारी कोई बात देखे भी सही तो अपनी ज़बान को बंद रखे। यह बाहर हमारी कोताहियों को कहीं बता न दे। लिहाज़ा नंद, तीन काम करती है।

......सास को भड़काती है,

......भाई को बीवी के ख़िलाफ़ उक्साती है,

......और अपनी भाभी को दबाती है।

लिहाज़ा वह एक वक़्त में तीन काम कर रही होती है। और मियां बीवी के दर्मियान ग़लत फ़हमियां पैदा करने के

लिये Catalyst (अमल अंगेज़) का काम करती है। ऐसी बात कर देती है कि ख़ाविंद ख़्वाह मख़्वाह बीवी से नाराज़ होता है। ऐसी बात कर देती है कि उस आने वाली लड़की को भरी महफ़िल के अंदर शर्मिंदा होना पड़ता है। उसकी छोटी बातों को बड़ा बना कर पेश कर देती है, तो गोया मां बेटी का यह तआवुन उस बहू के ख़िलाफ़ एक महाज़ बन जाता है। और बहू को यूं नज़र आता है कि अब मेरी नजात इस घर से बाहर जाने में है। चुनांचे वह अपने ख़ाविंद से कहना शुरू कर देती है कि या तो मुझे अलग घर लेकर दो या फिर मुझे मैके छोड़कर आओ! अब ख़ाविंद दर्मियान में सेंडविच बन जाता है। एक तरफ़ मां और बहन और दूसरी तरफ़ बीवी। जब बीवी की तरफ़ देखता है कि यह मुहब्बत करने वाली है, नेक नमाज़ी है, खूबसूरत भी है, घर बसाना भी चाहती है, मैं इसके पास आता हूं तो मुझे मुहब्बतें भी देती है, तो ख़ाविंद का जी चाहता है कि मैं अपनी बीवी को जितना ख़ुश रख सकता हूं उसे ख़ुश रखूंगा, मगर दूसरी तरफ़ उसकी मां और बहन मिलकर उसकी बीवी की तरफ़ से अजीब व ग़रीब रिपोर्टें देती हैं। न उसको पकाना आता है, न घर की सफ़ाई करनी आती है, पता नहीं मां बाप ने कैसे उसको पाल कर बड़ा किया, कहां से यह गंवार उठकर आ गई? न उसे इसे बात का पता न उस बात का पता। तो यह एक अजीब सी Situation (सूरते हाल) घर के अंदर पैदा हो जाती है।

बहू की तरफ़ से झगड़े के अस्बाब:

अब बहू की तरफ़ से झगड़े के अस्बाब क्या होते हैं? आम तौर पर जिस नौजवान लड़की की शादी होती है, देखा

यह गया है कि वह नातजुर्बाकार और भोली भाली सी लड़की होती है, उसको अज़्दवाजी ज़िंदगी के लड़ाई झगड़ों का ज़रा पता नहीं होता। वह मां की मुहब्बतों में पली, बाप की शफ़क़तें समेंटी, भाई की मुहब्बतें पाईं, इन मुहब्बतों के माहौल से निकल कर एक नए घर के अंदर आती है तो तवक़्क़ुआत यही रखती है कि जो मां मुहब्बतें देती थी, वही सास देगी, जो अब्बू मुहब्बत देते थे वह मुझे ससुर देंगे। और ख़ाविंद के बारे में तसव्वुर रखती है कि यह तो है ही मेरी ज़िंदगी का साथी। तो इसकी तवक़्क़ुआत ज़्यादा होती हैं। मगर इसको वहां आकर जो सूरते हाल नज़र आती है वह कई मर्तबा तवक़्क़ुआत के मुताबिक़ होती है और कई मर्तबा तवक़्क़ुआत के ख़िलाफ़ होती है। लिहाज़ा यह नातजुर्बाकार और भोली भाली लड़की नए घर में आकर बहुत सारी ग़लतियां करती है। खाने पकाने में इतनी महारत नहीं होती, मेहमान नवाज़ियों का इतना पता न हीं होता। मां बाप के घर में पढ़ने में लगी रहती है, अपने कामों में लगी रहती है, घर के कामों में इतना तआवुन नहीं किया होता, चुनांचे यहां आकर उसके लिये सूरते हाल सख़्त हो जाती है। और फिर उम्र भी छोटी होती है, उसको इतना पता नहीं होता कि मैं यहां आकर किस तरह अपने आपको बच बचा कर रखना है? यह भी नहीं समझती कि ख़ामोशी के कितने फ़ाएदे होते हैं? कोई न कोई बात कर देती है, फिर उसके एक एक लफ़्ज़ को पकड़ लिया जाता है और एक लफ़्ज़ को पकड़ कर उसके ऊपर पूरी दासतान बना दी जाती है। फिर उस बहू के ज़हन में यह बात भी होती है कि मेरी शादी हुई, निकाह हुआ, मैं बेटी की हैसियत से इस

घर में आई हूं, मैं इस घर में लौंडी बन कर तो नहीं आई, मैं कहीं भाग कर तो नहीं आई, तो वह तवक़्क़ोअ़ करती है कि इस घर में मुझे एक Respect (इज़्ज़त) मिलनी चाहिये। और ख़ाविंद के बारे में उसके ज़हन में भी होता है कि ख़ाविंद तो बस ऐसा हो कि मेरी हर बात पर आमीन कहने वाला हो। उसके दिल के अंदर यह ख़्वाहिश होती है कि इधर मेरी ज़बान से बात निकले और ख़ाविंद उस पर Yes (हां) कर दे। और बअ़ज़ औक़ात उस बहू के ज़हन में यह भी ख़तरा होता है या सहेलियों ने उसको ग़लत गाईड किया होता है कि अगर तुम सुसराल जाकर एक दफ़ा दब गई, तो सारी उम्र तुम्हें दबाकर ही रखेंगे। लिहाज़ा वह भी अपने हुक़ूक़ की जंग लड़ना शुरू कर देती है और छोटी छोटी बातों का अपने मैके में आकर तज़किरा करती है। कभी बहन के साथ, कभी मां के साथ। अब इधर बहन और मां उसको मशवरे देती हैं और वह फिर सुसराल में रीमोट कंट्रोल खोलने की तरह खेल खेल रही होती है। यह सब नापसंदीदा Situation (सूरते हाल) है।

अस्बाब का निचोड़......ख़ुद ग़र्ज़ी की जंग:

यूं लगता है कि इन तमाम वुजूहात को सामने रखें तो लुब्बे लुबाब यही नज़र आता है कि हर इंसान, घर का हर फ़र्द, अपनी ख़ुदग़र्ज़ी की जंग लड़ रहा है। सास को अपने मफ़ादात चाहियें, नंद को अपने चाहियें, बहू को अपने चाहियें और इस वजह से अब घर के अंदर लड़ाई की एक फ़ज़ा बन जाती है। एक दूसरे के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से रहने की तअ़लीम देने में कमी रह जाती है। अब यह ज़िम्मादारी तो

सुसर की भी होती है कि वह घर का बड़ा होता है। वह अपनी बीवी को भी समझता है, बेटी को भी समझता है। लिहाज़ा इस आने वाली लड़की को वहां एडजस्ट होने में उसको मोरल सपोर्ट दे। उसको back up (सहारा) दे, ताकि वह बच्ची महसूस करे कि मेरे सर के ऊपर कोई साया है, वह अपने आपको हवा में लटकता महसूस न करे कि मअ़लूम नहीं किस वक़्त सास मुझे अपने घर वापस ही भेज दे, अब कई मर्तबा सुसर साहब अपनी बीवी के सामने बात नहीं कर सकते और कई मर्तबा अपने बिज़नेस में इतने मसरूफ़ होते हैं कि वक़्त ही नहीं होता। मर्द के पास वक़्त न हो और औरतें घर में एक दूसरे के साथ को आप्रेट करें तो घर के अंदर लड़ाईयां नहीं होंगी तो और क्या होगा? हमें चाहिये कि हम एक दूसरे के साथ मुहब्बत और प्यार से रहने की तअ़लीम को आम करें।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फ़रमाया कि मेरी उम्मी के लोग नमाज़ और रोज़े की वजह से जन्नत में नहीं जाएंगे बल्कि एक दूसरे पर रहम करने की वजह से जन्नत में ज़्यादा जाएंगे। तो एक दूसरे के साथ ईसार, रहम, मुहब्बत इन अक़्दार को घर के अंदर बढ़ाने की ज़रूरत होती है।

अस्बाब का सद्दे बाब

तो आईये! इन तमाम अस्बाब के इलाज क्या हैं, इन तमाम अस्बाब के हल क्या हैं? इस पर थोड़ी सी बात करते हैं। झगड़े तभी ख़त्म हो सकते हैं जब हर बंदा अपनी कुछ मख़्सूस ज़िम्मादारियों को ज़िम्मादारी से अदा करने की कोशिश

करे।

सास की ज़िम्मादारियां

सास अपने बड़े पन का सबूत दे:

सबसे पहले सास घर की मां है, बड़ी है, उसकी इज़्ज़त और एहतिराम है, बड़ों को बड़ा ही बन कर रहना चाहिये, अपनी ज़िम्मादारियों को पूरा करना चाहिये। तो सास को सबसे पहले यह समझना चाहिये कि आने वाली लड़की प्लास्टिक का खिलौना नहीं, जीता जागता इंसान है। मैंने खुद इसे पसंद किया, अपने बेटे के लिये लेकर आई, खुद चल कर गई थी। अब अगर यह आ गई है तो यह भी इंसान है, इसमें यक़ीनन खूबियां भी होंगी और ख़ामियां भी होंगी। तो मुझे जैसे इसकी खूबियों को क़बूल करना है इसकी ख़ामियों को भी क़बूल करना है और प्यार मुहब्बत से इसकी इस्लाह करनी है।

बहू और बेटी को बराबर समझे:

जैसे अपनी बेटी के अंदर ख़ामियां होती हैं तो मां सब्र के साथ इन ख़ामियों की इस्लाह में लगी रहती है तो फिर बहू के लिये क्यों यह समझती है कि एक दिन में यह ठीक हो जाए? बहू भी उसकी बेटी ही की हम उम्र है, उसकी बेटी ही की तरह है। जो रवय्या सास अपनी बेटी के साथ रखती है वही रवय्या अगर अपनी बहू के साथ रखे तो घर के झगड़े बिल्कुल ही ख़त्म हो जाएं। मुसीबत यहां यह होती है कि बेटी वही ग़लती करती है तो मां उस ग़लती को छुपाती फिरती है और अगर वही ग़लती बहू कर लेती है तो सास उस ग़लती को

बताती फिरती है। तो इब्तिदाई दिनों मे उस आने वाली बच्ची को ग़लतियों से कुछ दरगुज़र करना चाहिये।

सास की बुन्यादी ग़लती:

और इसमें एक ग़लती सास की यह भी होती है कि आम तौर पर उसने बहू का जो इंतिख़ाब किया होता है तो फ़क़त उसकी शक्ल की ख़ूबसूरती को देख कर किया होता है। यह ज़हन में रखें कि सिर्फ़ वलीमा के दिन लड़की की शक्ल को देखा जाता है, बाक़ी पूरी ज़िंदगी उसकी अक़्ल हो देखा जाता है। तो जो चीज़ पूरी ज़िंदगी देखी जानी थी उस पर तवज्जोह नहीं देती और शक्ल की हूर परी ढूंढ कर अपने घर ले आती है। न तअ़लीम देखी न उसके अख़्लाक़ देखे, तो इस वजह से फिर मुसीबत पड़ जाती है।

बहू की ग़लतियों पर दरगुज़र करे:

तो सास की यह ज़िम्मादारी है कि वह इब्तिदाई चंद दिनों में बहू को घर के अंदर, अपने आपको एडजस्ट होने का मौक़ा दे। उसकी ग़लतियों से दरगुज़ार करे, नई जगह पर इंसान बअ़ज़ चीज़ों को नज़रअंदाज़ कर जाता है, बअ़ज़ कामों को भूल जाता है तो बहू से इस क़िस्म की ग़लतियां होना, कोई अनोखी बात नहीं। लिहाज़ा उसे चाहिये कि इब्तिदा में अगर लड़की ग़लतियां भी करे तो उससे दरगुज़ार से काम ले। और यही समझे कि हां चंद दिनों के बाद जब यह घर में सेट हो जाएगी तो मैं इस लड़की को समझा लूंगी।

बहू को ख़ुशी से घर की ज़िम्मादारी दे:

घर के कामकाज में बहू को हंसी ख़ुशी ज़िम्मादारी दे। मिसाल के तौर पर: खाना पकाना है तो यह ज़रूरी तो नहीं

कि हर रोज़ सास से ही सारा कुछ पूछ के पकाया जाएगा। कभी सास यूं भी कह दे कि बेटा अपनी मर्ज़ी का खाना पका लो! तो लड़की को थोड़ा सा इख़्तियार मिलेगा तो उसका दिल खुश होगा। तो यह ज़िम्मादारी सास की बनती है कि वह आने वाली लड़की को हंसी खुशी ज़िम्मादारी सौंपे। और साथ यह भी सोचे कि जब मैं बहू बन कर आई थी तो उस वक़्त मेरे जज़्बात क्या थे? और मैं भी तो अपनी सास के बारे में यह सोचा करती थी कि ज़रा ज़िम्मादारी मेरे ऊपर डाल कर तो देखिये, मुझे काम देकर देखें, मैं कैसे नहीं काम करती? मैं भी हर बात पर तन्क़ीद को नापसंद करती थी, ज़रा ज़रा सी बात पर नुक्ता चीनी से मेरा दम घुटता था। आज जब मैं अपनी बहू की सास बन गई हों तो मैं अपनी बहू के साथ वही सुलूक क्यों रखूं?

हर वक़्त की तन्क़ीद से गुरेज़ करे:

नियत हमेशा अच्छी रखे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त नियत की वजह से घर का माहौल अच्छा कर देते हैं। हर बात पर बहू को काटने न दौड़े। अगर इसके बुरे काम पर तन्क़ीद करती है तो उसके अच्छे काम पर तअ़रीफ़ भी किया करे। यह तो कोई बात न हुई कि ग़लती पर उसकी मिट्टी पलीद कर दी और अच्छे काम को ऐसे नज़र अंदाज़ किया जैसे उसने किया ही नहीं। यही वजह कि कभी बहन की बेटी को बहू बना कर लाई, कभी भाई की बेटी को बहू बना कर लाई, इतनी क़रीबी रिशतादारियां होती हैं लेकिन जैसे ही वह लड़की घर आती है, उसके साथ झगड़े वाला मस्ला शुरू हो जाता है। तो किसी दिल जले शाइर ने उस पर एक शेअ़र बनाया।

जब तक बहू कुंवारी सास गई वारी
बहू का आया डोला सास को लगा गोला

अपनी भतीजी को, अपनी भांजी को, अपनी क़रीबी सहेली की बेटी को लेकर आती है और जैसे ही वह बच्ची घर में क़दम रखती है बस उसकी ग़लतियां देखना शुरू कर देती है। तो सास को चाहिये कि वह इस मौक़ा पर अपने बड़े पन का सुबूत दे और उस बच्ची का एडजस्ट होने के लिये हर मुम्किन तआ़वुन करे। अगर अपनी बेटी भी उसकी शिकायत करे तो बेटी को समझा बुझा ले, डांट डपट कर ले, मगर घर के अंदर ख़्वाह मख़्वाह माहौल को Pollute (आलूदा) न होने दे।

बहू की ज़िम्मादारियां

यह तो ज़िम्मादारी थी सास की। बहू की भी ज़िम्मादारी होती है। उस आने वाली लड़की ने भी बहुत सारी बातों का ख़्याल रखना होता है। वह एक नए घर में आई है और उस नए घर में उसे अपनी हैसियत मनवाने के लिये यक़ीनन बहुत ज़्यादा मेहनत करनी पड़ेगी।

सास को अपनी दुश्मन न समझे!

बहू हमेशा एक मोटी सी बात यह सोचे कि सास अगर मेरी दुश्मन होती, तो मुझे अपने घर में लाती ही क्यों? जब उसने मुझे अपने बेटे के लिये पसंद किया और बहू बनाकर लाई यह इस बात की दलील है कि वह मेरी दुश्मन नहीं बल्कि मेरी मोहसिना है। इसका मेरे ऊपर एहसान है कि इतना अच्छा बेटा, ज़िम्मादार और समझदार, इसके लिये उसने मुझे बीवी के तौर पर मुंतख़ब किया। अगर वह न कर देती

तो यह रिशता न हो सकता, अगर यह रिशता हुआ है तो इसमें सास का मेरे ऊपर एहसान है। जब बहू यह ज़हन लेकर आएगी कि सास मेरी मोहसिना है तो यक़ीनन वह घर में आकर उस सास को सास नहीं समझेगी बल्कि अपनी मां समझेगी। और मां के समझने से ही सारे झगड़े ख़त्म हो जाएंगे।

मां बेटे की मुहब्बत में कमी न आने दें:

फिर बहू को यह भी ज़हन में रखना चाहिये कि मेरे आने से पहले यह हंसता बसता घर था, मां थी, बेटी थी, बेटा था, ख़ाविंद था, आपस में मुहब्बत प्यार से रह रह थे इस बेटे को मां ने मुहब्बतों से पाला, यह मां के साथ इतना ज़्यादा Attach (मानूस) था, अब मैं इस घर में नई आई हूं तो इस बेटे को अपनी मां से अलग नहीं करना, मुझे इस बेटे को अपनी मां से दूर नहीं करना, मेरे ख़ाविंद के लिये यह जन्नत है। इसके क़दमों में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मेरे ख़ाविंद के लिये जन्नत बनाई है। लिहाज़ा मैंने हमेशा इनको Respect (इज़्ज़त) देनी है और इनकी ख़िदमत को मुझे अपने लिये सआ़दत समझनी है। जब बहू यह समझेगी तो यक़ीनन वह मां बेटे की मुहब्बत में कील नहीं ठोंकेगी। वह बूढ़ी सास को सताएगी नहीं।

बल्कि अगर ख़ाविंद उसके साथ बहुत ज़्यादा वक़्त गुज़ारे और अपनी मां और बहन को बहुत ही छोड़े रहे तो बहू को यह चाहिये कि अपने ख़ाविंद को समझाए कि अपने मां बाप को Ignore (नज़रअंदाज़) करना अच्छा नहीं होता। अगर उसका सगा भाई अपने मां बाप से लापरवाही बरतता तो

उसको कितना बुरा लगता, अब उसका ख़ाविंद अगर मां बाप को Ignore (नज़रअंदाज़) कर रहा है तो फिर उसको क्यों अच्छा लगता है? तो बीवी को चाहिये कि वह भी यह बात समझाए, ताकि उसका ख़ाविंद अपने मां बाप के साथ वही मुहब्बतें रखे जो शादी से पहले थीं।

सास से लापरवाही न बरतेः

कई जगहों पर देखा? सास बूढ़ी है, नंद घर में नहीं, तो फिर बहू घर में आते ही शेरनी बन जाती है और सास को Ignore (नज़रअंदाज़) करना शुरू कर देती है।

कई जगहों पर हमें यह ख़बर मिली कि सास को अपने वक़्त पर खाना भी नहीं दिया जाता। बस ख़ाविंद को क़ाबू कर लेती हैं और इसके बाद सास को एक बुढ़िया समझकर कमरे के एक कोने में पड़ी रहने देती हैं। यह चीज़ इंतिहाई बुरी है, शरीअ़त ने सास और सुसर को मां और बाप का दर्जा दिया है। आने वाली बहू यह सोचे कि अगर इस बूढ़ी औरत की मैं ख़िदमत करूंगी तो मैं अपने ख़ाविंद को भी राज़ी करूंगी अपने ख़ुदा को भी राज़ी करूंगी। अब इसके लिये अपनी सास की ख़िदमत कोई मुश्किल काम नहीं होगा।

सास का दिल ख़ुश करने की कोशिश करेः

बहू को चाहिये कि ऐसे मवाक़ेअ़ तलाश करे कि वह अपनी सास का दिल ख़ुश कर सके। बअ़ज़ काम बहुत छोटे होते हैं लेकिन अगर किसी को Personal attention (ज़ाती तवज्जोह) दी जाए तो दूसरे बंदे के दिल में जगह बन जाती है। मिसाल के तौर परः अगर सास कोई मेडीसिन इस्तेमाल करती है तो वक़्त के ऊपर उसको मेडीसिन दे देना,

एहतियाती खाना खाती है तो वह बनाकर दे देना, वज़ू का पानी गर्म करके दे देना, मुसल्ला बिछा कर दे देना, यह उनके छोटे छोटे काम होंगे लेकिन जब बहू इन कामों को करेगी तो वह समझेगी कि यह बहू नहीं, मेरे घर की बेटी है तो यक़ीनन सास का रवय्या बहू के साथ मां जैसे हो जाएगा। यह बहू की ज़िम्मादारी होती है कि नए घर में जाकर सास के दिल में अपनी जगह बनाए। बअ़ज़ औक़ात छोटे छोटे कामों से इंसान दूसरे का दिल मोह लेता है। चुनांचे ऐसे मवाक़ेअ़ को तलाश करना चाहिये कि जिससे उन्हें यह महसूस हो कि यह बेटी बन कर उनकी ज़ाती ख़िदमत को भी अपनी सआ़दत समझती है।

सास के तजुर्बात से फ़ाएदा उठाए:

बल्कि बहू को चाहिये कि कोई भी काम करना हो तो सास के तजुर्बा से फ़ाएदा उठाए बल्कि उससे मशवरा कर लिया करे। यह सोचे कि अगर मैं अपनी इस अम्मी से पूछ कर, मशवरा करके काम करूंगी तो यक़ीनन मैं ग़लतियां कम करूंगी। जब बग़ैर मशवरा के काम करूंगी तो कोताहियां ज़्यादा करूंगी। लिहाज़ा सास के मशवरा से काम करना चाहिये, उसके तजुर्बा से फ़ाएदा उठाना चाहिये बल्कि उसके तब्सिरा से सबक़ सीखना चाहिये कि मैंने ऐसे पकाया और दस्तरख़्वान लगाया, और मेरी सास ने ऐसे कहा तो अच्छा! मैंने आज के बाद ऐसे नहीं करना।

सास को हराना मां को हराने के बराबर समझे:

और एक बड़ी अहम बात यह कि अगर खींचा तानी का माहौल बन गया और यह बहू जीत भी गई तो यह यही समझे

कि मैं अपनी मां को हरा चुकी हूं। जब बहू ने यह ज़हन में रखा कि इस खींचा तानी में सास को हराने का मतलब यह है कि मैंने अपनी मां को हरा दिया तो फिर उसकी अक़्ल ठिकाने रहेगी और इस खींचा तानी के माहौल को नहीं बनने देगी।

ख़ाविंद से सास नंद की बुराईयां हरगिज़ न करेः

चुग़ल ख़ोरी से बचे। ख़ाविंद के सामने उसकी मां और बहन की चुग़लियां करना, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां इंतिहाई नापसंदीदा काम है। अगर वह घर के अंदर कोई कमी, कोताही देखे भी सही तो ख़ाविंद के सामने सास और नंद की बुराईयां न करे। उसको यह न बताए कि आपको क्या पता कि आपकी बहन क्या है? क्या करती है? भाई के ज़हन में बहन के बारे में कोई इस क़िस्म की बात बिठाना और इसका तअस्सुर ख़राब करना, उसके किसी सरीह गुनाह को इस तरह पेश कर देना कि भाई के दिल से बहन की मुहब्बत ही निकल जाए, शरअ़न यह भी जाइज़ नहीं। अगर यह उस घर में कोई कोताहियां देखती है तो बहू को चाहिये कि यह भी दिल बड़ा करे, न मैके में बताए न अपने ख़ाविंद को बताए। थोड़े ही दिनों में जब यह अपने घर में Adjust (सेट) हो जाएगी तो फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसे मौक़ा देंगे, यह माहौल को भी अच्छा बना लेगी और यह घर के लोगों के दिलों में अपना मक़ाम भी पैदा कर लेगी। चुनांचे उसको चाहिये कि इब्तिदाई दिनों में ख़ामोश रहे, बस जो देखे अपनी ज़बान को बंद रखे। यह बात सौ फ़ीसद सच्ची है कि गूंगी और बहरी बहू से कोई भी लड़ाई नहीं करता, हर कोई अपने

आपको अम्न में समझता है। तो इस बच्ची को भी चाहिये कि इब्तिदाई चंद दिनों में गूंगा और बहरा बन कर गुज़ार ले ताकि दूसरे बंदे उसके क़रीब हो सकें।

ख़ाविंद से अलग मकान का मुतालबा न करे:

ख़ाविंद को हरगिज़ यह न कहे कि मुझे अलग मकान चाहिये या यह कि मुझे मैके छोड़कर आओ! अपनी तरफ़ से कोशिश यही करे कि मैंने इस आबाद घर को आबाद रखना है......हां वक़्त के साथ साथ अल्लाह का बनाया हुआ एक निज़ाम है, एक बच्चे की शादी होती है, फिर दूसरे बच्चे की होती है......एक बच्चे का अलग घर बनता है, फिर दूसरे का अलग घर बनता है। तो आने वाले वक़्त में अलग घर तो हर एक का बनना ही होता है। और नहीं तो सास बूढ़ी होती है जब वह क़ब्र का कोना जाकर आबाद करती है तो बहू का वैसे ही अलग घर बन जाता है। तो इस बारे में बहू को इतना परेशान होने की ज़रूरत नहीं। यही समझे कि जितना ख़िदमत का मौक़ा अल्लाह ने मुझे दिया मैं इस सआ़दत से अपने आपको क्यों महरूम होने दूं? तो इस तरह घर के लड़ाई झगड़े ख़त्म हो जाएंगे।

ख़ाविंद से झगड़ा न करे:

कई दफ़ा ऐसा होता है कि सास की वजह से या नंद की वजह से बहू तंग होती है तो वह अपने ख़ाविंद को शिकायत लगाती है और ख़ाविंद कहता है, कि अच्छा ठीक है कोई न कोई बंदोबस्त करेंगे। मगर यह अपने ख़ाविंद के साथ भी उलझना शुरू हो जाती है। ख़ाविंद के साथ झगड़ा करना, बीवी की ज़िंदगी की सबसे बड़ी ग़लती होती है। इससे बड़ी

ग़लती बीवी अपनी ज़िंदगी में नहीं कर सकती कि जो उसके सर का साया है, सपोर्ट है, उसकी तक़वियत का सबब है, उसकी इज़्ज़त का निगरान है, उसी बंदे के साथ झगड़ा शुरू कर दे।

तो बहू की कोताहियों में से यह एक बड़ी कोताही होती है कि मुआमलात तो सास और नंद ख़राब कर रहे हैं और यह अपने ख़ाविंद के साथ मुंह बसोर के और रूठ के बैठ जाती है। अब ख़ाविंद इब्तिदाई शादी के दिनों में मुहब्बत प्यार के मूड में होता है और बीवी साहिबा ने शक्ल बनाई होती है। तो उल्टा ख़ाविंद के दिल में भी यह अपने लिये जगह कम कर बैठती है। यह ग़लती भी हरगिज़ नहीं करनी चाहिये।

तन्क़ीद को सब्र से बर्दाश्त करें:

बहू को यह भी सोचना चाहिये कि मैं इस घर में नई आई हूं और हर नई चीज़ को आज़माया और परखा जाता है। यही बहू अपने लिये सोने का ज़ेवर ख़रीदती है तो कितना परखती है। तो घर में एक नया इंसान आया है तो हर बंदा उसको देखेगा, जांचेगा कि यह कैसे बैठता उठता है? कैसे बोलता है? कैसे उसकी ज़िंदगी के शब व रोज़ हैं। तो वह इस बात को समझे कि शादी के इब्तिदाई दिनों में मुझे किस नज़र से देखा जाएगा? और अगर कोई बात घर के लोग मेरे बारे में कर देते हैं तो यह ग़लतफ़हमी होती है।

फिर यह भी समझे कि सास उम्र में ज़्यादा है और जितनी उम्र ज़्यादा होती है उतना ही बंदे के अंदर तन्क़ीद का माद्दा भी ज़्यादा हो जाता है और चिड़चिड़ापन भी ज़्यादा हो जाता है, लिहाज़ा इस चिड़चिड़े पन को उम्र का तक़ाज़ा समझे। यह

भी सोचे कि घर में जब मैं ग़लती करती थी तो कई मर्तबा मेरी अम्मी मुझे थप्पड़ भी लगा देती थी तो मैं बर्दाश्त करती थी? तो अगर सगी मां का थप्पड़ भी बर्दाश्त कर लेती थी तो क्या सास का समझाना बर्दाश्त नहीं कर सकती। सास के समझाने पर भी उसको गुस्सा आ जाता है तो यह भी एक कोताही होती है।

शौहर के माल पर फ़क़त हक़ न जताए:

कई मर्तबा बहू यह समझती है कि ख़ाविंद जो कमा रहा है वह तो बहैसियत बीवी मेरा हक़ है। अब यह मां, बाप और बहनें सब का उसके कंधों पर क्यों बोझ पड़ गया? तो इस मियां के कंधों पे यह बोझ पहले से था, अब तो नहीं पड़ा। यह आने वाली लड़की की ग़लत बात होती है कि वह अपने ख़ाविंद के मां बाप को उसके सर का बोझ समझे। यह वह रिश्ते नाते हैं जिनको निभाना होता है। शादी के बाद यह तो नहीं हो जाता कि बंदा मां को भूल जाए, बहन को भूल जाए, बाप को भूल जाए, तो लड़की यह ग़लती कभी भी न करे कि अपने घर के उन अफ़राद को अपने ख़ाविंद के सर का बोझ समझे।

सुसराल में मैके के फ़ज़ाइल न बयान करती रहे:

यह भी झगड़े की बुन्याद होती है कि सुसराल के घर में कोई बात देखी, फ़ौरन कह उठेगी मेरे अम्मी अब्बू के घर में तो ऐसे नहीं होता था, हमारे घर में तो ऐसा होता था। वह तो होता था, अब आप सुसराल में आ चुकी हैं। सुसराल में आकर बहू यह सोचे कि यहां की महफ़िलों में मैके के फ़ज़ाइल बयान करना शरीअ़त ने फ़र्ज़ क़रार नहीं दिया। अब

तो आपका घर यह है। तो बहू की ग़लतियों में से एक बड़ी ग़लती यह भी है कि वह सुसराल में बैठ कर दिन रात अपने मैके के फ़ज़ाइल बयान करती है। जो फिर झगड़े का सबब बन जाते हैं। जो उसका नसीब था वह उसे मिल गया। अमीर घर की बेटी थी, अब जहां आ गई है वहां अपने आपको एडजस्ट करने की कोशिश करे।

सुसराल की ख़ुशी ग़मी में बराबर की शरीक हो:

फिर एक ग़लती यह भी करती है कि सुसराल के घर में जो ख़ुशी और ग़मी होती है उसमें बराबर की शरीक नहीं होती, पीछे पीछे रहती है। तो जब उनकी ख़ुशी और ग़मी में बराबर की शरीक नहीं होगी तो साफ़ ज़ाहिर है कि फिर उनको आप पर एतिराज़ का मौक़ा मिलेगा।

दूसरों की टोह में न रहे:

नए घर में आकर लोगों के हालात की टोह में लगे रहना, तजस्सुस में रहना कि मेरी नंद कहां से आती है? कहां जाती है? किस के फ़ोन आते हैं? किसी से इस का तअ़ल्लुक़ तो नहीं? नंदें कैसे कैसे कपड़े पहनती हैं? मेरी सास क्या करती है? मेरा सुसर क्या करता है? सास और सुसर के दर्मियान झगड़े तो नहीं? इस क़िस्म की टोह में आते ही लग जाना, इंतिहाई बुरा काम होता है। यह शरअ़न हराम है। शरीअ़त ने फ़रमाया:

وَلَا تَجَسَّسُوْا

(तजस्सुस में न पड़ो।)

दूसरों के मुआमलात में टांग अड़ाना यह अक़्लमंदी नहीं होती अपने काम से काम रखे। "तुझ को पराई क्या पड़ी

अपनी नबेड़ तू"

और कई दफ़ा यह ग़लती भी देखी कि अगर उनको नंद वग़ैरा की कुछ ऊंच नीच मअ़लूम हो जाती है तो फिर अपने मैके फ़ोन करके फ़ौरन पैग़ाम पहुंचाती हैं। बल्कि कई मर्तबा अपनी नाराज़गी का बदला इसी तरह लेती हैं। मिसाल के तौर पर नंद से रंजिश थी, अब उसके रिशता की बात जो चली, तो जो रिशता वाले आते हैं उनकी औरतों को फ़ोन करके उसके बारे में बता देती है कि वह तो बहुत ही निखट्टू है, बहुत ही काम चोर है, बहुत ही ज़िद्दी है, उसको तो काम ही करना नहीं आता। या इससे भी बड़ी बात कर दी कि मुझे तो लगता है कि उसके किसी न किसी के साथ अफ़ेयर्ज़ हैं। अब इस तरह की बातें करके नंद के मुस्तक़बिल को ख़राब करना और उससे बदला लेना, इससे बड़ी नालाइक़ी और क्या हो सकती है? अगर बहू घर में रह कर ऐसा काम करेगी तो यक़ीनन अपना घर बर्बाद करने वाली बात करेगी। दूसरों के हालात की टोह में रहना और दूसरों के सामने उनके ऐबों को खोलना, शरीअ़त ने इस चीज़ से मना कर दिया है।

दूसरों पर रोअ़ब चलाने की बजाए दिल जीतने की कोशिश करें:

कई दफ़ा यह भी देखा कि बहू जब घर में आती है तो यह समझती है कि मैं तो बड़े भाई की बीवी हूं लिहाज़ा अब यह मेरी नंनद जो है यह तो मेरी ख़ादिमा है, इस पर रोअ़ब चलाती है। नंद पर रोअ़ब चलाने से पहले उसके दिल को जीतना इंतिहाई ज़रूरी होता है।

बस यह हर एक के साथ मुहब्बत प्यार का तअ़ल्लुक़ रखे और अपने ख़ाविंद को पुरसुकून ज़िंदगी दे। बहू को यह बात सोचनी चाहिये कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुर्आन पाक में शादी करने का बुन्यादी मक़्सद फ़रमाया (لتسكنوا اليها) "ताकि तुम्हें अपनी बीवियों से सुकून मिले"। तो जो बीवी अपने ख़ाविंद को सुकून दे ही नहीं सकती वह अपनी ज़िम्मादारी पूरी नहीं कर रही। तो अपने मियां को झगड़ों में उलझा लेना, हर वक़्त उसके सामने यही बातें छेड़ कर बैठ जाना, इंतिहाई नालाइक़ी होती है।

बीवी को चाहिये कि अपने ख़ाविंद को ऐसा पुरसुकून माहौल दे कि दफ़्तर और दुकान पर बैठे हुए भी उसका जी चाहे कि मैं अभी अपने घर चला जाऊं। यह न हो कि दफ़्तर में बैठा हुआ एक के बाद दूसरी फ़ाइल खोल रहा हो और काम करने वाले लोग भी परेशान कि आज साहब घर ही नही जा रहे। और कोई पूछे कि जी घर क्यों नहीं जाते? तो मियां बताएः कि वहां जाकर जो होना है उसका मुझे पता है, मैं चाहता हूं कि कुछ वक़्त और यहां गुज़र जाए तो अच्छा है। तो घर के माहौल को ऐसा भी नहीं बनाना चाहिये कि ख़ाविंद घर में आकर उल्टा परेशान हो जाए।

रोज़े महशर लोग अपने गुनाहों के मुताबिक़ उठेंगेः

क़यामत के दिन लोग अपने अपने गुनाहों की शक्ल में उठाए जाएंगे। हदीस पाक में आता है कि जो बंदा नाइंसाफ़ी करने वाला होगा, अल्लाह तआ़ला उसको फालिज ज़दा शख़्स की सूरत में क़यामत के दिन खड़ा करेंगे। जो मख़्लूक़ से सवाल करता होगा अल्लाह तआला उसको ऐसा बनाएंगे कि

उसके चेहरे के ऊपर हड्डियां होंगी गोश्त होगा, ही नहीं। दूर से पता चलेगा कि यह अल्लाह के दर को छोड़ कर मख़्लूक़ से मांगने वाला है। अल्लाह तआला ने उसके चेहरे की इस रअनाई को ख़त्म कर दिया है।

जो दुन्या में तकब्बुर के बोल बोलने वाला होगा अल्लाह तआला उसको क़्यामत के दिन च्यूंटी जैसा सर अता करेंगे, दूसरे लोग उसके ऊपर अपने पांव रख कर जाएंगे। अल्लाह तआला उनको मख़्लूक़ के पांव में मसल कर उनको बताएंगे कि तुम्हारे तकब्बुर का हमने तुम्हें यह बदला दिया। जो लोग दुन्या में झूट बोलते होंगे क़्यामत के दिन उनकी ज़बान ऊंट की तरह लम्बी होगी और लटकी हुई होगी। जो गुनाहों भरी ज़िंदगी गुज़ारेंगे उनके चेहरे सियाह होंगे। जो नेकूकार होंगे उनके चेहरे चमकते हुए होंगे। जो शख़्स दूसरों की ग़ीबत करता होगा, उसके लम्बे नाखुन होंगे और क़्यामत के दिन अपने चेहरे की ख़ारिश कर रहा होगा, इतना ख़ारिश करेगा कि साथ चुग़लख़ोरी का मुआमला करता होगा तो क़्यामत के दिन अल्लाह तआला ऐसा खड़ा करेंगे कि उसके एक की जगह, दो चेहरे होंगे। तो जैसा हम दुन्या में करेंगे वैसा क़्यामत के दिन पाएंगे। तो इसलिये हमें चाहिये कि हम शरीअ़त और सुन्नत के अहकाम को सामने रखें और घर के अंदर मुहब्बत सुकून की ज़िंदगी गुज़ारने की कोशिश करें।

लड़की की ज़िंदगी की असाइन्मेंटः

अच्छी बहू वह होती है कि मैके वाले भी उसकी तअ़रीफ़ करें, सुसराल वाले भी उसकी तअ़रीफ़ करें। बच्ची को यह समझना चाहिये कि यह मेरे लिये Assignment (मशक़) है।

मैं मेके में ऐसी ज़िंदगी गुज़ारूं कि जब मेरी शादी हो तो मैके वालों में, मेरी मां बहन की ज़बान से मेरी तअ़रीफ़ों के पुल बंध रहे हों और जब मैं सुसराल में जाऊं तो मैं ऐसे बन कर रहूं कि मेरे सास और नंद की ज़बान से मेरी तअ़रीफ़ें हो रही हों। यह बच्ची की ज़िंदगी की असाइन्मेंट होती है। जब वह यह ज़िम्मादारी लेकर जाएगी और चाहेगी कि मेरी तअ़रीफ़ें उनकी ज़बान से हों तो यक़ीनन वह उनके साथ मुहब्बत प्यार से रहेगी। झगड़े और फ़साद की बजाए घरों के अंदर मुहब्बतें होंगी, उलफ़तें होंगी। दुन्या की ज़िंदगी भी अच्छी गुज़रेगी। यह छोटा सा घर इंसान की छोटी सी जन्नत बन जाएगा और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त भी खुश होंगे। इसको कहते हैं: "हम खुर्मा वहम सवाब" कि इंसान ने दुन्या में भी पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ारी, मुहब्बतों और चाहतों की ज़िंदगी गुज़ारी और इसके बदले में अल्लाह तआला ने उसकी आख़िरत को भी बना दिया। लिहाज़ा सुसराल के झगड़ों में सास, मां बन कर रहे और बहू यह सोचे कि अब जो मुहब्बत मुझे सास से मिल सकती है वह मुहब्बत मुझे किसी और से नहीं मिल सकती। जब इस तरह दोनों एक दूसरे के क़रीब आएंगी तो घर के झगड़े बिल्कुल ही ख़त्म हो जाएंगे।

सबक़ आमोज़ वाक़िआ:

इब्ने क़य्यिम रह0 ने एक अजीब वाक़िआ लिखा है, फ़रमाते हैं कि मैं एक दफ़ा एक गली से गुज़र रहा था। मैंने एक घर का दरवाज़ा खुला देखा, एक मां अपने बेटे से नाराज़ हो रही थी, उसे डांट रही थी। कह रही थी कि तू निखट्टू है, ज़िद्दी है, कोई काम नहीं करता, बिल्कुल बात नहीं मानता,

काम चोर बन गया है, अगर तूने मेरी बात नहीं मानी तू इस घर से दफ़ा हो जा। यह कहकर मां ने जो उसको धक्का दिया तो वह बच्चा दरवाज़े से बाहर गिरा। मां ने गुस्से से अपने दरवाज़े को बंद कर लिया। फ़रमाते हैं: मैं भी उस बच्चे को देखने लगा! वह रो रहा था, उसे मार पड़ी थी, झिड़कियां पड़ी थीं, फिर थोड़ी देर में उसने गली के एक तरफ़ को जाना शुरू किया। आहिस्ता आहिस्ता क़दमों से चल रहा था, कुछ सोच भी रहा था। जब वह गली के मोड़ तक पहुंचा तो मैंने देखा कि वह कुछ सोचता रहा और फिर उसने वापस आना शुरू किया। हत्ता कि अपने ही घर के दरवाज़े पर आकर वह बैठ गया। थोड़ी देर के लिये उसे नींद आ गई। कुछ देर के बाद वालिदा ने किसी काम के लिये दरवाज़ा खोला तो देखा, अभी दरवाज़े ही पर मौजूद था। मां का गुस्सा कम नहीं हुआ था, उसने फिर डांटना शुरू कर दिया। जाते क्यों नहीं? तुमने मेरा दिल जलाया है, काम बिल्कुल नहीं करते। जब मां ने फिर डांट डपट शुरू कर दी, बच्चे की आंखों में आंसू आ गए कहने लगा: अम्मी! जब आपने मुझे घर से धक्का दे दिया था, मैंने सोचा था कि मैं यहां से चला जाता हूं, मैं किसी का नौकर बनकर रह जाऊंगा, कोई मुझे खाना दे देगा, लिहाफ़ दे देगा, रहने की जगह दे देगा। मैंने सोचा था कि मैं बाज़ार में जाकर भीग मांग लेता हूं, मुझे यह सब चीज़ें मिल जाएंगी और मैं गली के मोड़ पर भी चला गया था लेकिन वहां जाकर मेरे दिल में ख़्याल आया कि मुझे खाना भी मिलेगा, कपड़े भी मिलेंगे, रहने की जगह भी मिल जाएगी लेकिन अम्मी जो प्यार मुझे आप देती हैं मैंने सोचा यह प्यार मुझे दुन्या में कोई नहीं

देगा। यह सोचकर मैं वापस आ गया हूं। अम्मी तू मुझे मारे भी तो मैं तेरा ही बेटा, घर में रखे तो भी तेरा ही बेटा। जब बच्चे ने यह बात की मां की मामता जोश में आ गई, उसने बच्चे को अपने सीने से लगा लिया, माथे का बोसा दिया कि बेटा तुम अगर यह समझते हो कि जो मुहब्बत तुम्हें मैं दे सकती हूं वह तुम्हें और कोई नहीं दे सकता तो आओ मेरे घर में ज़िंदगी गुज़ारो।

इमाम इब्ने क़य्यिम रह0 फ़रमाते हैं कि जब इसी तरह इंसान यह सोचे कि मुझे दूसरे मुहब्बतें देंगे तो फिर उनके दिल में भई इंसान की क़द्र होती है। इस वाक़िआ को ज़हन में रखकर बहू यह सोचे कि इस घर के अंदर (जहां मैं अपने ख़ाविंद के घर में आई हूं) जो मुहब्बतें मुझे सास दे सकती है वह मुहब्बतें मुझे कोई नहीं दे सकता। जब इस तरह वह घर में आकर रहेगी तो यक़ीनन उसको मां समझेगी, उसकी ख़िदमत करेगी और फिर सास भी उसको अपनी बेटी समझेगी। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त घरों के इन झगड़ों से हमें महफ़ूज़ फ़रमा ले और इस फ़साद के अज़ाब से अल्लाह हमें महफ़ूज़ फ़रमाकर पुरसुकून ज़िंदगी नसीब फ़रमाए ताकि दुन्या में भी हम अल्लाह के नेक बंदे बन कर ज़िंदगी गुज़ार सकें और आख़िरत में भी अल्लाह के पास जाकर हम सुरख़ुरू हो सकें। दुआ है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस बयान के अंदर जो बातें कही गई उसके मुताबिक़ हमें अपनी ज़िंदगियां ढालने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अब यह नहीं होना चाहिये कि सास, बहू की ज़िम्मादारियां याद कर ले और सोचे कि उसे यूं करना चाहिये, यूं करना

चाहिये था। और बहू, सास की ज़िम्मादारियां याद कर ले और घरों में जाकर फिर झगड़ा शुरू कर दें, आप यह नहीं करतीं आप यह नहीं करतीं। बल्कि हक़ बनता है कि सास अपनी ज़िम्मादारियों को याद कर ले कि मुझे यह करना है, नंद अपनी ज़िम्मादारियां और बहू अपनी ज़िम्मादारियां याद करे कि मुझे यह करना है। तमाम ख़्वातीन अपनी ज़िम्मादारियों को पूरा करने की कोशिश करें। जब आप वह करेंगी तो आप कर सकती हैं देख लेना अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फिर वह कर देंगे जो अल्लाह के इख़्तियार में है। अल्लाह दूसरों के दिलों में आपकी मुहब्बतें डाल देंगे। घर के झगड़ों से अल्लाह नजात अता फ़रमाएंगे। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें इन झगड़ों के अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमा कर हमें उलफ़त व मुहब्बत की ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

و آخر دعونا ان الحمد لله رب العٰلمين

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मियां बीवी के झगड़े

(बीवी की ज़िम्मादारिया)

अज़ इफ़ादात

पीरे तरीक़त रहबरे शरीअ़त मुफ़क्किरे इस्लाम
महबूबुल उलमा वस्सुलहा

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद
मुजद्दिदी नक्शबंदी मद्दज़िल्लुहू

मियां बीवी के झगड़े
(बीवी की ज़िम्मादारियां)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُوْنَ. وَسَلَامٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

मियां बीवी का तअ़ल्लुक़ घर की बुन्याद है:

हमारे घरों से, माहौल और मुआशरे से यह लड़ाई झगड़े कैसे ख़त्म हों, इस पर कई दिनों से बात चल रही है। इन लड़ाई झगड़ों में एक बड़ा रोल मियां बीवी के लड़ाई झगड़ों का होता है। मियां बीवी दोनों मिल कर एक घर बनते हैं, अगर उनके पास के दर्मियान भी लड़ाई झगड़े शुरू हो जाएं तो गोया यह घर के बे आबाद होने की निशानी होती है। मियां बीवी का तअ़ल्लुक कोई कच्चा धागा नहीं है एक गहरा रिशता है अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

وَاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا

और उन्होंने तुम से पक्का अहद लिया है।

इसलिये कुर्आन मजीद ने बीवी को करवट की साथी कहा है। यह ज़िंदगी भर का साथ होता है। मियां और बीवी दोनों को समझदारी से काम लेना चाहिये और मुहब्बत व प्यार की ज़िंदगी गुज़ार कर शैतान को इसमें दख़ल अंदाज़ी का मौका

ही नहीं देना चाहिये। ईंटें जुड़ती हैं तो मकान बन जाते हैं, दिल जुड़ते हैं तो घर आबाद हो जाते हैं। यह ज़िम्मादारी ख़ाविंद की भी होती है और बीवी की भी होती है कि दोनों एक दूसरे के साथ मुहब्बत और प्यार से काम लें।

यह उसूल याद रखें! जहां मुहब्बत मोटी होती है वहां ऐब पतले होते हैं और जहां मुहब्बत पतली होती है वहां ऐब मोटे होते हैं। इसलिये शरीअ़त ने निकाह के बाद मुहब्बत को अज्र और सवाब का ज़रीआ़ बताया है। चुनांचे मियां बीवी आपस में जितनी मुहब्बत करेंगे, जितना प्यार करेंगे उतना ही अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उनसे राज़ी होंगे। एक हदीसे मुबारका में आया है कि

"जब बीवी अपने ख़ाविंद को देखकर मुस्कुराती है और ख़ाविंद अपनी बीवी को देखकर मुस्कुराता है तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इन दोनों को देखकर मुस्कुराते हैं"

शादी का मक़सद

इशर्दि बारी तआ़ला है।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ.

अल्लाह तआला की निशानियों में से यह है कि उसने तुम में से तुम्हारे लिये जोड़ा बनाया, ताकि तुम उनसे सुकून हासिल कर सको। और तुम्हारे दर्मियान मुवद्दत व रहमत रख दी। बेशक इसमें निशानियां हैं अक़्ल वालों के लिये। (रूमः 21)

तो मअ़लूम हुआ कि शादी का मक़सद यह है कि सुकून

हासिल हो। और जहां आप देखें कि मियां बीवी की ज़िंदगी में सुकून नहीं हर वक़्त का झगड़ा और चीख़ चीख़ है, हर वक़्त जली कटी बातें एक दूसरे को करते रहते हैं। बहस मुबाहिसा में उलझे रहते हैं, समझ लें कि कहीं न कहीं दाल में काला है। बीवी की तरफ़ से कोताही है या मियां की तरफ़ से कोताही है और आम तौर पर हमारा तजुर्बा यही है कि दोनों तरफ़ से कोताही होती है।

आज का मौज़ूअ़:

इस सिलसिले में आज हम बीवी की साईड का तज़किरा करेंगे कि कौनसी ग़लतियां और कोताहियां वह करती है जिसकी वजह से घर बर्बाद हो सकता है। इंशा अल्लाह कल ख़ाविंद के बारे में तज़किरा करेंगे।

एक उसूली बात याद रखें! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने कुर्आन मजीद में शादी का मक़्सद बताया لتسكنوا اليها "ताकि तुम अपनी बीवी से सुकून पाओ"। जो भी अपने ख़ाविंद के लिये सुकून का सबब बनेगी वह अपने घर में हंसी ख़ुशी ज़िंदगी गुज़ारेगी। और जो ख़ाविंद की परेशानी का सबब बनेगी वह ख़ुद भी परेशानी उठाएगी। इसलिये कि घर बसाना औरत के इख़्तियार में होता है। हमारे बड़े कहा करते थेः कि मर्द अगर कस्सी लेकर ध्यान को गिराना चाहे तो वह नहीं गिरा सकता औरत सूई लेकर घर को गिराने लगे तो मर्द से पहले गिरा लिया करती है। इसलिये औरत को घर वाली कहा जाता है घर का बसाना औरत के ऊपर मुंहसिर है।

ख़ाविंद से मुहब्बत का रिश्ता मज़बूत करें!

याद रखिये! ख़ूबसूरत, तअ़लीम याफ़्ता और मालदार

बीवी को भी ख़ाविंद के दिल की मलिका बनने के लिये समझदारी से काम करना पड़ता है। लिहाज़ा ज़िंदगी के इस सफ़र में एक दूसरे के साथ मुहब्बत का रिशता मज़बूत करें! बीवी को चाहिये कि वह ख़ाविंद को यक़ीन दिहानी करवाए, सिर्फ़ मुहब्बत का इज़हार ज़रूरी नहीं, उसको महसूस भी करवाएं कि वाक़ई बीवी मुझसे मुहब्बत करती है। ख़ाविंद के सामने सर्दमहरी दिखाना झगड़े की बुन्याद होता है। शैतान भी कितना मक्कार है कि जब बीवी ख़ाविंद के पास होती है तो उस पर अजीब शर्म व हया तारी कर देता है और जब महफ़िल में बैठी होती है तो फिर उनके सामने खिलखिला कर हंस रही होती है। तो यह ज़हन में रखें कि शरीअ़त ने जहां मुहब्बत के इज़हार करने के लिये कहा वहां मुहब्बत का इज़हार करना भी सवाब होता है।

कई जगहों पर हम ने झगड़ों की बुन्याद ही यह देखी। ख़ाविंद प्यार भी करता है और मुहब्बत का इज़हार भी करता है और बीवी अपने अंदर दिल दिल में ख़ुश भी है लेकिन इज़हार ऐसे करती है कि जैसे उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, इज़हार ऐसे करती है कि जैसे मुझे उसकी कोई ज़रूरत ही नहीं। यह इतना बड़ा ब्लंडर है कि इससे बड़ा ब्लंडर औरत अपनी ज़िंदगी में नहीं कर सकती। मुहब्बत का जवाब हमेशा मुहब्बत से देना चाहिये। जब ख़ाविंद चाहता है कि बीवी मुहब्बत का इज़हार करे तो बीवी के लिये तो यह सुनहरी मौक़ा है। ऐसी बात कहे, ऐसे अलफ़ाज़ से कहे कि ख़ाविंद का दिल बाग़ बाग़ हो जाए।

आप ज़रा सोचिये! कि उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आइशा

रज़ि0 नबी सल्ल0 से अपनी मुहब्बत का बरमला इज़्हार फ़रमाती थीं। चुनांचे बात चीत के दौरान एक मर्तबा नबी अलै0 ने फ़रमायाः "आइशा! आप मुझे मक्खन और खजूर को मिलाकर खाने से भी ज़्यादा मरगूब हो"। आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि0) मुस्कुराईं और फ़ौरन जवाब में कहाः "ऐ अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0! आप मुझे मक्खन और शहद को मिलाकर खाने से भी ज़्यादा मरगूब हैं"। नबी अलै0 मुस्कुरा पड़े और फ़रमायाः "आइशा तेरा जवाब बहुत बेहतर है"। अब देखिये! ख़ाविंद ने जो बात कही, बीवी ने एक क़दम आगे बढ़कर बात की। ख़ाविंद से मुहब्बत का इज़्हार नहीं करेंगी तो किसके साथ करेंगी? इंसान की फ़ित्रत है कि जब वह किसी से मुहब्बत करता है तो मुहब्बत इज़्हार चाहती है। याद रखिये! इश्क़ और मुश्क छुपे नहीं रह सकते हमेशा, इज़्हार मांगते हैं। जहां भी होंगे यह अपने आपको ज़ाहिर किये बग़ैर नहीं रहेंगे। इसी तरह बीवी जब ख़ाविंद से मुहब्बत करती है तो यह सोचना कि अगर मैं मुहब्बत का इज़्हार कर दूंगी तो ख़ाविंद की नज़र में गिर जाऊंगी यह बात बहुत बड़ी ग़लती है। कैसे मुम्किन है कि एक बंदा अपने क़ौल से और फ़ेअ़ल का इज़्हार कर रहा हो और दूसरे बंदे की नज़र में उसकी क़द्र कम हो रही हो? हां! जब ख़ाविंद चाहता है कि बीवी मुहब्बत का इज़्हार करे और बीवी ऐसे बन कर रहे कि जैसे वह तो बिल्कुल ठंडे बर्फ़ वाले दिल की मानिंद है, यह औरत अपना बरबाद करने की खुद कोशिश कर रही है।

अफ़सोसनाक वाक़िआः

चुनांचे मशहूर वाक़िआ है कि एक ग़रीब घर की लड़की

थी जो कि ख़ूबसूरत थी। एक नेक अमीर घराने के बच्चे ने उसकी तरफ़ शादी की आफ़र भेजी......शादी हो गई। मां बाप भी ख़ुश थे कि बच्ची की शादी अच्छी जगह हो गई है। उसके भाईयों के लिये भी कोई रोज़गार की सूरत निकल आएगी और बच्ची खुद भी ख़ुश रहेगी। जब यह घर पहुंची तो ख़ाविंद ने उसके साथ बहुत ज़्यादा मुहब्बत का इज़हार किया। यह उस मुहब्बत को देखकर नख़रे में आ गई, ख़ाविंद जितना ज़्यादा मुहब्बत का इज़हार करता यह उतना उसकी तरफ़ से सर्द महरी का सुबूत देती। ख़ाविंद बहुत ज़्यादा उसकी दिल जूई करता, सुब्ह शाम उसकी रट लगी थी कि तुम मेरे घर की मलिका हो, तुमने मेरे घर को जन्नत बना दिया, मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि इतनी अच्छी ख़ूबसूरत बीवी मुझे मिल जाएगी। यह जितना ज़्यादा अपनी तअ़रीफ़ें सुनती उतनी ज़्यादा नख़रे में आती। ख़ैर कुछ दिन गुज़रे, एक दिन यह रोती धोती अपने घर वापस आ गई। ख़ाविंद उसको मेके छोड़ कर चला गया। मां ने पूछाः बेटी क्या हुआ? कहने लगी कि ख़ाविंद बहुत ज़्यादा मुहब्बत के मूड में था, मुझे प्यार कर रहा था, चाहता था कि मैं उसके साथ मुहब्बत का इज़हार करूं और मैं ऐसे गुमसुम थी कि जैसे मुझ पर कोई असर ही नहीं हो रहा। बिलआख़िर तंग आकर उसने मुझसे पूछा कि मैं इस क़द्र तुम से मुहब्बत करता हूं क्या तुम्हें मुझसे मुहब्बत है? कहने लगी कि पता नहीं कि क्या मेरे दिमाग़ पर पर्दा पड़ा कि मैंने उस वक़्त नख़रे में आकर कह दिया कि नहीं मुझे तुमसे मुहब्बत नहीं है। बस यह लफ़्ज़ कहने थे कि ख़ाविंद गुस्सा में आ गया और कहने लगा कि जब तुम्हें मुझसे मुहब्बत नहीं तो

जाओ! जहां मुहब्बत हो वहीं ज़िंदगी गुज़ारना, मेरी तरफ़ से तुम्हें तीन तलाक़ है। अब जब शादी के एक महीने बाद उसको तलाक़ हो गई और फिर मां बाप के घर में उसको रहना पड़ा तब उसकी आंखें खुलीं

लम्हों ने ख़ता की सदियों ने सज़ा पाई

फिर इसके बाद उसकी दूसरी शादी न हो सकी। इसलिये कि जो अच्छे रिशते थे वह कुंवारी लड़की से शादी करना चाहते थे और इसके नाम पर तो शादी का धब्बा लग चुका था। और जो रिशते आते थे वह बहुत बूढ़े शादी शुदा लोगों के आते थे, उनसे शादी करते हुए यह घबराती थी। तो इस नौजवान, खूबसूरत लड़की की ज़िंदगी रोते धोते गुज़र गई।

तो देखें! यह कितनी बड़ी बेवक़ूफ़ी है, वह ज़िंदगी का साथी है, वह अपने दिल के सुकून के लिये, दिल के इत्मीनान के लिये अगर यह चाहता है कि मैं इस बीवी से इतनी मुहब्बत करता हूं तो यह भी मुझसे मुहब्बत करे, तो बीवी को इसका इज़हार करना चाहिये, कहना चाहिये कि हां आप ही से तो मुहब्बत है, आप ही तो मेरी ज़िंदगी के साथी हैं, मेरी चाहतें, मेरी मुहब्बतें सारी आप ही के लिये हैं, आपने ही मेरे लिये दुन्या को जन्नत बना दिया हे, मेरी तो खुशियां ही आप के साथ वाबस्ता हैं। ऐसे अलफ़ाज़ कहने में क्या रुकावट होती है? सिवाए इसके कि नफ़्स की शरारत होती है या शैतान बदतमीज़ उसके पीछे परेशान करने के लिये तुला हुआ होता है, इसके सिवा और कुछ भी नहीं होता।

सय्यदा आइशा रज़ि0 का इज़हारे मुहब्बतः

सय्यदना आइशा रज़ि0 ने नबी अलै0 की मुहब्बत में

अशआ़र बनाए और यह उनके शेअ़र बड़े मशहूर हैं कि जब नबी अलै0 इशा के बाद सहाबा की मजलिस से फ़ारिग़ होकर घर तशरीफ़ लाते थे तो आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि नबी अलै0 मुस्कुराते चेहरे के साथ आते थे, सलाम करते थे उस वक़्त आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 नबी अलै0 को यह शेअ़र सुनातीं थी क्या शेअ़र सुनातीं थीं। फ़रमाती थीं-

لَنَا شَمْسٌ وَّلِلْآفَاقِ شَمْسٌ

ऐ आसमान एक तेरा भी सूरज है और एक हमारा भी सूरज है।

وَشَمْسِيْ خَيْرٌ مِنْ شَمْسِ السَّمَاءِ

और मेरा सूरज आसमान के सूरज से बहुत बेहतर है

فَإِنَّ الشَّمْسَ تَطْلُعُ بَعْدَ فَجْرٍ

इसलिये कि आसमान का सूरज तो फ़ज्र के बाद तुलूअ़ होता है

وَشَمْسِيْ طَالِعٌ بَعْدَ الْعِشَاءِ

और मेरा सूरज तो मेरे घर में इशा के बाद तुलूअ़ होता है।

अब सोचिये कि बीवी अगर इन अलफ़ाज़ से ख़ाविंद का इस्तिक़बाल करे तो ख़ाविंद के दिल में किस क़द्र बीवी की मुहब्बत आएगी! कोई है आप में से ऐसी बीवी कि जिसने कभी ख़ाविंद की मुहब्बत में ऐसे अशआ़र कहे हों या कोई फ़िक़रा ही ऐसा बोल दिया हो। औरत यह समझ लेती है कि बस ख़ाविंद की ही ज़िम्मादारी है कि वह इज़्हार करे और अपने आपको समझती है कि मैं जितना इज़्हार नहीं करूंगी इतनी बड़ी महबूबा बनूंगी यह बहुत बड़ी Misunderstanding

(ग़लतफ़हमी) है। ताली दो हाथ से बजती है चाहिये कि मुहब्बत का अच्छे अंदाज़ से इज़हार किया जाए, अमल से भी, कौल से भी, फ़ेअ़ल से भी। चुनांचे जब ख़ाविंद मुहब्बत का इज़हार करे तो बीवी भी जवाब में मुहब्बत का इज़हार ज़रूर करे, ऐसे अलफ़ाज़ से कि ख़ाविंद का दिल मुतमइन हो जाए कि मेरी बीवी मुझे ही चाहती है।

यह ज़हन में रखना कि अगर ख़ाविंद के दिल में शक पड़ जाए कि मेरी बीवी मुझे भी चाहती है तो यह जो नुक़्ता है ही और भी का। यह ख़ाविंद के दिल में फ़र्क़ डाल देता है। बीवी को ऐसे ज़िंदगी गुज़ारनी चाहिये कि ख़ाविंद को यक़ीन दिहानी कराए कि आप ही से मुहब्बत करती हूं।

अपनी खुशी पर खाविंद की खुशी को तर्जीह देः

दूसरी आम तौर पर ग़लती यह कि अपनी ख़ुशी पर ख़ाविंद की ख़ुशी को तर्जीह देना। इसको यह फ़िक्र लगी रहे कि ख़ाविंद का दिल उससे ख़ुश रहे। यह नहीं कि बस हर वक़्त मुझे ही ख़ुश रहना है। ख़ाविंद की ख़ुशी का ख़्याल रखे। उसका दिल ख़ुश होगा तो घर की ज़िम्मादारियों को भी क़बूल करेगा, उसकी तवज्जोह का इतलाक़ बाहर की बजाए अपना घर बन जाएगा। वह दफ़्तार में बैठ कर घर के लिये उदास होगा। लोग उसे अपने काम के लिये रोकेंगे और यह जान छुड़ा कर घर की तरफ़ भाग रहा होगा। क्यों? इसलिये कि यह समझता होगा कि घर जाकर मुझे सुकून मिलेगा।

ख़ाविंद की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई काम न करे, कई दफ़ा देखा कि ख़ाविंद एक बात से मना करता है, बीवी सुनी अनसुनी कर देती है और फिर वही काम करती है। जब मना

करने के बावजूद फिर वही काम किया जाए तो यह चीज़ झगड़े का सबब बनती है। और झगड़ा न भी हो तो दिल में मैल आने का सबब ज़रूर बन जाती है।

ख़ाविंद कोई काम कहते तो ज़िम्मादारी से करो!

एक तीसरी बात कि अगर ख़ाविंद कोई काम ज़िम्मा लगाए उसे इस तरह करो कि ख़ाविंद बेफ़िक्र हो जाए। यह नहीं जो काम उसने ज़िम्मा लगाया उसको तो किया नहीं और दूसरे कामों में लगी रही। मिसाल के तौर परः ख़ाविंद ने सुब्ह दफ़्तर जाना होता है, उस वक़्त ख़ाविंद के कपड़े तैयार हों, उसका खाना तैयार हो, यह बीवी की ज़िम्मादारी है। अब ख़ाविंद के दफ़्तर का वक़्त हो गया और बीवी बेचारी ने अभी कपड़े ही नहीं निकाले। क्यों नहीं निकाले? जी मैं सोकर ही देर से उठी हूं, तो यह चीज़ उलझन का सबब बनेगी। अपनी ज़िम्मादारी को महसूस करे कि मझे इस मौक़ा पर क्या करना है। सोने का, जागने का कुछ उसूल होना चाहिये। कुछ औक़ात ऐसे होते हैं कि औरत को अपने हाथ से काम करना पड़ता है। अब घर की नौकरानियों को कह देना कि कपड़े धो देना, कपड़े इस्त्री कर देना। और ख़ाविंद के लिये यह समझ लेना कि खुद ही कपड़े निकाल लेगा और तैयार होकर दफ़्तर में चला जाएगा और उस वक़्त मेरी नींद में ख़लल नहीं आना चाहिये, यह इंतिहाई बेवक़ूफ़ों वाली बात है। यह ज़िंदगी की साथी है। इसे अपनी ख़िदमत के ज़रीए ख़ाविंद का दिल जीतना चाहिये। चुनांचे अगर ख़ाविंद कोई भी काम ज़िम्मा लगाए तो उसे अपना Charter of duty (फ़र्ज़े मंसबी) समझे, उसकी ज़रूरत को अपनी ज़रूरत पर तर्जीह दें।

फ़रमाइश करते हुए मर्द की गुंजाइश को देखना चाहियेः

यह भी देखा गया है कि बसा औक़ात औरत मर्द की गुंजाइश से बड़ी फ़रमाइश कर देती है। तो फ़रमाइश करते हुए ख़ाविंद की गुंजाइश को भी देखा करो! अब अगर ख़ाविंद Afford ही नहीं कर सकता और आपने ज़िद्द करके अगर कपड़े ख़रीद भी लिये तो पहन कर ख़ाविंद को आप ख़ुश कैसे कर सकती हैं? उसका दिल अगर दुखी होगा तो आप नए कपड़े लेकर उसकी मुहब्बत में कोई इज़ाफ़ा नहीं करेंगी। तो यह उसूल की बात याद रखें कि फ़रमाइश हमेशा गुंजाइश के मुताबिक़ होनी चाहिये।

ख़ाविंद की अता पर शुक्रिया अदा करेंः

आपकी फ़रमाइश को अगर ख़ाविंद पूरा कर दे तो आप उसका शुक्रिया भी अदा करें। यह भी देखा गया कि ख़ाविंद बीवी की हर जाइज़ ज़रूरत को पूरा करते हैं और जवाब में बीवी की ज़बान से शुक्रिया का लफ़्ज़ ही नहीं निकलता। क्यों नहीं निकलता? अल्लाह जाने। यह वह बड़ी बड़ी ग़लतियां हैं जो ज़ाहिर में छोटी नज़र आती हैं मगर दिलों में फ़र्क़ डाल देती हैं। ख़ाविंद तोहफ़ा लाया, फल ख़रीद कर लाया, ख़ास तौर पर कोई चीज़ अपनी बीवी के लिये लाया और बीवी उसकी तरफ़ कोई तवज्जोह ही न दे, ऐसे समझे कि हां ठीक है आ गई है कोई बात नहीं।

तो इस तरह अगर बेपरवाही का इज़हार करेंगी तो ख़ाविंद के दिल पर इसकी चोट लगेगी। जब ख़ाविंद तोहफ़ा लाए तो आप उसको इसकी अहमियत का एहसास दिलाएं और ख़ुशी का इज़हार करें ताकि अगली दफ़ा इससे बेहतर तोहफ़ा की

मुस्तहिक़ बन सकें।

खाविंद के आते ही घर का रोना धोना न लेकर बैठ जाएं:

यह भी ज़हन में रखें कि ख़ाविंद जैसे ही घर में आए फ़ौरन उसके सामने रोना धोना न लेकर बैठ जाए। पहले उससे बात चीत करके यह पूछे कि बाहर उसका वक़्त कैसे गुज़रा। वह खुश घर आया है या किसी बात की वजह से परेशान घर आया है। यह बात तो मअ़लूम नहीं करतीं बस ख़ाविंद को देखती हैं तो अपना रोना रोने बैठ जाती हैं। पहले आप उससे बात चीत करें, उससे पूछें, इसका अंदाज़ा लगाएं कि ख़ाविंद बाहर से किस कैफ़ियत के साथ आया है? कोई कारोगारी परेशानी, किसी आदमी ने किसी मुआमले में ज़हनी तौर पर परेशान तो नहीं कर दिया, उसको गुस्सा तो नहीं दिला दिया। ख़ाविंद अगर बाहर ही से किसी परेशानी के आलम में आया है तो अब बीवी को चाहिये कि पहले उसके दिल को खुश करे, उससे मीठी मीठी प्यार वाली बातें करे, हंसी खुशी बातें करके, उसके मूड को नार्मल करे, फिर इसके बाद जो कहना है कहे। लेकिन ख़ाविंद पर नज़र पड़ते ही शिक्वे शिकायत करने बैठ जाना, तुम्हारी अम्मी ने यह कह दिया, तुम्हारी बहन ने यह कर दिया, मैं तो इस घर में आकर परेशान हो गई, तुम मुझे किन मुसीबतों के पल्ले डाल कर चले गए? इस किस्म की बातें तो उसे और ज़्यादा Frustrate (परेशान) करने वाली बात है। यह ज़हन में रखें कि बाहर से आने वाले ख़ाविंद को पहले बिठाएं और बातचीत के ज़रीए अंदाज़ा लगाएं कि उसका ज़हन फ्रेश है या नहीं अगर जाने कि ठीक है तो जो आप की जाइज़ बात है ज़रूर करें। मौका

की बात सोने की डलियों की मानिंद होती है और बे मौक़ा बात झगड़े का सबब बन जाती है। अगर किसी वक़्त आप का ख़ाविंद गुस्सा में है तो फिर उसके सामने बिल्कुल नर्म हो जाएं। इतनी नफ़्सियात हर बीवी को समझनी चाहियें।

जब ख़ाविंद गुस्से में हो तो बीवी नर्म हो जाए:

रस्सी का एक सिरा अगर कोई ढीला दे और दूसरा खींचे तो रस्सी भी कभी नहीं टूटती। रस्सी जभी टूटती है जब एक सिरा एक बंदा खींचता है और दूसरा सिरा दूसरा बंदा खींचना शुरू कर देता है। अब ख़ाविंद किसी वक़्त गुस्सा में है और जवाब में बीवी साहिबा ने भी मूड बना लिया, यह तो महाज़े जंग खोलने वाली बात होगी ना! इसलिये अगर ख़ाविंद गुस्सा में है तो आप नर्म हो जाएं और अगर ख़ाविंद नाराज़ है तो आप को राज़ी करने की कोशिश करें। मुहब्बत के एक बोल से ख़ाविंद राज़ी हो जाता है। रूठा हुआ ख़ाविंद मुस्कुरा पड़ता है।

समझदारी से काम लें:

इसलिये आप समझदारी से काम लें फ़क़त यह बात कि मैं ख़ूबसूरत हूं, काफ़ी नहीं होती। ख़ाविंद को ख़ुश करने के लिये छलकते हुए, दमकते हुए हुस्न की जरूरत नहीं होती, समझदारी की ज़रूरत होती है। इसलिये कितनी ऐसी औरतें हैं जो शक्ल की नार्मल सी होती हैं मगर अपने ख़ाविंद के दिल पर राज करती हैं। इसलिये बुज़ुर्गों ने मक़ूला बनाया-

"वही सुहागन जिसे पिया चाहे"

वही सुहागन होती है जिसे ख़ाविंद पसंद करे। क्या अजीब बात है कि लड़की की शक्ल सिर्फ़ एक वलीमा के

दिन लोग देखते हैं और बाक़ी सारी उम्र उसकी अक्ल देखी जाती है। और लड़की को पसंद करते हुए बअ़ज़ दफ़ा सास साहिबा उसकी अक्ल देखती ही नहीं, फ़क़त शक्ल पर ही लट्टू हो जाती हैं और कई दफ़ा ख़ाविंद साहब ही शक्ल पर लट्टू हो जाते हैं। मां बाप भी समझाते हैं कि नहीं तेरी शादी इसके साथ ठीक नहीं, नौजवान ज़िद्द कर लेते हैं कि नहीं मुझे तो इसके साथ ही शादी करनी है। इसलिये कि कहीं एक नज़र देखती और ज़ाहिर की शक्ल देखकर वह अच्छी लग गई। अब मां बाप को बहुत मजबूर करके वहां शादी करवाते हैं और जब वह घर आती है तो फिर इंसान को उस वक़्त उसकी हक़ीक़त का पता चलता है कि इतनी ख़ूबसूरत शक्ल के अंदर अक्ल की तो रत्ती भी नहीं थी। तो जब सारी ज़िंदगी अक्ल ने काम आना है फिर इसको क्यों नहीं देखते। इसलिये समझदारी, अक्लमंदी घर आबाद करने की बुन्यादी वजह है।

हुस्ने इंतिज़ाम और सलीक़ा शिआरी से काम लें:

औरत को चाहिये कि वह हुस्ने इंतिज़ाम के ज़रीए अपने घर को पुरवक़ार बना दे। जितनी औरत अक्लमंद होगी उतनी ही वह अपने घर के अंदर हर चीज़ तरतीब से रखेगी। बेतरतीब चीज़ें फैला देना, घर को गंदा रखना, बच्चों को गंदा रखना, खुद भी गंदी बने रहना इस चीज़ का घर बर्बाद करने में एक बहुत बड़ा हिस्सा होता है। घर की सफ़ाई के लिये कोई क़ीमत भी ख़र्च नहीं करनी पड़ती, हां वक़्त निकाल लें घर को भी साफ़ रखें, अपने आपको भी साफ़ रखें, अपने बच्चों को भी साफ़ सुथरा रखें। सफ़ाई आधा ईमान है।

اَلطُّهُوْرُ شَطْرُ الْاِيْمَانِ

जब शरीअ़त कह रही है कि "सफ़ाई आधा ईमान है" तो हमें भी सफ़ाई से मुहब्बत होनी चाहिये, दुन्या का कोई इंसान ऐसा नहीं जो कहे कि मुझे साफ़ सुथरा घर अच्छा नहीं लगता, मुझे साफ़ सुथरा बच्चा अच्छा नहीं लगता। यह कैसे मुम्किन है! अल्लाह तआला ने इंसान की फ़ित्रत ही ऐसी बनाई है कि साफ़ सुथरा माहौल, साफ़ सुथरे बच्चे, साफ़ सुथरी बीवी हमेशा उसके दिल को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करती है। और साफ़ सुथरा रहने के लिये कोई बहुत क़ीमती लिबास की भी ज़रूरत नहीं, एक आम क़ीमत का लिबास भी अगर औरत पहने लेकिन साफ़ सुथरा हो और उसकी बनावट अगच पुरकशिश हो तो वह ख़ाविंद के दिल को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह कर सकता है। इसको हुस्ने इंतेज़ाम कहते हैं। तो अपने हुस्ने इंतेज़ाम से अपने घर के माहौल को पुरवक़ार बनाएं और किफ़ायत शिआ़री दिखाएं।

अगर हुस्ने इंतेज़ाम नहीं होगा, बत्तियां जलती रहेंगी तो बिल ज़्यादा आएगा, अगर टोटियों से पानी बहता रहेगा तो पानी का बिल ज़्यादां ज़्यादा आएगा, अगर खाना वक़्त पर फ़्रीज में नहीं रखा जाएगा तो खाना ख़राब हो जाएगा और अगर बर्तनों को सही तरतीब से नहीं रखा जाएगा तो वह टूटेंगे और ख़राब हो जाएंगे तो बदनज़्मी से बेबरकती होती है, काम उलझते हैं, वक़्त ज़ाए होता है, चीज़ें ख़राब हो जाती हैं, नुक़्सान भी ज़्यादा होता है। हर चीज़ को अपनी जगह पर रखना, वक़्त पर साफ़ कर देना यह अच्छी आदत होती है। तो औरत इसको अपनी ज़िम्मादारी समझे।

ख़ाविंद के साथ ज़िद्द बाज़ी न करें:

यह भी ज़ह्न में रखिये कि ताबेअ़ फ़रमान औरतों बिलआख़िर अपने ख़ाविंद को अपना ताबेअ़ बना लेती हैं। वह औरतें जो ख़ाविंद की मर्ज़ी को पूरा करने की कोशिश में लगी रहती हैं, एक वक़्त ऐसा आता है कि ख़ाविंद के दिल में उनके लिये इतनी मुहब्बत होती है कि फिर ख़ाविंद उनकी हर मर्ज़ी को पूरा कर दिखाता है। फ़रमांबरदारी, ख़िदमत गुज़ारी, वह अच्छी सिफ़ात हैं जिनकी वजह से औरत अपने ख़ाविंद के दिल की मलिका बन सकती है। इसमें जो रुकावट बनती है वह अनानियत है, ज़िद्दबाज़ी है। सारी दुन्या से ज़िद्द कर लो! इतना नुक़्सान नहीं पहुंचेगा जितना ख़ाविंद के साथ ज़िद्दबाज़ी का नुक़्सान होता है। और कई बच्चियां तो ख़ाविंद ही के साथ ज़िद्द करती हैं, बाक़ी सारे लोगों के साथ नार्मल रहती हैं। ख़ाविंद के साथ ज़िद्दबाज़ी बना लेती हैं। तो ख़ाविंद के साथ ज़िद्द करके दंगल का एलान मत करें! अंजाम हमेशा उसका बुरा ही होता है। आजिज़ी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को भी पसंद है और आजिज़ी इंसान के मसाइल का हल भी है। कोई काम वक़्त पर न कर सकी, कोताही रह गई, कमी रह गई Sorry कर लेने में क्या रुकावट है? मुआफ़ी मांग लेने में क्या रुकावट है? ग़लती को मान लेने में क्या रुकावट है? आगे से ज़िद्द कर लेना, अना का मस्ला बना लेना, झगड़ा कर बैठना, बहस कर बैठना यह चीज़ फिर इंसान के लिये परेशानियों का सबब बनती है।

ग़ुस्से में आए ख़ाविंद को दलील मत दें:

कभी भी ग़ुस्से में आए हुए ख़ाविंद के सामने logic

(दलील) मत दें, कभी भी गुस्से में आए हुए ख़ाविंद को तअ़ना मत दें। यह तो आग के ऊपर तेल डालने वाली बात है बल्कि पेट्रोल डालने वाली बात है। शैतान मर्दूद यही तो चाहता है कि ख़ाविंद गुस्सा में पहले ही है, यह उसको और गुस्सा दिलाए और ख़ाविंद ज़बान से तलाक़ का लफ़्ज़ निकाले। तो यह ज़हन में रखें कि जब बिलफ़र्ज़ बिला वजह ही ख़ाविंद नाराज़ हो गया तो गुस्सा की हालत में कभी उसके सामने logic नहीं देनी, ख़ामोशी इख़्तियार करनी है, अगर बोलना है तो नर्म बोल बोलना है, देखना है तो मुहब्बत से देखना है, ऐसा कि दूसरे बंदे का गुस्सा ही बिल्कुल ख़त्म हो जाए।

पुरकशिश लिबास पहनें:

लिबास पहनो तो पुरकशिश पहनो! पुरकशिश का यह मतलब नही कि आधा जिस्म नंगा हो और आधा जिस्म ढांपा हो, शरीअ़त के दाइरा में रहते हुए औरत ऐसा लिबास पहने कि उसके जिस्म के ऊपर पुरकशिश लगे। बेढंगा लिबास पहनना, ऐसा लिबास कि जिसको देख कर बंदा ज़रा भी मुतवज्जेह न हो, यह भी अच्छी आदत नहीं। बअ़ज़ नेक बीबियां सादगी के नाम पर अपने कपड़ों की तरफ़ से बिल्कुल ही बेध्यान बन जाती हैं, ऐसा नहीं करना चाहिये। ख़ाविंद जब भी बीवी की तरफ़ देखता है, वह उसे पुरकशिश देखना चाहता है। और जब उसकी बीवी पुरकशिश नहीं होती तो साफ़ ज़ाहिर है कि उसे बाहर बहुत ज़्यादा पुरकशिश चीज़ें नज़र आ जाती हैं। जो गंदगी उसे बाहर मुतवज्जेह कर सकती है क्या वह अच्छाई बन कर उसे घर में मुतवज्जेह नहीं कर सकती?

तो लिबास ऐसा बनाएं कि हमेश पुरकशिश हो। रस्म व रिवाज को सामने न रखें बल्कि उसको सामने रखें कि यह लिबास मेरे जिस्म को पुरकशिश दिखाए। मेरे जिस्म पर पहना हुआ ख़ाविंद को पसंद आ जाए।

ख़ाविंद से मुख़्लिस और नेक नियत बनें:

यह और बात है कि कुछ औरतें ऐसी होती हैं कि कपड़े पहनने से उनके हुस्न में अफ़साना नहीं होता बल्कि वह जो कपड़े पहन लेती हैं उनके कपड़ों के हुस्न में इज़ाफ़ा हो जाता है, उनके चेहरों पर मअ़सूमियत होती है, उनके चेहरों पे तक़्वा का नूर होता है फिर उनका लिबास, जब वह पहन लेती हैं तो वह खुद ही खूबसूरत नज़र आने लग जाता है। तो औरत को चाहिये कि दिल की मअ़सूमिय्यत से अपने ख़ाविंद का दिल जीत ले। यह दिल की मअ़सूमिय्यत हर ख़ाविंद को अच्छी लगती है और जब ख़ाविंद का दिल यह समझता है कि ना कि मेरी बीवी दिल से बहुत मअ़सूम है, इंतिहा दर्जे की मुख़्लिस है तो उस बीवी को वह हमेशा अपनी आंख की पुतली बना के रखता है। झूटी औरत, कीना परवर औरत, धोका देने वाली, ख़ाविंद को Miss guide (गुमराह) करने वाली औरत हमेशा अपना घर बर्बाद करवा बैठती है।

ख़ाविंद के साथ कभी झूट का मुआमला न बरतें। जिस बंदे के साथ कभी एक दो घंटे के लिये मुलाक़ात है उसके सामने तो झूट चल जाता है। और जिसके साथ चौबीस घंटे का वास्ता हो उसके साथ झूट नहीं चलता। एक नहीं तो दो, दो नहीं तो तीन दिन बाद कभी न कभी झूट खुल ही जाता है। और जब ख़ाविंद को यह एहसास हो जाए कि बीवी मेरे

सामने झूट बोलती है तो फिर बीवी का मक़ाम ख़ाविंद की नज़र में गिर जाता है। इसलिये झूट बोलना, ख़ाविंद के बारे में दिल में नफ़रत और कीना रखना, यह औरत की ग़लतियों में से एक बड़ी ग़लती होती है। बल्कि जितनी नेक नियत आप होंगी इसका असर आप के ख़ाविंद के दिल पर पड़ेगा।

दिल को दिल से राह होती है:

यह हमेशा ज़हन में रखना कि दिल को दिल से राह होती है। आप के दिल में ख़ाविंद की अज़्मत होगी, प्यार होगा, मुहब्बत होगी, खुद बखुद ख़ाविंद के दिल में आप की मुहब्बत पैदा होगी।

चुनांचे एक बादशाह अपने वज़ीर के साथ जा रहा था उसने अपने वज़ीर से पूछाः यह जो कहते हैं दिल को दिल से राह होती है। इसका क्या मअ़नी है? वज़ीर बातदबीर था। उसने कहाः बादशाह सलामत! आपको यह बात मैं आंखों से दिखा सकता हूं, मगर आप ज़रा किसी वक़्त आम कपड़े पहन कर मेरे साथ चलें, बहुत अच्छा। चुनांचे एक दिन बादशाह ने अपना ताज और अपने कपड़े उतार कर आम लोागें का लिबास पहन लिया और वज़ीर के साथ बाहर महल से निकल गया। चलते चलते एक बंदा आगे आ रहा था तो वज़ीर ने बादशाह से पूछा कि बादशाह सलामत यह कैसा आदमी है? उसने कहा बेवक़ूफ़ लगता है, जाहिल है, लगता है कोई तमीज़ नहीं है इसको, उसने कहाः ठीक। आएं ज़रा फिर उस बंदे से सुनें। वज़ीर उस बंदे के पास गया, सलाम दुआ की। कहने लगा सुनाओ यार! आजकल हमारा बादशाह कैसा है? कहने लगाः पता नहीं कहां का बेवक़ूफ़ बादशाह बन गया है?

उसको समझ ही नहीं है, वह बादशाह बनने के लाइक़ ही नहीं है। उसने भी आगे से ऐसे ही उल्टे सीधे कमेंट्स दे दिये। ख़ैर थोड़ा सा और आगे गए तो वज़ीर की नज़र एक और नौजवान पर पड़ी। उसने बादशाह से पूछाः बादशाह सलामत इसके बारे में आपकी क्या राए है? बादशाह ने कहाः भला आदमी नज़र आता है। उसने कहाः आएं अब ज़रा इससे पूछते हैं। वज़ीर ने उससे जाके पूछाः सुनाओ भई! हमारा बादशाह कैसा है? कहने लगा! यार! बहुत ही समझदार है, और उसने तो रिआया को बहुत ही खुश कर रखा है, और हम लोग तो बड़े खुशक़िस्मत हैं कि हमारा बादशाह इस क़द्र क़ाबिल है। अब वज़ीर ने बादशाह को कहाः कि देखें आपके ज़हन में दूसरों के बारे में जो ख़्यालात आ रहे थे, आप के बारे में वही ख़्यालात दूसरे बंदे के दिल में आ रहे थे। यह है कि "दिल को दिल से राह होती है"।

आप के दिल में अगर दूसरों के लिये मुहब्बत के जज़्बात उठ रहे हैं, प्यार आ रहा है तो यह पैग़ाम उसको खुद बखुद पहुंचा जाता है। और दूसरा दिल इस पैग़ाम को खुद बखुद ले लेता है और दूसरे के दिल में भी इसके बारे में प्यार और मुहब्बत के जज़्बात पैदा हो जाते हैं। तो अपने दिल में ख़ाविंद के बारे में हमेश मुहब्बत रखें। बल्कि अगर ख़ाविंद की कोताहियां भी हां, अगर ग़लतियां भी हों, अगर वह बदकारी में पड़ने वाला भी हो आप का तो ख़ाविंद है ना, आप उसके ऐबों को जानने के बावजूद उससे मुहब्बत करें। वह आपकी ज़िंदगी का साथी है, दोस्तों ने, माहौल ने, हालात ने उसको बिगाड़ दिया, अब आप की मुहब्बत उसको नेकी की तरफ़ ले

आएगी और आपके झगड़े उसको और ज़्यादा बुरा बना देंगे। तो ऐबों को जानते हुए भी दरगुज़र से काम लेना, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की सिफ़त है। और हदीसे पाक में फ़रमाया गया:

وَتَخَلَّقُوْا بِاَخْلَاقِ اللّٰهِ

तुम अपने आपको अल्लाह के अख़्लाक़ से
मुज़य्यन करो।

औरत को चाहिये कि ख़ाविंद की बदकिर्दारी के बावजूद, ग़लतियों के बावजूद अपने दिल में उसके साथ मुहब्बत रखे।

बाहर घूमने फिरने की आदत न डालें:

एक और बात जो झगड़े का बाइस बनती है वह बाहर घूमने की आदत है। आम तौर पर मर्द औरतों को घूमने की आदत डालते हैं। और कई मर्तबा यह आदत औरतों को मां बाप के घर से ही पड़ी होती है, बाहर घूमने की। यह बाहर घूमना अज़्दवाजी ज़िंदगी के लिये बहुत ज़्यादा नुक़्सानदेह है। इसकी क्या वजह? इसकी वजह यह है कि औरत जब बाहर निकलती है तो शैतान तांक झांक करने वालों को भी साथ लगा देता है। अब दो क़िस्म की मुसीबतें सामने आईं, बाहर के मर्द होंगे जो उस औरत की तांक झांक में लगेंगे और किसी को उसकी शक्ल अच्छी लग गई तो वह उसका अता पता करेगा उसको मैसेज करने की कोशिश करेगा और ख़्वाहमख़्वाह उसका घर बर्बाद करेगा। और ख़ाविंद की नज़र किसी ग़ैर पर पड़ गई तो ख़ाविंद अपनी बीवी की बजाए उसके साथ Attach ज़्यादा हो जाएगा। तो मियां बीवी का यह सोचना कि आओ! घूमते फिरते हैं, यह फ़िरंगियों की तर्ज़

है, फ़िरंगियों का तरीक़ा कार है। इसलिये हमने तो इसका अंजाम हमेशा बुरा ही देखा है। औरतें अगर अपने ख़ाविंद के साथ बाहर जाना चाहती हैं तो किसी पार्क में जाना या किसी ऐसी जगह पर जाना जहां पर आम मज्मा न हो बिल्कुल ठीक है। मगर घर की बजाए......चलो! पीज़ा हट पर जाके खाना खा के आते है, अच्छा भई! आज हम जाकर "के एफ़ सी" पर खाना खाते हैं, यह जो मुसीबत है और ज़िंदगी की तरतीब है यह बहुत ही ज़्यादा इंसान के लिये नुक़्सानदेह है। या तो शैतान बीवी को किसी गुनाह में फंसाने में कामियाब हो जाता है, या ख़ाविंद का किसी गुनाह में फंसाने में कामियाब हो जाता है। तो इसलिये पब्लिक मक़ामात पर घूमने की आदत डालना यह आम तौर पर झगड़ों का सबब बनता है। याद रखें! अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने के लिये अगर ख़ाविंद को घर में ही चूल्हा गर्म मिल जाए और गर्म दिल मिल जाए, तो इसके सिवा उसको कोइ तीसरी चीज़ नहीं चाहिये होती। आप घर में ही उसको अच्छे खाने बना कर दे दें और घर में ही उसको अपने दिल की गर्मी का एहसास दिला दें कि आप कितनी मुहब्बत करती हैं। तो फिर ख़ाविंद को बाहर घूमने की क्या ज़रूरत है।

ख़ाविंद से मुलाक़ात में उज़्र न करें:

यह भी देखा कि कई मर्तबा ख़ाविंद चाहता है कि बीवी से मुलाक़ात करूं, मिलूं, और बीवी साहिबा के उज़्र बहाने की ख़त्म नहीं होते। यह चीज़ झगड़े का सबब बनती है। ख़ाविंद गुस्से में हो तो उसको भी अक़्लमंदी से डील करना चाहिये और ख़ाविंद पर जब शहवत का भूत सवार हो तो उसके साथ

भी अक़्लमंदी का मुआमला करना चाहिये। जैसे भी हो, उसके इस नशे को उतारो! शरीअ़त ने तो यहां तक भी कहा कि और अगर ऊंट के ऊपर सवार है और ख़ाविंद इशारा करे कि नीचे आओ! मुझे तुम्हारी ज़रूरत है, तो वह ऊंट से नीचे उतरे, ख़ाविंद की ज़रूरत को पूरा करे और फिर ऊंट पर दोबारा चढ़कर बैठे। शरीअ़त ने कितने ख़ूबसूरत उसूल हमें बता दिये। और यहां तो मियां बीवी हैं, एक बिस्तर पर हैं और बीवी के बहाने नहीं ख़त्म होते।

ख़ाविंद पर शक न करें:

एक और चीज़ जो झगड़े का सबब बनती है वह यह कि ख़ाविंद कभी कभी काम की वजह से, दफ़्तर की वजह से, दीन के काम की वजह से या दोस्तों की वजह से घर देर से आता है, तो ख़ाविंद के देर से आने पर यह शक दिल में रख लेना कि बाहर उसका किसी के साथ कोई तअ़ल्लुक़ है, यह इंतिहाई नुक़्सानदेह बात है। जब बीवी ख़ाविंद को किसी ऐसे गुनाह का तअ़ना दे जो उसने नहीं किया, तो इस पर ख़ाविंद का तैश में आना एक मर्द होने के नाते हमेशा बहुत ज़्यादा होता है। क्या बीवी इलज़ाम बर्दाश्त कर सकती है कि ख़ाविंद उसको कहे कि तुम्हारा किसी ग़ैर के साथ तअ़ल्लुक़ है, अगर बीवी इस बात को सुन कर फ़ौरन भड़क जाती है कि तुमने यह बात कर कैसे दी? तो ख़ाविंद का भी तो यही मुआमला है......अगर वह देर से आया तो देर से आने की तो सौ वुजूहात होती हैं। चलो वह दोस्तों के साथ बैठ कर गप्पें मारता रहा, खाता पीता रहा, या दफ़्तर में देर लग गई, या किसी दीन के काम में मस्जिद में बैठा रहा, तो देर से आने

की तो बहुत सी वुजूहात हो सकती हैं। हमेशा इससे एक ही नतीजा निकालना कि जी ख़ाविंद देर से घर आता है, मुझे तो लगता है कि दाल में काला काला है। यह बदगुमानी मियां और बीवी के दर्मियान नफ़रतें पैदा करने का सबब बन जाती है। लिहाज़ा बग़ैर क़िसी ठोस शवाहिद के ख़ाविंद के ऊपर बदगुमानी न करें। बस ज़्यादा मुहब्बत दें, ताकि उसको बाहर के बजाए अपने घर के अंदर मुहब्बत मिले। अगर घर में आप झगड़ा करने की आदी बन गई, ज़िद करने की आदी बन गई और सुब्ह अपने ख़ाविंद का न नाशता तैयार किया, न कपड़े दिये, और ख़ुद ही उठ कर उसने अपने कपड़े लिये और पहने और इसी तरह घर से भूका चला गया, तो ऐसा परेशान हाल ख़ाविंद जब दफ़्तर में जाएगा और वहां दफ़्तर में काम करने वाली कोई बेपर्दा लड़की उसको यह लफ़्ज़ कह दे कि "सर आज आप बड़े परेशान नज़र आते हैं" तो बस यह एक फ़िक़रा ख़ाविंद को उसकी तरफ़ मुतवज्जेह करके रख देगा। फिर दफ़्तर में उसका अफ़ेयर शुरू हो जाएगा। आप उसको घर से परेशान मत भेजें। अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद में फ़रमायाः لتسكنوا اليها ताकि ख़ाविंद तुमसे सुकून पाए। जब आप ने बग़ैर सुकून के उसको घर से भेज दिया तो बुन्यादी ग़लती तो आपने की।

रूठे शौहर को मनाने की कोशिश करें:

और अगर आप महसूस करें कि शौहर रूठा हुआ है तो उसको मनाने की कोशिश करें। कभी भी ऐसी सूरत नहीं होनी चाहिये कि इंसान एक दूसरे के साथ नाराज़गी की हालत में सो जाए। नहीं, जब तक एक दूसरे से मुआफ़ी तलाफ़ी न कर

लें, Sorry न कर लें, एक दूसरे से प्यार मुहब्बत न कर लें, कभी उस वक़्त तक मत सोएं। गुस्से की हालत में जब एक का चेहरा एक तरफ़ और दूसरे का दूसरी तरफ हो, तो समझ लें कि हमने ज़िंदगी के फ़ासले तय करने के लिये मुख़्तलिफ़ सिम्तों को कबूल कर लिया। ऐसी औरत जो नाराज़ शौहर की परवाह ही नहीं करती, वह शौहर की मौजूदगी के बावजूद बेवगी की ज़िंदगी गुज़ारने वाली औरत होती है। कई ऐसी भी तो औरतों होती हैं ना कि जो शौहर के होते हुए भी बेवा होती हैं। यह ऐसी ही औरतें होती हैं ज़िद्दी, ख़्वाह मख़्वाह ख़ाविंद के साथ झगड़ा कर लेना, यह चीज़ ज़िंदगी को मुश्किल में डाल देती है।

ख़ाविंद का दूसरों की नज़र में वक़ार बढ़ाएं:

और कभी कभी झगड़े का सबब यह बनता है कि ख़ाविंद बुरा होते है मगर बीवी उसकी बुराई का ढिंढोरा पीटना शुरू कर देती है। मैके भी फोन करके अपनी अम्मी को बता रही है कि किस मुसीबत में आपने मुझे डाल दिया। सहेलियों को भी फोन करके बता रही है कि मैं तो मुसीबत में पड़ गई। बच्चों के सामने भी बाप की बुराई कर रही है। उसके मुंह के सामने भी उसको बुरा कहती है। जब आप ने उसकी बुराई का इतना ढिंढोरा पीटना शुरू कर दिया तो आप उसकी नज़र में कहां से अच्छी रहीं? आपने भी तो साबित कर दिया कि बुराई में उसने कोई कमी नहीं छोड़ी। याद रखें! हमेशा अपने ख़ाविंद की दूसरों के सामने इज़्ज़त बनाएं। ख़ाविंद आपका दिल दुखाए, आपको परेशान कर दे, मगर फिर भी आपकी आदत यह हो, आप का ख़ल्क़ यह होना चाहिये कि दूसरों के

सामने उसका अच्छा तज़किरा करें, इस तरह बात करें कि दूसरों की नज़र में ख़ाविंद की इज़्ज़त और मक़ाम बढ़ जाए, यह घर आबाद करने के लिये इंतिहाई ज़रूरी होता है।

ख़ाविंद को फ़ैसला कुन पोज़ीशन पर न ले जाएं:

एक और ग़लती जो आम तौर पर झगड़े का सबब बनती है कि बीवी अपने ख़ाविंद को कभी कभी ऐसी पोज़ीशन पे लाकर खड़ा कर देती है कि जहां उसे एक को छोड़ना पड़ता है और दूसरे को रखना पड़ता है। कभी भी अपने ख़ाविंद को ऐसी पोज़ीश पे लाकर खड़ा मत करें, कि या वह आपको रखे या अपनी मां को रखे, या आपको रखे या अपनी बहन को रखे, क्यों इस पोज़ीशन पर आपने उसको लाकर खड़ा किया अब वह जिस तरफ़ भी क़दम बढ़ाएगा फ़साद ही फ़साद है। तो ऐसी सूरते हाल पर बात को न लाएं।

हमेशा ख़ाविंद की ज़िम्मादारियों का ख़्याल करें अगर वह एक ही बेटा है तो अपनी मां को कहां बेच निकालेगा? आपको उसकी मां के साथ ज़िंदगी गुज़ारने के लिये मुजाहिदा करना है। हां जब आप और आपके मियां बाहम मिल जाएंगे तो फिर बूढ़ी सास आप लोगों को परेशान नहीं कर सकेगी।

ग़ैर मर्द से तन्हाई में बात न करें:

एक और चीज़ जो झगड़े का सबब बनती है: वह है किसी ग़ैर मर्द के साथ तन्हाई में बात करना, या फ़ोन पर बात करना। यह औरत की इतनी बड़ी ग़लती होती है कि इसका नतीजा हमेशा बर्बादी होती है। याद रखें! मर्द औरत की हर कोताही को बर्दाश्त कर सकता है, उसके किर्दार की बुराई को भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। तो ग़ैर मर्द के साथ

गुफ़्तगू करने से ऐसे घबराएं जैसे बच्चा किसी शेर को दूखकर या बिल्ली को देखकर घबराया करता है। इस मुआमले में अपने किर्दार को बेदाग़ रखें। जब मर्द के दिल में यह बात होती है कि मेरी बीवी पाकदामन है तो वह फिर उसकी कड़वी कसैली भी आराम से बर्दाश्त कर जाता है। आपने देखा नहीं है कि कितनी खूबसूरत लड़कियों को तलाक़ें हो जाती हैं, इनका सबब यही मुसीबत बनती है। किसी का फ़ोन आ रहा है, किसी के मैसेज आ रहे हैं, किसी से बात हो रही है। ख़ाविंद को ज़रा इसका पता चला तो बस यह चीज़ मियां बीवी के दर्मियां फ़ासले पैदा होने का सबब बन जाती है।

ख़ाविंद की इजाज़त के बग़ैर घर से न निकलें:

इसलिये ख़ाविंद की इजाज़त के बग़ैर कोई काम भी न किया करें और ख़ाविंद की इजाज़त के बग़ैर घर से भी न निकला करें। हदीसे पाक में आता है:

"जो बीवी अपने ख़ाविंद की इजाज़त के बग़ैर घर से बाहर निकलती है जब तक लौट कर नहीं आती अल्लाह के फ़रिशते उस औरत के ऊपर लअ़नत बरसाते रहते हैं"।

और एक हदीसे मुबारका में है: "औरत का ख़ाविंद अगर किसी जाइज़ बात पर नाराज़ हुआ और औरत उसकी परवाह नहीं करती, उसका ख़्याल ही नहीं करती, जब तक मर्द नाराज़ है, अल्लाह तआला उस औरत की नमाज़ों को भी क़बूल नहीं फ़रमाते"। हदीसे पाक में गुलाम के बारे में भी यही आया है कि "अगर कोई गुलाम अपने घर से भाग जाए तो जब तक अपने मालिक के पास वापस न लौटे अल्लाह उसकी नमाज़ों को क़बूल नहीं फ़रमाते।" हक़ीक़ते हाल को समझकर दीनी

ज़िंदगी गुज़ारेंगी तो इंशा अल्लाह यह झगड़े ही ख़त्म हो जाएंगे। यह बातें तो वह थी कि आम तौर पर औरतों से जो कोताहियां हो जाती हैं, जिन पर मियां बीवी के दर्मियान झगड़े होते हैं। बिला इजाज़त काम करना या बग़ैर इजाज़त घर से जाना यह बड़ी ग़लतियों में से एक ग़लती है।

एक सहाबिया की बेमिसाल फ़रमांबरदारी:

अब एक हदीसे मुबारका सुन लीजिये! नबी सल्ल0 के मुबारक ज़माने में एक मियां बीवी ऊपर की मंज़िल पर रहते थे और नीचे की मंज़िल पर बीवी के मां बाप रहते थे। ख़ाविंद कहीं सफ़र पर गया और उसने बीवी को कह दिया कि तुम्हारे पास ज़रूरत की हर चीज़ है, तुमने नीचे नहीं उतरना। चुनांचे यह कहकर ख़ाविंद चला गया। अल्लाह की शान देखें कि वालिद साहब बीमार हो गए। वह सहाबिया औरत समझती थी कि ख़ाविंद की इजाज़त की शरीअ़त में कितनी अहमियत है। अब यह नहीं कि उसने सुना वालिद बीमार हैं तो वह नीचे आ गई, नहीं। उसने अपने ख़विंद की बात की क़द्र की और नबी सल्ल0 की ख़िदमत में पैग़ाम भिजवाया कि मेरे ख़ाविंद ने मुझे घर से निकलते हुए मना कर दिया था (उससे राबता भी मुम्किन नहीं था उस ज़माने में कोई सेल फ़ोन भी नहीं होते थे कि दोबारा पूछ लिया जाता) तो ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! क्या अब मुझे नीचे जाना चाहिये? नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि नहीं, आपके ख़ाविंद ने चूंकि आप को मना कर दिया तो आप नीचे न आएं। अब ज़रा ग़ौर कीजिये, नबी सल्ल0 ख़ुद ही यह बात फ़रमा रहे हैं कि आप ख़ाविंद की इजाज़त के बग़ैर नीचे मत आएं। चुनांचे

वह नीचे नहीं आई। अल्लाह की शान कि उसके वालिद की तबीअ़त ज़्यादा ख़राब हो गई हत्ताकि वालिद की वफ़ात हो गई। जब वालिद की वफ़ात हो गई तो उस सहाबिया ने फिर पैग़ाम भिजवाया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! क्या मैं अपने बाप का चेहरा आख़िरी मर्तबा देख सकती हूं, मेरे वालिद दुन्या से चले गए, मेरे लिये कितना बड़ा सदमा है। नबी सल्ल0 ने फिर फ़रमायाः चूंकि तुम्हारे ख़ाविंद ने तुम्हें रोक दिया था इसलिये तुम ऊपर ही रहो और अपने वालिद का चेहरा देखने के लिये नीचे आना ज़रूरी नहीं। वह सहाबिया ऊपर ही रही। सोचें उसके दिल पर क्या गुज़री होगी, कितना सदमा उसके दिल पे हुआ होगा! उसके वालिद का जनाज़ा पढ़ाया गया, उसको दफ़न कर दिया गया। नबी सल्ल0 ने उस बेटी की तरफ़ पैग़ाम पहुंचाया, कि "अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने तुम्हारा अपने ख़ाविंद का लिहाज़ करने की वजह से तुम्हारे बाप के सब गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दिया"। तो मअ़लूम हुआ कि आप अपने घर में जो काम भी करें ख़ाविंद से इजाज़त ले लें। हां ख़ाविंद को भी क्या पाबंदियां लगानी चाहियें और क्या पाबंदियां नहीं लगानी चाहियें, ख़ाविंद के मौज़ूअ़ को कल छेड़ेंगे।

खुलासए कलामः

अब इआदा सबक़ के तौर पर हम अब तक की गई सारी बातों का निचोड़ फिर बयान कर देते हैं, ताकि बीवी को अपनी ज़िम्मादारियां अच्छी तरह याद हो जाएं।

औरत को चाहिये कि वह घर में ज़िंदा दिल बन कर रहे। जब शौहर आए तो ख़ंदा पेशानी से उसका इस्तिक़बाल करे,

उसका दिल बाग़ बाग़ हो जाए। खाने के वक़्त दस्तरख़्वान पर अपने शौहर से दिलचस्प बातें करें। जब ज़हन में बेफ़िक्री होती है तो दाल में भी क़ोरमा का मज़ा आता है, तो बीवी अपनी शीरीं ज़बानी से अपने ख़ाविंद के ग़म को ख़त्म कर दे। उसके जितने भी काम हों उनको अपने हाथों से करे और उसको अपने लिये सआदत समझे। ख़ाविंद की ख़ुशी को अपनी ख़ुशी, ख़ाविंद के ग़म को अपना ग़म समझे। ख़र्च अख़्राजात के मुआमले में किफ़ायत शिआरी से काम ले। बुरे वक़्त के लिये हमेशा कुछ न कुछ रक़म अलग रखने की कोशिश करे। अगर कभी ख़ाविंद को कोई ज़रूरत हो और वह मख़्दूश हालात में हो तो उस वक़्त वह रक़म उसको पेश कर सकती है और उसके दिल में अपने लिये जगह बना सकती है। वैसे भी इस जमा शुदा रक़म में से कभी ख़ाविंद के कपड़े सी कर दे दिये, सलवार दे दिये, कभी घड़ी तोहफ़ा लेकर दे दी। हदीस पाक में आया है تهادوا تحابوا हदिया दो मुहब्बत बढ़ेगी। यह हमेशा ख़ाविंद की ही ज़िम्मादारी नहीं होती कि वह हदिया दे। هل جزاء الاحسان الا الاحسان۔ ख़ाविंद की इस जमा शुदा रक़म में से कभी बीवी भी उसे कोई Personal चीज़ लेकर दे दे तो ख़ाविंद की ख़ुशी में इज़ाफ़ा होगा। यह उसूल याद रखें कि पहले ख़ाविंद को खिलाएं फिर ख़ुद खाएं, पहले ख़ाविंद को पिलाएं फिर ख़ुद पियें। जिस काम में ख़ाविंद की दिलचस्पी न हो उसे बिल्कुल ही छोड़ दें। ऐसी कभी भी नौबत न आने दें कि तुम मुंह उधर कर लो हम इधर मुंह कर लेंगे। मुहब्बत के मैदान में बाज़ी को हार कर ही इंसान जीतता है। कभी भी शौहर के साथ बदएतिमादी

और बेइत्मीनानी का इज़हार न करें। जो औरत अपना दिल भी संवारती है, अपना जिस्म भी संवारती है वह हमेशा अपने ख़ाविंद की पसंदीदा बनती है। उसके लिये छलकते हुए हुस्न की ज़रूरत नहीं होती समझदारी की ज़रूरत होती है। मर्द कभी भी ज़िद्दी औरत को पसंद नहीं करता। जब भी कोई ऐसी बात हो तो ज़िद ख़त्म करके हमेशा मर्द की बात को मान लिया करें। पाकदामनी वह सिफ़त है कि जिसकी वजह से औरत अपने ख़ाविंद के दिल पर राज करती है। ख़ाविंद के आराम का ख़्याल रखें उसको अपना दोस्त बनाएं और दूसरे की नज़र में उसकी इज़्ज़त बढ़ाएं। यह वह बातें थीं कि औरत अगर इन बातों का ख़्याल रखे तो घर का माहौल पुरसुकून रहता है। मियां बीवी के दर्मियान मुहब्बत बढ़ती रहती है।

आज चूंकि पहले से बता दिया था कि मियां बीवी दो इंसान हैं जिन्होंने मिल कर ज़िंदगी गुज़ारनी होती है तो कभी बीवी की ग़लती से झगड़ा तो कभी ख़ाविंद की ग़लती से झगड़ा। आज क़ुदरतन हमने औरतों से मुतअल्लिक़ बातें बताईं, उम्मीद है कि औरतें इन ग़लतियों से अपने आपको बचाएंगी और ख़ुशी के माहौल में ज़िंदगी गुज़ारेंगी। और उम्मीद है कि कल के बयान को सुनने के लिये ज़्यादा तअ़दाद में आएंगी कि ख़ाविंद की ग़लतियां कौनसी होती हैं और इन ग़लतियों से कैसे ख़ाविंद को मना करना चाहिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तमाम ख़्वातीन को अज़्दवाजी ज़िंदगी में ख़ुशियां नसीब फ़रमाए।

وآخر دعونا ان الحمد لله رب العلمين.

☆......☆......☆

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मियां बीवी के झगड़े

(शौहरों की ज़िम्मादारियां)

अज़ इफ़ादात

पीरे तरीकृत रहबरे शरीअ़त मुफ़क्किरे इस्लाम
महबूबुल उलमा वस्सुलहा

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद
मुजद्दिदी नक्शबंदी मद्दज़िल्लुहू

मियां बीवी के झगड़े
(शौहरों की ज़िम्मादारियां)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُوْنَ. وَسَلَامٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

आज का मौज़ूअ:

अज़्दवादी झगड़ों में अब तक यह उन्वान रहा कि बीवी की किन ग़लतियों की वजह से मियां बीवी के दर्मियान लड़ाई होती है, झगड़े होते हैं। आज की महफ़िल में हमने इस चीज़ को बयान करना है कि शौहरों से क्या कोताहियां सरज़द होती हैं कि बात झगड़ों तक पहुंच जाती है। उम्मीद है कि शौहर हज़रात बतौर ख़ास इन बातों को तवज्जोह से सुनेंगे।

बेहतरीन शख़्स कौन?

नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया:

"خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ"

तुम में से सबसे बेहतर वह है जो तुम में से अह्ले ख़ाना के लिये बेहतर है।

चुनांचे मर्द की अच्छाई का मेअ़्यार उसका बिज़नेस नहीं, उसका दफ़्तर नहीं, उसके दोस्तों की महफ़िल नहीं। मर्द की अच्छाई को परखने के लिये मेअ़्यार उसका अपनी बीवी से

तअ़ल्लुक़ है। अगर उसने उनको ख़ुश रखा, और उनके ग़म ख़त्म कर दिये, और उनको पुर सुकून ज़िंदगी देने की कोशिश की तो यक़ीनन यह अच्छा इंसान है। नबी अलै0 इसकी तसदीक़ फ़रमा रहे हैं। और नबी अलै0 ने यह भी फ़रमाया।

"اَنَا خَیْرُکُمْ لِاَهْلِیْ"

मैं तुम सब में से अपने अहले ख़ाना के लिये ज़्यादा बेहतर हूं।

गोया Practical (अमली) मिसाल भी नबी सल्ल0 ने दी।

ख़ाविंद के अंदर तहम्मुल और बर्दाश्त होनी चाहियेः

औरत को अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मर्द की पसली में से बनाया। इसका मतलब यह कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने न तो सर में से बनाया कि उसको सर पर बिठा के रखो, न उसको पांव से बनाया कि उसको पांव के नीचे रखो। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उसे पसली से बनाया कि यह तुम्हारे दिल के क़रीब है तुम इसको हमेशा अपने दिल के क़रीब रखो। इसलिये ख़ाविंद को मुतहम्मल मिज़ाज होना चाहिये क्योंकि वह घर का ज़िम्मादार है। ज़रा सी बात पर गुस्से में आ जाना, हर वक़्त गुस्से की ज़बान बोलना, हर वक़्त लहजा बदल कर बीवी से बात कहना, यह बेवक़ूफ़ मर्दों का काम होता है। यह कोई मर्दानगी नहीं होती। यह तो वही बात हुई कि जैसे किसी ने कहाः जी मुझे अपने से छोटों पर बड़ा गुस्सा आता है। जी हां अगर आप बड़ों के साथ गुस्सा करके दिखाएं तो वह आपकी तबीअ़त भी ठीक कर देंगे। तो कमज़ोरों पर गुस्सा आना कोई अच्छी अलामत नहीं है। उनके साथ तो रहमदिली का

मुआमला होना चाहिये।

घर के अंदर सौ छोटी मोटी बातें हो जाती हैं, ऐसी बातों को नज़र अंदाज़ कर जाना चाहिये। "किलियरेंस टॉलरेंस" (clearance & tolerance) (लचक और बर्दाश्त) का उसूल इस्तेमाल करना चाहिये। इंजीनियरिंग में यह उसूल बने हुए हैं, दुन्या में जितनी भी मशीनरी चल रही है उसकी fitting फ़िटिंग में हमेशा किलियरेंस टॉलरेंस का ख़्याल रखा जाता है। मसलन शाफ़्ट का साइज़ इतना हो तो बियरिंग का साइज़ इतना होगा। दो चीज़ों को आपस में फ़िट करना है उनके दर्मियान कितनी किलियरेंस होनी चाहिये। तो अगर मशीनरी ने फ़िट होना है, उसमें किलयरेंस और टॉलरेंस चाहिये तो दो इंसानों ने अपनी अज़्दवादी ज़िंदगी में फ़िट होना है तो उनको भी लचक और बर्दाश्त की ज़रूरत होती है। दरगुज़र से काम लेना चाहिये। कोई किसी मूड में है, कोई किसी मूड में है तो छोटी छोटी बातें का बतंगड़ बना लेना यह कभी भी अक़्लमंदी की बात नहीं होती। मर्द कितना बुरा लगता है कि छोटी सी बात से नाराज़ होकर बैठ जाए। इसलिये कहने वाले ने कहा:

"To run a big show one should have a big heart"

ज़्यादा बड़ा शो दिखाने के लिये दिल भी बड़ा करना पड़ता है।

शादी के बाद तो ख़ाविंद को अपना दिल बहुत बड़ा कर लेना चाहिये। अंग्रेज़ी का एक मक़ूला है कि

"High winds blow on high mountains"

ऊंचे पहाड़ों के ऊपर आंधियां भी ज़्यादा तेज़ चला करती हैं।

ज़िंदगी में ऊंच नीच तो होती है: कभी मां की तरफ़ से शिक्वे, कभी बहन की तरफ़ से शिक्वे, कभी बीवी की तरफ़ से शिक्वे, अब यह ज़िम्मादारी आदमी की बनती है कि उन्हें अच्छे तरीक़े से निभाए।

बीवी को मां के रहम व करम पर न छोड़ें:

कई ख़ाविंदों को देखा कि वह अपनी बीवी को मां के रहम व करम पर छोड़ कर खुद एक तरफ़ हो जाते हैं, इंतिहाई ग़ैर ज़िम्मादाराना बात है। हमेशा अपनी पोज़ीशन का ख़्याल रखना चाहिये। अगर महसूस कर रहे हों कि बीवी की ग़लती है तो उसको प्यार से समझाओ, अगर समझ रहे हों कि अम्मी ज़रूरत से ज़्यादा इस वक़्त उस पर सख़्ती कर रही हैं तो बड़े अदब के साथ अम्मी की ख़िदमत में गुज़ारिश करो, अपनी बीवी की वकालत करते हुए ज़रा भी न शर्माओ, इसलिये कि छोटी छोटी चीज़ें ही बाद में बड़ी बना करती हैं। तो बीवी की हिफ़ाज़त (Protect) करना ख़ाविंद की ज़िम्मादारी होती है। अब इसको यूं कहना कि भई मुझे नहीं पता बस तुम उन्हें खुश करो। तो बीवी कोशिश तो करेगी कि मेरे ख़ाविंद की वालिदा है मैं खुश करूं, मगर हमने कई मर्तबा देखा कि सास बड़ी घाग और तजुर्बाकार होती है। ऊंच नीच जानती है, वह ऐसे अपनी इनिंग्ज़ खेलती है कि उस लड़की को नॉक आउट करके रख देती है। तो इसमें ख़ाविंद की ज़िम्मादारी है कि वह अपनी पोज़ीशन का ख़्याल रखे और अगर देखता है कि अम्मी ज़रूरत से ज़्यादा सख़्ती कर रही है या अम्मी ने उसको टफ़ टाइम देना शुरू कर दिया है, मुश्किल में डाल दिया है तो

उनकी बातों को फिर खुद ब्लाक करे।

बीवी के लिये मकान का बंदोबस्त करें:

जब मर्द यह देखे कि मुशतर्का तौर रहने से बीवी के हुकूक़ का तहफ़्फ़ुज़ नहीं हो रहा। तो फिर अलग मकान हासिल करने की कोशिश करे। इसलिये कि शरीअ़त ने कहा है कि मर्द की ज़िम्मादारी है कि अपनी बीवी को अलग मकान या कोई कमरा लेकर दे जिस में वह कोई सुख का सांस ले सके। बीवी को सर छुपाने के लिये जगह लेकर देना शरअ़न ख़ाविंद की ज़िम्मादारी है। हमारे हज़रत रह0 फ़रमाया करते थे कि अल्लाह तआला ख़ाविंद को ज़रा भी गुंजाइश दे तो उसको अपनी ज़िंदगी में सबसे पहले मकान ख़रीदना चाहिये। बल्कि यहां तक फ़रमाते थे कि

لا ایمان لمن لا مکان (जिसका मकान नहीं उसका ईमान ही नहीं।)

तो एक दिन इस आजिज़ ने अ़र्ज़ किया कि हज़रत! यह इतनी बड़ी बात जो आप फ़रमाते हैं इसका बेक गाऊंड क्या है? हज़रत ने फ़रमाया, देखो! अगर किसी ख़ाविंद ने अपना घर नहीं ख़रीदा और उसकी बीवी किराए के मकान में रह रही है। अल्लाह न करे कि ख़ाविंद की वफ़ात हो जाए, कोई एक्सीडेंट हो जाए, तो किराए वाले तो उस औरत को वहां नहीं रहने देंगे, वह कहां से किराया देगी? तो जब वह उसका सामान उसके घर से निकालेंगे तो यह औरत परेशनी के आलम में कुफ़्रिया बोल बोलेंगी। उसका ईमान ही ख़तरे में हो जाएगा। तो इसलिये फ़रमाते थे कि ख़ाविंद की ज़िम्मादारी है कि औरत को सबसे पहले सर छुपाने की कोई जगह दे ताकि

उसमें वह अपनी ज़िंदगी गुज़ार सके।

बीवी का दिल जीतने की कोशिश करें:

याद रखें! जितना मुहब्बत व प्यार से मियां बीवी रहते हैं उतना ही अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उनसे खुश होते हैं। किसी ने कहा:

House is built by hands but home is built by hearts.

ईंटें जुड़ती हैं तो मकान बन जाते हैं, जब दिल जुड़ते हैं तो घर आबाद हो जाते हैं

लिहाज़ा बीवी के साथ खुश अख़्लाक़ी से रहना, ख़ाविंद की ज़िम्मादारी होती है। और खुश अख़्लाक़ी इसको नहीं कहते कि छोटी छोटी बातों पर इंसान डांट डपट करता फिरे, गुस्से होता फिरे, तेवरियां चढ़ाता फिरे, बोलना छोड़ दे, यह चीज़ें मियां बीवी के दर्मियान होता इंतिहाई बुरा होता है। याद रखें! जो ख़ाविंद प्यार के ज़रीए अपनी बीवी का दिल न जीत सका वह तलावार के ज़रीए भी बीवी का दिल नहीं जीत सकता। यह समझना कि मैं डांट डपट से सब सीधा कर दूंगा, यह हरगिज़ नहीं होता। हमने देखा है कि डांट डपट से उल्टा काम बिगड़ जाता है। बीवी सहम जाएगी, चुप हो जाएगी, लेकिन जब बीवी भी अपने ख़ाविंद के ख़िलाफ़ गोरीला जंग लड़ना शुरू कर देगी तो क्या फ़ाएदा? इसालिये मुहब्बत व प्यार ही अज़्दवाजी ज़िंदगी के लिये बेहतरीन अमल है। ख़ाविंद को यह बात ज़हन में बिठा लेनी चाहिये कि प्यार का तलवार से ज़्यादा कारगर होता है। वह प्यार से अगर अपनी बीवी को फ़ाइल नहीं कर सका तो फिर वह तलवार से भी बीवी को

क़ाइल नहीं कर सकेगा।

मुस्कुराने की सुन्नत को अपनाएं:

चुनांचे नबी सल्ल० की आदते मुबारका थी कि जब भी घर कोई चीज़ लाते थे, मुस्कुराते हुए आते थे और अपने अह्ले ख़ाना को सलाम किया करते थे। मुस्कुराते हुए आना और घर वालों को सलाम करना, यह अच्छे माहौल की इब्तिदा है। जब ख़ाविंद मुस्कुराता हुआ आएगा तो यक़ीनन बीवी भी मुस्कुराएगी, अब दोनों मुहब्बत व प्यार से रहेंगे।

मुस्कुराहट ने मुस्कुराहटें फैला दीं:

एक मर्तबा मेरे पास एक मियां बीवी का मुआमला आया। शादी को तीन साल हो चुके थे, दोनों लिखे पढ़े अच्छी फ़ैमली के बच्चे थे, दोनों बैअ़त थे और दोनों नेक भी थे। वह कहने लगे कि जी हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि हमारा गुज़ारा नहीं हो सकता। क्यों नहीं हो सकता? कहने लगे इसलिये कि बस हमारी तबीअ़तें नहीं मिलतीं। हम आपस में हर वक़्त बहस करते रहते हैं। कोई दिन ज़िंदगी का ऐसा नहीं कि हमारी आपस में बहस न हुई हो। हम तंग आ चुके हैं और हमने बड़े ठंडे दिल व दिमाग़ से सोचा है कि अभी तो उम्रें दोनों की ऐसी हैं कि कोई न कोई दूसरी सूरत भी बन जाएगी तो क्यों हम अपनी ज़िंदगियां बर्बाद करें? हम अपने मां बाप को बताना चाहते थे इससे पहले हमने आपको बताना मुनासिब समझा, चूंकि आप हमारी तरबियत के ज़िम्मादार हैं। मैंने उनसे चंद मिनट बात की और figure out (कुरैदा) कि मस्ला क्या है?

दरअसल उन दोनों के काम और कारोबार की पोज़ीशन

अच्छी नहीं थी। ख़ाविंद के एक दो मुआमलात फंस गए थे, कुछ अदाईगियां रुक गई थीं और वह बहुत टेन्शन में था। इसलिये जब दफ़्तर से घर आता था तो बहुत संजीदा होता था। बीवी खाना पका के घंटे दो घंटे से भूकी बैठी है कि ख़ाविंद आएगा, मैं मिल के खाना खाऊंगी। जब वह ख़ाविंद का चेहरा देखती कि इतना सीरियस! तो नतीजा यह निकालती कि शायद मैं अपने ख़ाविंद को पसंद ही नहीं हूं और जब वह यह सोचती कि मैं अपने मियां को पसंद ही नहीं तो उसे गुस्सा आता। चूंकि वह खूबसूरत भी थी, नेक भी थी, तअ़लीम याफ़्ता भी थी, अच्छे घराने की थी और उसकी फ़र्स्ट कज़िन भी थी। वह सोचती थी कि मेरे अंदर क्या कमी है कि यह ख़ाविंद मेरी तरफ़ प्यार से नहीं देखता? चुनांचे बीवी पीछे हट जाती, ख़ाविंद वैसे सीरियस होता और दोनों के दर्मियान एक दूसरे के साथ फिर खूब बहस मुबाहिसा होने लगता।

मैंने उनसे कहा कि देखें! आप लोग अपना यह फ़ैसला छः महीने के लिये रोक लें और मैं आप लोगों को एक काम ज़िम्मा लगाता हूं, आपने वह काम करने हैं। फिर छः महीने के बाद आप सोचना कि हम आपस में इकट्ठे रह सकते हैं या नहीं रह सकते। उन्होंने कहाः ठीक है। चुनांचे मैंने ख़ाविंद को कहाः जब आपने घर आना है तो नबी सल्ल0 की सुन्नत पर भी अमल करना है कि मुस्कुराते चेहरे के साथ आओ और अपने अह्ले ख़ाना को सलाम करो! तुमने इस सुन्नत को छोड़ा तो इसकी बेबरकती से तुम्हारे घर से खुशियां रूठ गईं। जब आप आया करो तो बिज़नेस की परेशानियां दफ़्तर में छोड़ कर आया करो। बीवी का कुसूर नहीं है कि तुम्हारा

बिज़नेस नहीं चल रहा। जब आओ तो (वह बेचारी घंटे दो घंटे से इंतेज़ार में है) चेहरे के ऊपर खुशी हो, खिला हुआ चेहरा हो। इंसान के मुहब्बत से अअ़साब छलक रहे हों तो। वैसे तो बड़ी सुन्नतों का ख़्याल करते हो तो इस सुन्नत का ख़्याल क्यों नहीं करते? जब उस नौजवान को यह बात समझाई तो वह कहने लगाः जी मैं इस सुन्नत पर ज़रूर अमल करूंगा। फिर मैंने बीवी को कहाः अब आप ने भी एक अमल करना है कि जब ख़ाविंद आए तो आपने हमेशा दरवाज़े पर ख़ाविंद का इस्तिक़बाल करना है और ख़ाविंद को मुस्कुरा कर देखना है, उसने कहाः ठीक है। मैंने कहा कि यह बात तो थी जो मैंने आपको सुन्नत के मुताबिक़ बताई। अब इस सूरते हाल में (जब आप लोगों की तबीअ़तें इतनी एक दूसरे से दूर हो चुकी हैं)। ख़ाविंद को एक अमल और बताता हूं और उसे गिनती समझ के करना पड़ेगा। मैंने कहाः आप जब भी घर आएं तो मियां बीवी ही तो घर में रहते हैं और तो कोई नहीं तो मुस्कुराते चेहरे के साथ आएंगे और जब घर में आएंगे तो आप अपनी बीवी को मुस्कुरा के देखकर उसका बोसा लेंगे। अब यह लफ़्ज़ सुनकर ख़ाविंद बड़ा हैरान होकर मेरी तरफ़ देखने लगा। मैंने कहाः तुम्हारी अपनी ही बीवी है, हैरान क्यों हो रहे हो? अब वह हैरान कि हज़रत क्या कह रहे हैं। मैंने कहा कि तुम्हें नफ़िलों का इतना सवाब नहीं मिलना जितना इस बोसे पर मिलना है। ख़ैर जब मैंने उसे ज़ोर देकर यह बात की तो उसने दिल के साथ कह दिया कि बहुत अच्छा। मैंने उसको खूब टाइट किया कि अगर तुमने यह अमल न किया तो इसका मतलब तुमने इस घर को आबाद करने के लिये

कोशिश ही नहीं की और ज़िम्मादार आप होंगे। वह कहने लगाः नहीं जी मैं इंशा अल्लाह इस पर अमल करूंगा।

तीन महीने के बाद दोनों ने हंसते मुस्कुराते फ़ोन किया। कहने लगेः हमें तो यूं लगा है कि हमने यह तीन महीने हनीमून की तरह गुज़ारे हैं। इसलिये कि जब ख़ाविंद घर मुस्कुराता हुआ आता था और बीवी को Kiss करता (बोसा लेता) था और बीवी भी मुस्कुराती थी तो फिर सारे घर में मुस्कुराहटें ही आ जाती थी Arguments (बहस व तकरार) ख़त्म ही हो जाते थे। तो कई दफ़ा एक छोटा सा अमल उजड़ते हुए घर के आबाद करने का सबब बन जाता है।

शौहर की नर्मी से बीवी की इस्लाहः

मेरे पास लाहौर का एक नौजवान आया। इंतिहाई नेक, तहज्जुद गुज़ार, मुत्तक़ी, परहेज़गार उसको बैअ़त हुए एक साल हुआ था मगर अल्लाह ने उसकी तबीअ़त में नेकी रख दी और वह ख़ूब तक़्वा की ज़िंदगी गुज़ार रहा था। आया तो बड़े गुस्सा में था। पूछा ख़ैर तो है? कहने लगाः बस क्या करूं बीवी ऐसी है कि दीन की तरफ़ आने को बिल्कुल तैयार ही नहीं। न टीवी छोड़ती है, न यह छोड़ती है, न वह छोड़ती है, पर्दे का ख़्याल नहीं करती, सलाम नहीं करती, उल्टा मैं दीन की बात करूं तो आगे से उल्टी बात कर देती है। मैं तंग आ चुका हूं, बस हज़रत आप मुझे बताएं कि मैं क्या करूं? अस्ल में अब वह मुझसे इजाज़त लेना चाहता था कि या तो मैं बीवी की पिटाई करूं या फिर बीवी को मैके भेज दूं। मैंने उससे बात की और उससे कहाः अच्छा बताओ तुम्हारी शादी कैसे हुई? पता चला कि यह साहब भी एक साल पहले वैसे ही थे।

और दोनों की आपस में "लव मैरिज" थी और दोनों का एक साल तक अफ़ेयर (मुआशिक़ा) चलता रहा। पसंद की शादी थी, तो मैंने उसे समझाया कि देखो! दोनों का बेक ग्राऊंड (पसमंज़र) एक ही जैसा था। फ़र्क़ यह कि आपको नेक महफ़िल मिली तो आप यक दम बदल गए। बीवी को न यह बयानात मिले, न यह सोहबतें मिलीं, न यह ख़ैर की बात सुनने का मौक़ा मिला, तो बीवी कैसे इतना जल्दी बदल जाएगी! वह तो टाइम लेगी तो क्यों इतना परेशान होते हो? कहने लगाः बस मैं क्या करूं बहुत ही बे दीन है, वह बहुत ही ज़्यादा फ़ासिक़ा है। वह बार बार यही बात कहे। मैंने कहाः अच्छा मैं आपके ज़िम्मा एक काम लगाता हूं। जी बताएं! तो मैंने कहाः अच्छा यह बताएं कि कभी खाना खाते हुए आपने अपनी बीवी के मुंह में लुक़मा डाला? कहने लगा नहीं। मैंने कहाः क्यों! क्या यह सुन्नत नहीं है? कहने लगाः अच्छा सुन्नत है? मैंने कहाः हां बिल्कुल जाओ और खाना खाते हुए मिठाई का डब्बा अगर दस्तरख़्वान पर पड़ा हो तो उसमें से एक गुलाब जामुन उठाकर उसके मुंह में डाल देना। अब उसकी सांस जैसे रुकी हुई है और मेरी तरफ़ देख रहा है, क्योंकि उसकी तबीअ़त में तो सख़्ती थी, वह तो पिटाई के मूड में आया था और आगे से उसको कोई और नुस्ख़ा मिल गया। वह बार बार मेरी तरफ़ देखे। हज़रत उसके मुंह में डालूं तो फिर क्या करना है?......जाओ जाकर इस पर अमल करो! जी हज़रत। फिर मैंने उसकी ख़ूब अच्छी तरह ख़बर ली और उसको समझाया कि दीनदार लोगों की बेजा तबीअ़त की सख़्ती अपनी बीवियों के बेदीन बनाने का बड़ा सबब होती है।

मैंने कहा कि यह कहां के अख़्लाक़ हैं! जो तुम समझते हो। बड़े तुम इक़ामते दीन की कोशिशें करते फिरते हो, जाओ! प्यारे से रहो, और कल मुझे आकर बताना कि मुंह में लुक़मा डाला। कहने लगाः ठीक है।

अगले दिन आया, अब चेहरे पर थोड़ी सी मुस्कुराहट थी। पूछा कि क्या हुआ कहने लगा कि हज़रत! दस्तरख़्वान लगा, पहले तो मैं खाना ही अलग खा लेता था, मैं पास बैठा, खाना खाने लगा। खाने के दौरान मैंने गुलाब जामुन उठाया और बीवी के मुंह की तरफ़ जो किया तो बीवी हैरान। मैंने उससे कहा कि मैं आपके मुंह में गुलाब जामुन रखना चाहता हूं। कहने लगा ख़ैर उसने ले लिया, लेकिन यक्दम उसकी हालत बदल गई। वह मुझे कहने लगीः यह तुमने कहां से सीखा? तो मैंने कहा कि मुझे आज पता चला कि यह सुन्नत है वह कहने लगीः अच्छा! सुन्नत इतनी अच्छी होती है? चुनांचे उसने दीन की बातें खुद पूछनी शुरू कर दीं और दस्तरख़्वान से उठकर उसने उस वक़्त की जो नमाज़ थी, उसको ख़ुद पढ़ा। जब ख़ाविंद की इतनी सी मुहब्बत देने पर वह बच्ची दीन के क़रीब आ गई और चंद महीनों में वह शरई पर्दा करने वाली, तहज्जुद गुज़ार लड़की बन गई, तो ख़ाविंद अगर मुहब्बत प्यार से रहे तो बीवी क्यों नहीं उसकी वजह से अपनी ज़िंदगी को बदलेगी? उमूमन दर्मियान में कोई न कोई मस्ला होता ह जो रुकावट बना होता है।

दिलों की एलफ़ी......शरीअ़तः

यह भी अक्सर देखा है कि नेक और दीनदार लोगों के घरों में आपस में मुहब्बत व प्यार होता है। यह दीन दिलों को

जोड़ता है अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

إِنَّ الَّذِيْنَ آمَنُوْ وَعَمِلُو الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا

“कि जो लोग ईमान लाकर नेक अअ़माल करें अल्लाह उनके दिलों में मुहब्बतें भर देंगे।”

इसलिये मैं नौजवान बच्चों को समझाता हूं कि अगर तुम पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ारना चाहते हो तो घरों में दीन का माहौल पैदा कर लो। दीनी माहौल की वजह से दिलों में मुहब्बतें पैदा हो जाएंगी। कई नौजवान आए, कहने लगे: जी क्या करें? हम मियां बीवी की बनती नहीं है। क्यों? बस जी हमारे दिल एक दूसरे से बहुत खट्टे हो गए। मैंने कहा: कि तुम दिलों की एलफ़ी इस्तेमाल करो। अब वह मुझे हैरान होकर देखने लगे कि कौनसी एलफ़ी इस्तेमाल करें? मैंने कहा कि हां! एलफ़ी चीज़ों को आपस में जोड़ देती है। इसी तरह एक एलफ़ी दिलों को भी जोड़ देती हे और वह एलफ़ी “शरीअ़त” है। तुम जाओ दीन वाली ज़िंदगी गुज़ारनी शुरू करो! अल्लाह तआला मियां बीवी के दिलों को इसी तरह जोड़ देंगे जैसे एलफ़ी दो चीज़ों को एक दूसरे से जोड़ देती है। और वाक़ई जो मुहब्बतें, जो प्यार दीनदार जोड़े आपस में करते हैं, फ़िस्क़ व फ़ुजूर में ज़िंदगी गुज़ारने वालों को इसका पता ही नहीं है। लेकिन कभी कभी ऐसा होता है कि बअ़ज़ दीनदार नौजवानों में तबीअ़त की सख़्ती आ जाती है। यह खुश्क मिला तौबा तौबा! ऐसा अजीब हाल होता है कि बस हर वक़्त रोअ़ब चला रहे होते हैं। उनको लहजा बदल कर बात करने की आदत हो जाती है, यह नार्मल मूड में बात ही नहीं करते और बात बात पर आयत पढ़ते हैं:

اَلرِّجَالُ قَوَّامُوْنَ عَلَى النِّسَاءِ

भई! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मर्द को घर में बड़ा बनाया मक़ाम दिया, मगर इसका यह मतलब तो नहीं कि बस तुम अब डंडा ही चलाना सीखो। तुम अपनी पोज़ीशन का ख़्याल रखो और यह देखो कि नबी सल्ल0 ने क्या फ़रमाया नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः

خیرکم خیرکم لاهله

तुम में से सबसे बेहतर वह है जो अपने अह्ले ख़ाना के लिये बेहतर है।

एक ख़ातून का अनोखा अंदाज़े शिकायतः

चुनांचे सय्यदना उमर रज़ि0 के पास उबई बिन कअ़ब रज़ि0 तशरीफ़ फ़रमा थे। एक ख़ातून आई और आकर कहने लगीः अमीरुल मोमिनीन! मेरा ख़ाविंद बहुत नेक है, सारी रात तहज्जुद पढ़ता रहता है, और सारा दिन रोज़ा रखता है, और यह कहकर ख़ामोश हो गई। उमर रज़ि0 बड़े हैरान कि ख़ातून क्या कहने आई है? उसने फिर यही बात दोहराई कि मेरा ख़ाविंद बहुत नेक है सारी रात तहज्जुद में गुज़ार देता है और सारा दिन रोज़ा रखता है। इस पर उबई बिन कअ़ब रज़ि0 बोलेः ऐ अमीरुल मोमिनीन! इसने अपनी ख़ाविंद की बड़े अच्छे अंदाज़ में शिकायत की है। कैसे शिकायत की? अमीरुल मोमिनीन! जब वह सारी रात तहज्जुद पढ़ता रहेगा और सारा दिन रोज़ा रखेगा तो फिर बीवी को वक़्त कब देगा? तो यह कहने आई है कि मेरा ख़ाविंद नेक तो है मगर मुझे वक़्त नहीं देता।

चुनांचे उमर रज़ि0 ने उसके ख़ाविंद को बुलाया तो उसने

कहाः हां मैं मुजाहिदा करता हूं, यह करता हूं, वह करता हूं। हज़रत उमर रज़ि0 ने हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि0 से कहा कि आप इनका फ़ैसला करें। हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि0 ने उन साहब से कहा कि देखो! शरअ़न तुम्हारे लिये ज़रूरी है कि तुम अपनी बीवी के साथ वक़्त गुज़ारो, हंसी ख़ुशी उसके साथ रहो, और कम अज़ कम हर तीन दिन के बाद अपनी बीवी के साथ हमबिस्तरी करो। ख़ैर वह मियां बीवी तो चले गए। तो उमर रज़ि0 ने उबई बिन कअ़ब रज़ि0 से पूछाः आपने यह शर्त क्यों लगाई कि हर तीन दिन के बाद बीवी से मिलाप करो? उन्होंने कहाः देखें! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मर्द को ज़्यादा से ज़्यादा चार शादियों की इजाज़त दी। चुनांचे अगर चार शादियां भी किसी की हों तो तीन दिन के बाद फिर बीवी का दिन आता है। तो मैंने उसे कहा कि तुम ज़्यादा से ज़्यादा तीन दिन इबादत कर सकते हो तीन दिन के बाद एक दिन रात तुम्हारी बीवी का हक़ है, तुम्हें गुज़ारना पड़ेगा। तो देखो शरीअ़त इंसान को क्या खूबसूरत बातें बताती है।

नबी सल्ल0 का अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात से रवय्याः

नबी सल्ल0 अपने अह्ले ख़ाना के साथ बहुत मुहब्बत प्यार से रहते थे। उनसे उनकी दिल लगी की बातें करते थे। आप सोचिये कि नबी सल्ल0 के दिल में जहन्नम का क्या नज़ारा होगा, जिसे आंखों से देखा। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ख़ौफ़ और ख़शियत का क्या आलम होगा! नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः लोगो! मैं तुम में से ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला हूं। वह अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 जिन्होंने जहन्नम को आंखों से देखा, जो अल्लाह की अज़मत से वाक़िफ़ थे, उनके

दिल पर किस कृद्र अल्लाह की अज़मत का मुआमला रहता होगा! लेकिन वह अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 जब अपनी बीवी के पास तशरीफ़ लाते थे तो उनसे दिल लगी की बातें करते थे। अहादीस में बहुत से ऐसे वाक़िआत मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि नबी, अज़्वाजे मुतह्हरात से दिललगी और उनकी दिलजूई फ़रमाया करते थे।

☆......एक मैदाने जंग से वापसी का वक़्त था। उस वक़्त औरतें अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ होने के लिये अपने ख़ाविंदों के साथ बाहर निकल जाती थीं। ट्वाइलट तो बने नहीं होते थे। नबी सल्ल0 अपने अह्ले ख़ाना के साथ गए। रात का वक़्त था, खुला मैदान था, नबी सल्ल0 अपनी अहलिया को फ़रमाते हैं: हुमैरा! आओ दौड़ लगाएं। अब देखें! कितनी अजीब बात लगती है। चुनांचे नबी सल्ल0 अपनी अहलिया के साथ दौड़ने लगे और नबी सल्ल0 ने उनको जीतने दिया। जब वह जीत गईं तो बहुत ख़ुश हो गईं। नबी सल्ल0 ख़ामोश हो गए। अंदाज़ा लगाइये कि बीवी को ख़ुश करने के लिये अगर अल्लाह के हबीब सल्ल0 इस दौड़ में थोड़ी देर के लिये पीछे रह सकते हैं तो क्या आम ख़ाविंद अपनी बीवी के लिये ख़ामोश नहीं हो सकता? कुछ अर्से के बाद दोबारा फिर इसी क़िस्म की सूरते हाल हुई। नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: आइशा! दौड़ें। फिर जब दौड़ लगाई तो अब अल्लाह के नबी सल्ल0 आगे बढ़ गए, और मुस्कुरा के फ़रमाया: ”حميرا!! تلك وتلك“ पहले तुम जीत गई थी अब मैं जीत गया। मैंने तुम्हारा हिसाब बराबर कर दिया। तो देखो! बीवी की दिल लगी के लिये ऐसी बातें हैं।

☆……एक मर्तबा ईद का दिन था, बाहर कुछ हब्शी नौजवान खेल रहे थे, दौड़ रहे थे। तो नबी सल्ल0 ने आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि0) से फ़रमायाः कि आइशा! क्या आप यह खेल देखना चाहोगी? फ़रमायाः जी देखना चाहूंगी। तो आप सल्ल0 इस तरह खड़े हो गए कि आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि0) को अपनी ओट में ले लिया और आप सल्ल0 के बाजू पर आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 ने अपनी थोड़ी रखी और इस तरह वह खेल देखने लगीं। नबी सल्ल0 कुछ देर बाद पूछते कि तुम देख रही हो बस करें! फ़रमायाः नहीं अभी और देखना चाहती हूं। दो तीन मर्तबा ऐसा हुआ। नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः तुम्हें यह खेल बहुत अच्छा लगा। अब देखिये! कि अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 (पर्दे की आयत नाज़िल होने से पहले यह खेल खुद अपनी बीवी को दिखा रहे हैं।)

☆……चुनांचे आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 को नबी सल्ल0 ने नौ औरतों की कहानी सुनाईः कि कुंवें पर पानी भरने के लिये नौ औरतें इकट्ठी हुईं। एक ने कहा कि तुम बिल्कुल आज खरी खरी बात सुना दो! तो एक ने कहाः मेरा ख़ाविंद ऐसा है, ऐसा है। दूसरी ने कहाः मेरा ख़ाविंद ऐसा……तीसरी ने कहा ऐसा……अब देखो! अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 अपनी बीवी को इन औरतों की कहानी सुना रहे हैं और फ़रमाया कि उनमें से एक औरत "उम्मे ज़रअ़" थी। उसने अबू ज़रअ़, के बारे में कहा कि वह मुझे इतना मुहब्बत से रखता है, वह मुझे इतना खिलाता है, उसने मुझे सोने से लाद दिया, उसने मुझे इतनी मुहब्बत दी। यह बातें सुना कर नबी सल्ल0 ने फ़रमाया, आइशा! अबू ज़रअ़, उम्मे ज़रअ़ से जितनी मुहब्बत करता था

मैं उससे ज़्यादा तुमसे मुहब्बत करता हूं। अब बताएं कि ख़ाविंद अगर ऐसी बात बीवी से करेगा तो उसकी ज़िंदगी में तो खुशियां आ जाएंगी। उसको तो अपना घर बसता नज़र आ जाएगा।

☆......नबी सल्ल0 की सवारी एक दफ़ा जा रही थी। आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि0) दूसरे ऊंट पर सवार थीं। (अल्लाह की शान) वह ऊंट भाग गया। तो नबी सल्ल0 ने जब देखा कि वह ऊंट भाग रहा तो फ़रमायाः واعروساهٗ (हाए मेरी दुल्हन)। अब अंदाज़ा लगाइये कि अल्लाह के हबीब सल्ल0 का वह शादी का दिन नहीं था, सालों गुज़र गए थे शादी को, उस वक़्त जब आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 का ऊंट भागा तेज़ी के साथ तो नबी सल्ल0 फ़रमाते हैं واعروساه हाए मेरी दुल्हन। तो जब ख़ाविंद इस तरह बीवी के साथ प्यार करे तो बीवी क्यों नहीं घर को आबाद करेगी।

☆......"अंजशा रज़ि0 सहाबी" हैं वह ख़्वातीन के ऊंटों की महार पकड़ के चल रहे थे। तो उन्होंने ज़रा तेज़ चलना शुरू कर दिया। उनके पीछे ऊंटों ने भी भागना शुरू कर दिया। नबी सल्ल0 ने जब देखा कि ऊंट तेज़ी से भाग रहे हैं तो अंजशा रज़ि0 को फ़रमाया कि ऊंटों को आहिस्ता चलाओ! उसके ऊपर हमारे आबगीने सवार हैं। कि जैसे शीशे की बनी हुई चीज़ को ज़रा नाज़ुक होने की वजह से प्यार से हेंडल करना चाहिये तो अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 ने यह लफ़्ज़ इस्तेमाल किया। आप सोचिये! जो अल्लाह के प्यारे महबूब सल्ल0 ऊंट को तेज़ चलाकर भी उनको तकलीफ़ नहीं देना चाहते वह अपनी बीवियों को कितना खुश रखते होंगे!

चुनांचे हज़रत डाक्टर अब्दुल हई साहब रह० की बीवी उनके बारे में फ़रमाया करती थीं कि उन्होंने पूरी ज़िंदगी कभी मुझसे लहजा बदल कर ही बात नहीं की। क्या हुस्ने मुआशिरत है! क्या हुस्ने अख़्लाक़ है! फ़रमाती हैं नाराज़ होना, गुस्से होना तो बड़ी दूर की बात है। उन्होंने कभी मेरे साथ लहजा बदल कर बात नहीं की। हमेशा मुहब्बत प्यार के लहजे में बात करते थे।

शादी के पहले और बाद नौजवानों की सोच में फ़र्क़:

यह नौजवान जब कुंवारे होते हैं उस वक़्त उनकी सबसे बड़ी तमन्ना होती है कि शादी हो जाए, बीवी मिल जाए। एक दूसरे के पास बैठते हैं कहते हैं जी।

(बीवी के बग़ैर कोई ज़िंदगी नहीं) "No life without wife."

उस वक़्त उनको बीवी का इतना इंतेज़ार होता है। हर वक़्त वही सोचें, हर वक़्त वही बातें, वही नौजवानों का हंसी मज़ाक़। उस वक़्त समझते हैं पता नहीं यह क्या नेअ़मत है! अल्लाह मुझे जल्दी दे दे। चुनांचे एक नौजवान कहने लगा कि मुझे मौत से मुहब्बत ही इसलिये है कि वह आती है, आता नहीं है। तो जब कुंवारे थे तो फिर इतना शौक़ कि हाए अल्लाह मुझे यह नेअ़मत दे दे। और जब वह बीवी घर में आ जाती है तो अब उनको सख़्तियां याद आ जाती हैं। उस वक़्त भी मुहब्बत प्यार से रहें।

बअ़ज़ शौहर दिल जलाते हैं:

और आजकल के ख़ाविंद तो दिल जलाते हैं, शादी हुई और बस। कई लोग तो ऐसे होते हैं जो खुद फ़िस्क़ व फुजूर

में पड़ जाते हैं, ग़ैर औरतों की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाते हैं। मियां बीवी के झगड़ों की पचहत्तर फ़ीसद जो वुजूहात हैं उनमें से एक वजह कि शादी के बाद नौजवान मर्द ग़ैर लड़कियों के साथ Involve (मुंसलिक) हो जाते हैं। और अपनी बीवी को Ignore (नज़र अंदाज़) कर देते हैं। घर वक़्त नहीं देते, घर आते हैं तो उनको नींद आई हुई होती है। बीवी से बात करने की फ़ुर्सत नहीं होती, वह बात भी करती है तो वह दो लफ़्ज़ों में जवाब दे देते हैं। कहीं बैठे होते हैं, बीवी फ़ोन करती है......अच्छा तुम मुझे काम नहीं करने दे रही और काम क्या होते हैं बैठे मेसेज कर रहे होते हैं। यह किस क़द्र जुल्म है! जिसको यह निकाह के बाद अपने घर लाए। जिन मुहब्बतों की वह हक़दार थी अब उन्होंने वह मुहब्बतें ग़ैर लड़की के लिये इस्तेमाल करन शुरू कर दीं। जब जी भरा हुआ हो तो किसी के सामने बिरयानी भी रख दो तो उसका जी नहीं चाहता बिरयानी को हाथ लगाने को। उनका यही हाल होता है कि बाहर फ़ोन करके, बातें करके I miss you (मैं तुम्हारे बग़ैर रह नहीं सकूंगा) कहकर अपनी मुहब्बतों के जज़्बे पूरे करके आते हैं। घर आते हैं तो बीवी बिरयानी की तरह भी हो तो भी उनका देखने को दिल नहीं करता। यह इन झगड़ों की बुन्यादी वजह है नौजवान लड़कों को चाहिये कि वह अपनी ज़िम्मादारियों को देखें। घर में आकर उनका दिल न दुखाएं बल्कि दरगुज़र से काम लें।

बीवी की नाज़ बरदारी भी होनी चाहिये:

शरीअ़त ने कहा है कि बीवी का चूंकि ख़ाविंद के साथ प्यार का तअ़ल्लुक़ है, मुहब्बत का तअ़ल्लुक़ है। अब इस

मुहब्बत में कई मर्तबा बीवी में नाज़ भी आ जाता है तो एतिदाल के साथ बीवी के नाज़ को भी बर्दाश्त कर लेना चाहिये और इस पर सब्र करना चाहिये। चुनांचे अल्लाह के प्यारे महबूब नबी सल्ल0 और आइशा सिद्दीका (रज़ि0) के दर्मियान कोई बात हो गई। अभी यह बात चल रही थी कि उधर से सिद्दीके अक्बर रज़ि0 तशरीफ ले आए। नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: अबू बक्र! तुम अच्छे वक्त पर आए, आओ! हम तुम्हें कहते हैं कि तुम हमारे दर्मियान एक बात का फैसला करो। तो सिद्दीके अक्बर रज़ि0 ने फ़रमाया: ठीक है जी। तो फ़रमाया कि कौन बात करेगा? तो नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि मैं बात करता हूं मैं बताता हूं कि क्या हुआ। तो आइशा सिद्दीका (रज़ि0) ज़रा गुस्से में थीं, कहने लगीं कि हां ठीक है, आप ही बात करें मगर ठीक ठीक बात करें। अब जब अबू बक्र रज़ि0 ने यह सुना कि बात आप फ़रमाएं लेकिन ठीक ठीक बात करें, तो उन्होंने आइशा सिद्दीका (रज़ि0) को एक ज़ोर का थप्पड़ लगाया। कहने लगे तुझे तेरी मां रोए, क्या अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 ठीक बात नहीं करेंगे? अब जब थप्पड़ लगा तो बैठी थीं, जल्दी से नबी सल्ल0 के पीछे छुप गईं कि दूसरा न पड़ जाए। तो नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: अबू बक्र! हमने तो आपको फैसला के लिये बुलाया था, यह तो नहीं कहा था कि मारना ही शुरू कर दें। आप जाएं, हम अपना मुआमला खुद सुलझा लेंगे। चुनांचे सिद्दीके अक्बर रज़ि0 वहां से चले गए। जैसे ही वह गए आइशा सिद्दीका (रज़ि0) आपके पीछे से दूसरी तरफ आईं। नबी सल्ल0 ने मुस्कुरा कर देखा और फ़रमाया: देखा! दूसरे थप्पड़ से तो मैंने ही तुम्हें बचाया

है। अब इतनी सी बात पर फिर मुहब्बत प्यार की ज़िंदगी। तो मअ़लूम हुआ कि बीवियों के साथ तहम्मुल मिज़ाजी के साथ रहना चाहिये और एतिदाल के साथ उनके नाज़ और नख़्रे को भी बर्दाश्त कर लेना चाहिये।

सास के सोचने का अजीब अंदाज़:

अब सास को यह चीज़ बुरी लगती है, मगर वह अपनी ज़िंदगी पर नज़र दौड़ाए ताकि जब वह बहू थी तो वह कितने नाज़ किया करती थी! अब चूंकि बूढ़ी हो गई इसलिये उसको यह चीज़ें अच्छी नहीं लगती। फिर वह बेटे को समझाती रहती है कि क्या तुम्हारी बीवी बनी रहती है! क्या तुम बीवी के साथ बैठे रहते हो! अस्ल में वह नहीं बोल रही होती, बेचारी का बुढ़ापा बोल रहा होता है। तो मैं समझता हूं कि सास भी बेचारी बेकूसर ही होती है वह ख़ुद नहीं बोल रही होती, उसका बुढ़ापा बोल रहा होता है। अगर वह इस उम्र में होती जिस उम्र में अब यह बच्चे और बच्चियां हैं तो उसकी सोच की फ्रीक्वेन्सी भी मुख़्तलिफ़ होती।

हज़रत थानवी रह० का अपनी अज़्वाज से रवय्या:

हज़रत थानवी रह० फ़रमाते हैं कि औलाद न होने की वजह से दूसरी शादी करनी पड़ी। तो बीवियों के अंदर एक दूसरे के साथ आपस में मुआमला चलता ही है, कभी यह नाराज़ और कभी वह नाराज़। फ़रमाते हैं! कई दफ़ा ऐसा होता कि मैं एक घर जाता तो दरवाज़े को कुंडी लगी हुई होती, वह खोलती ही नहीं थी। तो मैं वहीं दरवाज़े पर मुसल्ला बिछा कर नमाज़ पढ़ लेता और वापस आ जाता था। यह हकीमुल उम्मत रह० हैं! जिनको अल्लाह ने इल्म का समंदर

बनाया था।

फ़रमाते हैं: एक मर्तबा मेरी बड़ी घर वाली कहीं जाने लगीं और मुझे कह गईं कि घर में मुर्ग़ियां पाली हुई हैं तो उनको अपने वक़्त पर दाना पानी डाल दीजियेगा। मैंने कहा बहुत अच्छा। फ़रमाते हैं कि मुझे बात ही भूल गई। अब मैं तफ़सीर (बयानुल क़ुर्आन) लिखने जो बैठा तो कोई मज़मून वारिद नहीं हो रहा, बड़ी अल्लाह तौबा की बड़ी दुआएं मांगीं मगर तबीअ़त में कोई इंशिराह ही नहीं हो रहा, आमद का सिलसला बिल्कुल बंद था। काफ़ी देर के बाद फ़रमाने लगे कि हो न हो, कोई मुझसे ऐसी कोताही हुई, गुनाह हुआ जिसकी वजह से जो रोज़ मुझ पर इल्म आता था, अल्लाह ने मुझे उस मअ़रिफ़त से आज महरूम कर दिया। कहने लगे: मैं बैठ कर सोचने लगा तो अचानक मुझे ख़्याल आया कि ओ हो! मैंने तो मुर्ग़ियों को आज दाना भी नहीं डाला। फ़रमाते हैं: मैं उठ कर फ़ौरन घर गया, मुर्ग़ियां भूकी प्यासी थीं, मैंने दाना डाला, उनको पानी दिया। जब मुर्ग़ियों ने वह पानी पिया और दाना खाया, अल्लाह ने मज़ामीन फिर वारिद करने शुरू कर दिये और फिर मैंने आके अल्लाह के क़ुर्आन की तफ़सीर लिखी। अगर मुर्ग़ियों को तकलीफ़ पहुंचे तो अल्लाह तआला अपनी मअ़रिफ़त के इल्म को रोक लेते हैं। जो अपनी बीवी का दिल दुखाएगा वह अल्लाह की मअ़रिफ़त कैसे पाएगा? तो दीनदार लोगों को इस बात का ख़्याल रखना चाहिये।

बीवी को मुआफ़ करने पर एक शख़्स की बख़्शिश:

हज़रत थानवी रह0 ने यह वाक़िआ लिखा है कि एक शख़्स की बीवी से कोई ग़लती कोताही हुई अब वह उसे सज़ा

देता तो हक़ बजानिब था। मगर उसने, उसको अल्लाह की बंदी समझ कर मुआफ़ कर दिया। कुछ अर्से के बाद ख़ाविंद की वफ़ात हुई, किसी ने ख़्वाब में पूछाः सुनाओ! क्या हुआ? कहने लगाः अल्लाह के हुज़ूर पेशी हुई, फ़रमाया कि तूने इस मौक़ा पर अपनी बीवी को मेरी बंदी समझ के मुआफ़ कर दिया था, आओ! आज मैं तुम्हें अपना बंदा समझ के मुआफ़ कर देता हूं। अल्लाहु अक्बर कबीरा। इससे अंदाज़ा लगाइये कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस बात को कितना पसंद करते हैं।

अबुल हसन खुरक़ानी रह0 की करामतः

चुनांचे अबुल हसन ख़ुरक़ानी रह0 शेर की सवारी करके आ रहे थे। किसी ने पूछाः हज़रत! आप को यह करामत कैसे मिली कि शेर पर सवार होते हैं? फ़रमाने लगेः घर में मेरी बीवी तेज़ मिज़ाज की है, मैं उसकी तल्ख़ मिज़ाजी पर सब्र कर लेता हूं तो अल्लाह का शेर मेरे बोझ को उठाने पर सब्र कर लेता है।

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां रह0 को मक़ाम कैसे मिला?

हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां रह0 बहुत ही ज़्यादा नाज़ुक मिज़ाज थे उनके तो वाक़िआत बहुत ही ज़्यादा हैं, मगर रूहानी मक़ाम इतना था कि शाह वली अल्लाह देहलवी रह0 फ़रमाते थेः अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझे ऐसा कश्फ़ दिया कि मैं पूरी दुन्या को इस तरह देखता हूं जैसे हथेली पर पड़े हुए किसी दाने को देखता हूं। यह शाह वली अल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह0 ने लिखा है और फ़रमाते हैं कि इस कश्फ़ के हासिल होने के बाद मैं यह कहता हूं कि इस वक़्त

पूरी दुन्या में मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां जैसे दूसरा कोई बुज़ुर्ग मौजूद नहीं। तो जिनके बारे में एक मुहद्दिस, मुफ़स्सिर यह कह रहे हो, उस मिर्ज़ा मज़हर जाने जानां रह० को जो यह मक़ाम मिला, इसकी बुन्यादी वजह यह थी कि उनकी बीवी ज़रा तेज़ ज़बान की थी। बात बात पर सख़्त लफ़्ज़ बोल देती थी, तो उन्होंने अपनी बीवी के इस ईज़ा पर सब्र किया, अल्लाह ने उनको विलयात का इतना ऊंचा मक़ाम अता फ़रमा दिया।

चुनांचे नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः

يَغْلِبْنَ كَرِيْمًا وَيَغْلِبُهُنَّ لَئِيْمٌ

करीम लोगों पर यह ग़ालिब आ जाती हैं और कमीने लोग उन पर ग़ालिब आ जाते हैं।

فَأُحِبُّ اَنْ اَكُوْنَ كَرِيْمًا مَغْلُوْبًا وَلَا اُحِبُّ اَنْ اَكُوْنَ لَئِيْمًا غَالِبًا

मैं यह पसंद करता हूं कि मैं करीम बनूं अगर्चे मग़लूब हो जाऊं लेकिन यह पसंद नहीं करता कि बदअख़्लाक़ बनूं और उन पर ग़ालिब हूं। (रूहुल मआनीः जि० 5, स०14)

तो करीमी और नर्मी को इतना पसंद फ़रमाया कि मैं चाहता हूं कि मैं करीम बन कर रहूं, अगर्चे मेरी बीवी मुझ पर ग़ालिब ही क्यों न आ जाए। यह अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल० फ़रमा रहे हैं।

बीवी को कुछ ज़ाती ख़र्चा भी देना चाहियेः

बअ़ज़ औक़ात झगड़े की एक बुन्यादी वजह यह भी होती है कि ख़ाविंद अपनी बीवी को ख़र्च के लिये मुनासिब पैसे ही

नहीं देते। कारोबार भी है, मगर घर में कंजूस बने हुए होते हैं। अब ज़रूरत की चीज़ भी न लाकर देना, या बीवी कहे! फलां चीज़ की घर में ज़रूरत हे। और वह भूल ही जाना, जो मर्दों का शेवा है तो यकीनन यह झगड़े का सबब बनेगा। तो एतिदाल के साथ उसकी ज़रूरियात को पूरा करना, उसको कपड़ा जूती लेकर देना, ज़रूरत की चीज़ लेकर देना, अच्छा खाना लेकर देना, यह ख़ाविंद का फ़र्ज़े मंसबी होता है। शरीअ़त ने यह कहा कि घर के ख़र्च अख़्राजात तो अपनी जगह, अपनी हैसियत के एतिबार से ख़ाविंद हर महीने बीवी का जेब ख़र्च मुतअ़य्यन कर दे, और देने के बाद उसको भूल जाए। इसके बारे में यह मत पूछे कि कहां लगाया? शरीअ़त का हुस्न देखिये! शरीअ़त की खूबसूरती देखिये! क्यों? इसलिये कि बीवी के अपने तो ज़राए अमदन होते नहीं है। उसे तो अपने ख़ाविंद पर इंहिसार करना पड़ता है। अब ख़ाविंद से एक पैसा भी ज़रूरत के लिये नहीं देता तो ज़ाती ज़रूरत की चीज़ें वह कैसे ले सकेगी? फिर उसके पास उसकी बहन का बेटा आया, भाई का बेटा आया, कोई बच्चा आया, यह ख़ाला है, फूफी है इसका भी जी चाहता है मैं किसी को खिलौना लेकर दूं, किसी को गिफ़्ट लेकर दूं, प्यार से किसी को हदिया दूं तो क्या यह अपने ख़ाविंद से हर वक़्त भीक मांगती रहेगी? तो शरीअ़त ने कहा कि तुम बीवी के लिये अपनी हैसियत के एतिबार से जेब ख़र्च मुतअ़य्यन कर दो, उसको ख़र्चा देना शुरू कर दो! मगर उसके बारे में मत पूछो कि उसने कहां ख़र्च किया? हो सकता है, उसका दिल चाहे वह अपनी ग़रीब पड़ोसन, किसी ग़रीब सहली की मदद करना चाहे, अल्लाह के

रास्ते में ख़र्च करना चाहे, तो वह कर सके। तो शरीअ़त कहती है कि एतिदाल के साथ बीवियों को कुछ ख़र्च देना ज़रूरी होता है। चुनांचे ख़ाविंदों को चाहिये कि अपनी बीवियों का माहाना मुतअ़य्यन करें।

चंद दिन हुए एक बिज़नेस मैन के पास बैठे हुए थे बात करते करते वह कहने लगा कि हज़रत! बीवी बहुत महंगी होती है। उसकी बात सुन कर मुझे हैरानी हुई कि अल्लाह तआला ने इस बंदे को इतना दिया कि मेरे ख़्याल में अगर यह चाहे तो हर महीने लाखों ख़र्च कर सकता है मगर इसकी बात देखें कि कहने लगाः हज़रत बीवी बहुत महंगी होती है। पैसे की मुहब्बत का यह हाल।

बीवी को अपने मां बाप से मिलने में रुकावट डालेः

एक झगड़े की वजह यह भी होती है कि जब शादी हो जाती है तो ख़ाविंद अपनी बीवी को अपने मां बाप से भी कई दफ़ा मिलने की इजाज़त नहीं देते। बस जी काम हैं, बस मसरूफ़ हैं। कभी गुस्सा से रोक देते हैं, कभी मुहब्बत से। एक हाफ़िज़ साहब थे नौ साल से अपनी बीवी को अपने मां बाप से नहीं मिलने दिया। ख़ुद इमारात में रहते थे और उसके मां बाप इंडिया में थे। अब वह बच्ची आलिमा भी है, आमिला भी है, तक़िया, नक़िया भी है, बहुत अच्छी इबादत गुज़ार बच्ची, मगर दिल से इतनी दुखी हालांकि ख़ाविंद भी दीनदार हाफ़िज़ था। बीवी जब भी कहतीः मेरा बहुत दिल चाहता है कि मैं अम्मी के पास जाऊं तो वह कहते क्या करूं मेरा तुम्हारे बग़ैर गुज़ारा नहीं होता। मुझे अंदाज़ा हुआ तो मैंने उनको कहाः हाफ़िज़ साहब नौ साल गुज़र गए, बेटी है, उसका

दिल चाहता है कि मैं मां बाप से मिलूं, तो आप जाने दें। तो कहने लगेः हज़रत! क्या करूं मुझे इसके बग़ैर नींद नहीं आती। मैंने कहाः बहुत अच्छा तुम्हें नींद नहीं आती, आप अपनी जाब से एक महीने की छुट्टी लो! और खुद भी उसके साथ जाओ! और एक महीना वहीं पर रहो! अब हाफ़िज़ साहब की आंखें खुलीं। चुनांचे जब उसने देखा कि हज़रत साहब सीरियस हैं। अब उसने वाक़ई एक हफ़्ता की छुट्टी ली और अपनी बीवी को लेकर गया और जाकर अपनी बीवी को वालिदैन से मिला कर लाया। जबकि इस नौ साल में वह दो दो दर्जन दफ़ा अपने वालिदैन से मिल कर आया था। तो अपने वालिदैन से मिलने के लिये वक़्त है, उस वक़्त नींद कैसे आ जाती है भई? यह बेवक़ूफ़ियां होती हैं कि अपने महरम रिशतादरों से बाप से, मां से, बहन से भाई से भी उसको मिलने न देना। हमने घर में कोई जानवर पाला हुआ है! उसको इंसान समझिये और उसकी ज़रूरतों को महसूस कीजिये! यह ख़ाविंद की ज़िम्मादारी होती है। याद रखें! कि शादी से पहले ख़ाविंद की एक मां और एक बाप, और शादी के बाद अब सास और सुसर, उसके लिये मां और बाप का हुक्म रखते हैं। अगर यह उसको उसके मां बाप से नहीं मिलने दे रहा तो गोया अपने मां बाप से नहीं मिलने दे रहा है।

झगड़ों की एक बड़ी वजह......बुढ़ापाः

फिर शादी के झगड़ों में एक बड़ी वजह बुढ़ापा होता है। यह एक अजीब ज़िंदगी का वक़्त होता है जिसमें तबीअ़तों के अंदर बहुज ज़्यादा सख़्ती आ जाती है और तबीअ़तें हस्सास

हो जाती हैं। चुनांचे अगर औरतें बूढ़ीं हों या मर्द बूढ़े हों, ज़रा ज़रा सी बात पर नाराज़ हो जाते हैं। हमने बअ़ज़ बूढ़ों को देखा कि वह हवा को गालियां दे रहे होते हैं। तबीअ़त ऐसी हस्सास हो गई।

हमारे हज़रत रह० फ़रमाते थे कि एक बूढ़ा, डाक्टर के पास गया कहने लगा, डाक्टर साहब! मेरी बीनाई कमज़ोर हो गई, उसने कहाः बुढ़ापा है। डाक्टर साहब! मुझे ऊंचा सुनता है, उसने कहा बुढ़ापा है। डाक्टर साहब! मेरे तीन चार दांत भी गिर गए हैं, बुढ़ापा है। डाक्टर साहब! मुझे खाना भी हज़म नहीं होता, बुढ़ापा है। जब डाक्टर ने बार बार कहा कि बुढ़ापा है तो बूढ़े मियां को गुस्सा आया। उसने कहाः यह क्या हर बात पर बुढ़ापा है, बुढ़ापा है? डाक्टर ने कहाः बड़े मियां यह भी बुढ़ापा है। तो बुढ़ापे में बंदे की तबीअ़त ऐसी हो जाती है। मियां बीवी की अक्सर लड़ाईयां इस उम्र में होती हैं जब उनको एक दूसरे की तबई ज़रूरत कम हो जाती है, यअ़नी एक दूसरे की ज़रूरत नहीं रहती तो उनके यह झगड़े बहुत बढ़ जाते हैं।

चुनांचे एक साहब ने कहा कि जब मेरी शादी हुई तो मैं बोलता था और बीवी सुनती थी। फिर बच्चे हो गए और मां के वोट बढ़ गए, फिर बीवी बोलती थी और मैं सुनता था। फिर हम दोनों बूढ़े हो गए तो फिर हम दोनों बोलते थे और मुहल्ले वाले सुनते थे। तो बुढ़ापे की लड़ाईयां ऐसी ही होती हैं।

शरीअ़त का हुस्न व जमाल देखिये कि शरीअ़त ने मियां बीवी के तअ़ल्लुक़ में दो लफ़्ज़ इस्तेमाल किये। इर्शाद

फ़रमायाः

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ.

अल्लाह तआला की निशानियों में से यह है कि उसने तुम में से तुम्हारे लिये जोड़ा बनाया, ताकि तुम उनसे सुकून हासिल कर सको। और तुम्हारे दर्मियान मुवद्दत व रहमत रख दी। बेशक इसमें निशानियां हैं अक्ल वालों के लिये।

मुफ़स्सिरीन ने नुक्ता लिखा कि "मुवद्दत" जवानी में होती है। जवानी की उम्र में एक दूसरे की ज़रूरत भी होती है। मियां बीवी लड़ भी पड़ते हैं तो रात को फिर एक होते हैं। मियां बीवी नाराज़ भी होते हैं तो एक दूसरे की ज़रूरत उनको फिर मनवाने पर मजबूर कर देती है। यह मुवद्दत होती है। लेकिन जब बूढ़े हो जाते हैं तो एक दूसरे की जो तबई ज़रूरत होती है वह तो नहीं रहती। वह तअ़ल्लुक़ तो बहुत कमज़ोर हो जाता है। तो अब दोनों को जोड़ने के लिये क्या चीज़ है? तो फ़रमाया कि तुम्हारे दर्मियान रहमत का तअ़ल्लुक़ भी रख दिया। रहमत का क्या मतलब? कि ख़ाविंद अगर बूढ़ा हो गया तो बीवी यह सोचे कि मैं जब आई थी तो यह कितना नौजवान था, इसने कमाया, इसने घर बनाया, इसके बच्चे हैं, इसने मुझे खुशियां दीं और मुझे खुशियां दे देकर अब यह बूढ़ा हो गया है। और अब अगर इसकी तबीअ़त में सख़्ती आ भी गई है तो जैसे एक बीमार आदमी के साथ बंदा डील करता है तो मुझे इसके इतने अर्से की मुहब्बतों का बदला देना है और

बुढ़ापे में इसकी ख़िदमत करनी है।

और फ़रमाया कि ख़ाविंद सोचे कि जब यह मेरे पास आई थी तो यह किस क़द्र नौजवान और ख़ूबसूरत लड़की थी, फिर यहां आकर उसके बच्चे हुए और उसका यह हाल हो गया कि बूढ़ी हो गई। उस लड़की ने अपनी जवानी मेरी ख़िदमत करते करते गुज़ार दी और बुढ़ापे को आ गई। अब अगर बुढ़ापे में उसकी तबीअ़त में अगर तल्ख़ी है, तेज़ी है, कोई भी ऐसा मस्ला है तो उसने अपने आपको मेरी ही ख़ातिर बूढ़ा किया है। तो मुझे उसका लिहाज़ तो रखना चाहिये। लिहाज़ बुढ़ापे में दोनों ने जो इतने साल एक दूसरे को मुहब्बतें दीं, फ़रमाया कि इसका लिहाज़ करते हुए एक दूसरे का ख़्याल रखना इसको "रहमत" कहते हैं। तो बुढ़ापे में अगर रहमत का ख़्याल रखें और कहें कि जी हां हमने इतनी अच्छी ज़िंदगी गुज़ारी है तो बुढ़ापा तो हमें एक दूसरे के साथ अच्छा ही गुज़ारना चाहिये तो यक़ीनन दिलों में एक दूसरे के ख़िलाफ़ नफ़रतें ख़त्म हो जाएंगी।

जन्नत में नहीं जाना......

यह बुढ़ापे की नफ़रतें इतनी होती हैं कि तौबा तौबा! बअ़ज़ दफ़ा तो ऐसी सूरते हाल होती है कि मेरे ख़्याल में अगर ख़ाविंद को कहें ना, कि तुम्हारे हाथ में अगर गोली हो तो किसको मारोगे? तो कहेगाः बीवी को। और बीवी से पूछें कि तुम्हारे हाथ में गोली हो तो किसको मारोगी? तो कहेगीः ख़ाविंद को। एक दूसरे से ऐसी नफ़रतें होती हैं।

एक दफ़ा मुझे कहीं जाने का मौक़ा मिला। एक बूढ़े मियां थे, अपने ज़माने में इंडस्ट्री की लाइन में थे और बड़े खाते

पीते थे, बड़ी कोठी में रहते थे। जवानी में तो दीन की तरफ़ इतना रुज्हान नहीं था, बुढ़ापे में थोड़ा दीन की तरफ़ भी आ गए। दोनों मियां बीवी ने नमाज़ें भी शुरू कर दीं, मगर बीवी भी अमीर ख़ाविंद की बीवी थी और दोनों मियां बीवी फ़िस्क़ व फ़ुजूर में रहने वाले थे। उसने अपने मियां को जवानी में खूब टफ़ टाइम दिया था। हत्ता कि मियां बीवी दोनों बूढ़े हो गए। अब वह मिलने के लिये आए तो कोई बात चली और दर्मियान में कहीं जन्नत का तज़्किरा आ गया। मैंने इसकी तफ़सील कुछ बयान कर दी कि इंसान इबादत करता है तो अल्लाह ने उसकी आंखों की ठंडक के लिये जन्नत में यह यह सामान बना रखा है। जब मैंने यह सारी बातें बताईं तो बूढ़े मियां कहने लगेः हज़रत! जन्नत में मेरी बीवी तो नहीं होगी ना। मैंने कहा क्यों? कहने लगा कि अगर यह जन्नत में होगी तो मैंने जन्नत में नहीं जाना। यअ़नी इतना तो वह तंग था कि कहता था कि अगर यह जन्नत में हुई तो मैंने जन्नत में नहीं जाना। फिर मैंने उसे समझाया कि यह जैसी अब है, वैसी बनकर जन्नत में नहीं जाएगी। जन्नत में यह बाकरा बन कर, नेक बन कर, अच्छी बन कर जाएगी। मुझे उस बूढ़े को Convince (मनवाने) करने में पांच दस मिनट लगे। वह कहता था कि मैंने जन्नत में जाना ही नहीं जहां यह होगी। यह बुढ़ापे के झगड़े ऐसे होते हैं।

एक दूसरे की क़द्र करें:

आम तौर पर देखा गया है कि जब मियां बीवी क़रीब होते हैं तो एक दूसरे से लड़ाईयां होती हैं, अगर इसी हालत में ख़ाविंद फ़ौत हो जाए तो यही बीवी सारी ज़िंदगी ख़ाविंद को

याद करके रोती रहेगी कि जी इतना अच्छा था, मेरे लिये तो बहुत ही अच्छा था। अगर बीवी फ़ौत हो जाए तो यही ख़ाविंद सारी ज़िंदगी याद करके रोता रहेगा कि बीवी इतनी अच्छी थी, मेरा कितना ख़्याल रखती थी। तो पंजाबी की एक कहावत है कि "बंदे दी क़द्र आंदी ऐ टर्गियां या मर्गियां"

हम बंदे की क़द्र उसके क़रीब रहते हुए कर लिया करें। कई मर्तबा यह देखा गया है कि मियां बीवी झगड़े में एक दूसरे को तलाक़ दे देते हैं, जब होश आती है तो ख़ाविंद अपनी जगह पागल बना फिरता है और बीवी अपनी जगह पागल बनी फिरती है। फिर हमारे पास आते हैं कि मौलवी साहब कोई ऐसी सूरत नहीं हो सकती कि हम फिर से मियां बीवी बन कर रह सकें ऐसी सूरते हाल हरगिज़ नहीं आने देनी चाहिये। अफ़्व व दरगुज़र और इफ़हाम व तफ़हीम से काम लेना चाहिये। बल्कि एक रूठे तो दूसरे को मना लेना चाहिये।

अल्लाह तआला की सिफ़ारिश:

ताहम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुर्आन मजीद में औरतों के बारे में एक सिफ़ारिश फ़रमाई है। बड़ी अहम बात है ख़ाविंदों को दिल के कानों से यह बात सुननी चाहिये। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ

कि तुम अपनी बीवियों के साथ बड़े अच्छे अंदाज़ से ज़िंदगी गुज़ारो!

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते थे कि जो शख़्स दुन्या में अल्लाह की इस सिफ़ारिश का लिहाज़ और ख़्याल रखेगा, अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उस बंदे के गुनाहों के

बख़्शने में उसका लिहाज़ करेंगे। और फ़रमाया कि जो अपनी बीवियों को तंग करेगा, टफ़ टाइम देगा, मुसीबत में रखेगा, रुलाएगा, दुख पहुंचाएगा। फ़रमाया कि क़्यामत के दिन जब अल्लाह के हुजूर जाएगा, अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि देखो! मैंने सिफ़ारिश की थी कि तुम बीवियों से प्यार मुहब्बत से रहो, तुम उसे रुलाते थे, तुम उसे तंग करते थे, रातों को सोने नहीं देते थे, तुम उसे मैके भेजते थे, तुम उसके साथ इतनी ज़्यादा सर्द महरी के साथ पेश आते थे, तुम ने मेरी बात का लिहाज़ ही न रखा, आज तुम मेरी रहमत के कैस तलबगार बनते हो? ऐसे बंदे को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जहन्नम के अंदर उल्टा लटा देंगे। तो आज अगर बीवी का बाप पुलिस में आई जी हो और वह फ़ोन कर दे कि मेरी बेटी के साथ ठीक रहना तो नौजवान कांप रहे होते हैं। क्यों अगर बीवी ने शिकायत कर दीं तो उसके अब्बू मेरे लिये मुसीबत बन जाएंगे। एक पुलिस का बंदा, एक दुन्या का हाकिम, अगर उसकी बात न मानी जाए तो वह क्या कुछ कर देता है! तो अगर अल्लाह की बात नहीं मानेंगे तो अल्लाह को कितना जलाल आएगा! याद रखिये! जो बिला वजह अपनी बीवियों को तंग करते हैं तो हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जैसे शेर गुस्से की हालत में होता है अल्लाह तआला उस ख़ाविंद के ऊपर इस तरह गुस्सा फ़रमाते हैं।

नबी सल्ल0 की आख़िरी वसियत:

अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 जब इस दुन्या से जाने लगे तो आप सल्ल0 की मुबारक ज़बान से जो आख़िरी बात आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि0) फ़रमाती हैं मैंने कान लगा कर सुनी

कि नबी सल्ल0 फ़रमा रहे थे:

اَلتَّوْحِيْدُ اَلتَّوْحِيْدُ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ.

"कि तौहीद पर जमे रहना और जो तुम्हारे मातहत हैं अपनी बीवियों के बारे में अल्लाह से डरते रहना।"

तो इनकी इतनी अहमियत है कि हुज़ूर सल्ल0 ऐन आख़िरी वक़्त भी इसकी वसियत करके गए।

एक हदीस पाक में नबी सल्ल0 ने फ़रमाया:

लोगो! अपने मातहतों के साथ अच्छा सुलूक करना, मैं क़्यामत के दिन उनका वकील बन जाऊंगा।

अगर तुमने उनके साथ ज़्यादती की, ज़ुल्म किया, सख़्ती की, और अपनी पाज़ीशन से नाजाइज़ फ़ाएदा उठाया। अल्लाह के नबी सल्ल0 फ़रमाते हैं: मैं क़्यामत के दिन उनका वकील बन जाऊंगा और तुमसे उनको उनका हक़ दिला कर रहूंगा। अब सोचिये: जब अल्लाह के हबीब सल्ल0 उनके वकील बन जाएंगे तो हमें अल्लाह के हबीब सल्ल0 की शफ़ाअ़त कैसे नसीब होगी?

आज वक़्त है:

आज वक़्त है अपनी ग़लती कोताही से मुआफ़ी मांगने का। इसलिये इस आजिज़ की यह एक नसीहत है कि अगर बीवी समझती है कि मैंने ख़ाविंद के साथ ज़्यादती की तो वह आज अपने ख़ाविंद के पांव पकड़ कर मुआफ़ी मांग ले और अगर ख़ाविंद समझता है कि मैंने बीवी को सताया और रुलाया है, आज जाकर अपनी बीवी से मुआफ़ी मांग ले, उसका दिल ख़ुश कर ले, अपनी बीवी का दिल ख़ुश करेगा, दूसरे लफ़्ज़ों में अपने प्यारे हबीब हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का

दिल खुश करेगा और अपने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को खुश करेगा। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें हकीकत हाल को समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आख़िरी बात:

आख़िरी बात सुन लीजिये! आप सल्ल0 घर में तशरीफ़ लाते हैं, आइशा सिद्दीका रज़ि0 प्याले में पानी पी रही हैं। नबी सल्ल0 ने दूर से देखा, फ़रमाया! ऐ हुमैरा! फ़रमाया: लब्बैक या रसूलुल्लाह सल्ल0! (ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0 हुक्म फ़रमाइये) हुमैरा! मेरे लिया कुछ पानी बचा देना। सोचने की बात है कि बरकतें तो अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 में थीं, आप बरकतों वाली ज़ात थे। आप अपनी बीवी का बचा हुआ पानी क्यों पीना चाहते थे? अस्ल में मुहब्बत इज़हार मांगती है, इज़हार के बग़ैर वह रह नहीं सकती। नबी सल्ल0 हुक्म देते हैं, ठंडा पानी आपको कहीं से भी पेश कर दिया जाता, मगर बीवी का बचा हुआ पानी मुहब्बत के इज़हार के लिये आप पीना चाहते थे। फ़रमाया, हुमैरा! पानी मेरे लिये भी बचा देना। आप तशरीफ़ लाए, आइशा सिद्दीका (रज़ि0) ने वह बचा हुआ पानी का प्याला आपके हवाले कर दिया। नबी सल्ल0 ने मुबारक हाथों में ले लिया और इसके बाद आप पीने लगे। तो आप सल्ल0 ने प्याले को एक जगह रोक कर पूछा, हुमैरा! तुमने किस जगह अपने लब लगाकर पानी पिया था? आइशा सिद्दीका रज़ि0 ने उंगली से बता दिया कि ऐ अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल! मैंने प्याले की इस जगह से पानी पिया था। नबी सल्ल0 ने प्याले के रुख़ को फेरा और ऐन उसी जगह अपने मुबारक लब लगाकर पानी को नोश फ़रमाया;

जब ख़ाविंद अपनी बीवी को इतनी मुहब्बतें देगा, उसका दिमाग़ ख़राब है कि वह घर को आबाद नहीं करेगी। यह तो मियां के ऊपर मुरत्तब होता है कि अगर बीवी को मुहब्बतें दे देता है, घर आबाद हो जाता है। सहीह हैंडल नहीं करता है, घर बर्बाद हो जाता है। अल्लाह तआला हमें समझ अता फ़रमाए और अज़्दवाजी ज़िंदगी के झगड़ों से हमें बचाए और घरों के फ़साद से अल्लाह हमें महफ़ूज़ फ़रमाए और हमारे घरों को अल्लाह छोटी सी जन्नत का माहौल अता फ़रमाए।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

पड़ोसियों के झगड़े

अज़ इफ़ादात

पीरे तरीक़त रहबरे शरीअत मुफ़क्किरे इस्लाम
महबूबुल उलमा वस्सुलहा

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद
मुजद्दिदी नक़्शबंदी मद्दज़िल्लुहू

पड़ोसियों के झगड़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُوْنَ. وَسَلَامٌ عَلٰى
الْمُرْسَلِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

दीने इस्लाम में कुशादा रुई की तअ़लीमः

दीने इस्लाम दीने फ़ितरत है। हर इंसान को आपस में प्यार और मुहब्बत से ज़िंदगी गुज़ारने का सबक़ सिखाता है। इसलिये कुर्आन मजीद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस बात की तअ़लीम दी कि हमारी जिस बंदे से भी मुलाक़ात हो हम उससे कुशादा रूई के साथ मिलें और अच्छे अंदाज़ से गुफ़्तगू करें। इसमें मुसलमान और काफ़िर का कोई फ़र्क़ नहीं। दो इंसान जब आपस में मिलते हैं तो इंसानियत का तक़ाज़ा यह है कि आपस में इंसानों की तरह मिलें। चुनांचे शरीअ़त ने कहाः

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ

लोगों के सामने मुंह फैलाओ!

जब तुम इंसानों से मिलो तो कुशादा चेहरे के साथ मिलो। तेवरियां चढ़ाकर मिलना, मुंह बना कर मिलना, शरीअ़त ने इसको पसंद नहीं किया। तो सबसे पहले फ़रमाया कि जब तुम दूसरे को मिलोगे तो एक दूसरे के चेहरे से तुम्हें

अंदाज़ा होगा कि तुम्हारे अंदर ख़ुशी है या गुस्सा है, ख़ैर है या शर है? जब तुम खुले चेहरे के साथ मिलोगे, कुशादा चेहरे के साथ मिलोगे, मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलेंगे तो दूसरा बंदा तुम्हारे क़रीब आने की कोशिश करेगा। तो मोमिन को चाहिये कि जब भी किसी से मिले तो कुशादा चेहरे के साथ मिले।

नबी सल्ल0 की सुन्नते मुबारका:

नबी सल्ल0 की आदते मुबारका थी, हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि0) जिसकी राविया हैं फ़रमाती हैं कि नबी सल्ल0 जब भी घर में तशरीफ़ लाते थे हमेशा मुस्कुराते चेहरे के साथ आते थे। कुछ नौजवानों को देखा दफ़्तर में, मजलिस में, दोस्तों के साथ खूब गपशप होती है और घर आते हैं तो चेहरे के ऊपर ऐसी संजीदगी होती है कि मअ़लूम नहीं वह किस मुसीबत के अंदर गिरफ़्तार हो गए हैं! यह भी ख़िलाफ़े सुन्नत है। दो मुसलमानों का मिलना तो बहुत ही बड़ी बात है, शरीअ़त ने कहा कि इंसान होने के नाते किसी काफ़िर से भी मिलो तो कुशादा चेहरे से मिलो, मुस्कुरा कर बात करो।

शीरीं कलामी की तअ़लीम:

दूसरी जगह फ़रमाया कि जब तुम्हें गुफ़्तगू करनी पड़े तो शीरीं ज़बानी से बात करो, फ़रमाया:

وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا

(लोगों से अच्छे अंदाज़ से गुफ़्तगू करो)

तुम्हारे मुंह से जो गुफ़्तगू निकले उसमें मुहब्बत, हमदर्दी, ग़मगुसारी, शीरीं कलामी होनी चाहिये। आप देखिये कि मोमिन और काफ़िर इसमें कोई फ़र्क़ नहीं। शरीअ़त ने इसमें للناس का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया (इंसानों के लिये)। ولا

تصعر خدك للناس۔ قولو للناس حسنا۔ तो यह दो बातें किस क़द्र अहम हैं! और इस्लाम की हक़्क़ानियत की कितनी प्यारी दलील हैं कि जो हर एक के साथ, खुले चेहरे के साथ शीरीं ज़बानी की गुफ़्तगू करने की तअ़लीम देता है।

दूसरों के लिये आसानी करने की तअ़लीम:

नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि

يَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا

आसानियां करो मुश्किल न करो लोगों के लिये

गोया तीन बातें मअ़लूम हो गईं। एक कुशादा रवी, दूसरा शीरीं कलामी और तीसरा सहूलत व आसानी तो इस दीन की तअ़लीमात किस क़द्र खूबसूरत हैं:

ज़्यादा गर्मजोशी से मिलने की फ़ज़ीलत:

नबी सल्ल० के इर्शाद का मफ़हूम है कि जब दो मुसलमान बहनें आपस में मिलती हैं, हदीसे पाक में भाई का लफ़्ज़ है लेकिन चूंकि औरतों का मज्मा है इसलिये उन्ही की ज़बान में गुफ़्तगू की जा रही है। तो मफ़हूम यह निकला कि जब दो मुसलमान औरतें आपस में मिलती हैं तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उन पर सत्तर रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं। इनमें से उनहत्तर रहमतें उसको मिलती हैं जो जो दोनों में से ज़्यादा प्यार, ज़्यादा मुहब्बत और ज़्यादा गरमजूशी के साथ मिलती है। क्या खूबसूरत बात कही गई? आप बयान सुनने के लिये आती हैं तो इस दौरान मुम्किन है आपकी दर्जनों औरतों के साथ सलामु अलैकुम होनी हो तो अगर आप खिले चेहरे से सलाम करें, मुहब्बत, प्यार से हाल अहवाल पूछें और मिलने में गर्मजोशी दिखाएं तो फ़रमाया कि सत्तर रहमतें नाज़िल होंगी

और उनमें से उनहत्तर रहमतें उस पर नाज़िल होंगी जो ज़्यादा गर्मजोशी से मिलेगा, जो ज़्यादा मुहब्बत का इज़हार करेगी।

दो भाई दो हाथों की मानिंद हैं:

एक हदीसे पाक में है कि दो भाईयों की मिसाल दो हाथों की सी है। जिस तरह दोनों हाथ एक दूसरे को धोते हैं उसी तरह जब दो मुसलमान भाई आपस में मिलते हैं तो वह एक दूसरे के गुनाहों के झड़ने का सबब बन जाते हैं। सुब्हानल्लाह! क्या खूबसूरत तअ़लीम दी गई! इसका मतलब यह हुआ जब भी दो मुसलमान औरतें आपस में मिलती हैं तो उन दोनों का मिलना इस तरह है। जिस तरह दो हाथ एक दूसरे को धोने का सबब बनते हैं, उनके मिलने से उनके गुनाह झड़ जाते हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को मुहब्बत प्यार से मिलना अगर इतना पसंद है तो मुहब्बत प्यार के साथ रहना सहना कितना पसंद होगा!

चुनांचे नबी सल्ल0 एक मर्तबा सफ़र पर तशरीफ़ ले गए एक सहाबी भी साथ थे, रास्ते में मिस्वाक बनाने की ज़रूरत पेश आई, नबी सल्ल0 ने दो मिस्वाकें बनाईं उनमें से जो ज़्यादा सीधी थी और खूबसूरत थी वह आप सल्ल0 ने सहाबी को दी तो वह सहाबी कहने लगे: ऐ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के प्यारे हबीब सल्ल0! मेरा जी चाहता है, (आप मेरे आक़ा हैं) यह सीधी और खूबसूरत मिस्वाक आप के पास हो। नबी सल्ल0 ने मुस्कुरा के जवाब दिया कि जिस तरह तुम्हारा यह जी चाहता है कि यह मेरे पास हो, तुम मेरे रफ़ीक़े सफ़र हो, मेरा भी जी चाहता है कि यह तुम्हारे पास हो। चुनांचे मुहब्बत प्यार से एक दूसरे के साथ रहना, एक दूसरे का इकराम

करना, इज़्ज़त करना यह दीन की बुन्यादी तअ़लीमात में से है।

साथ रहने का मज़ाः

हमारे बुजुर्ग इस तरह रहते थे कि दूसरों को उनके साथ रहने का मज़ा आ जाता था। चुनांचे एक साहब कहते हैं कि मुझे अब्दुल्लाह राज़ी रह0 के साथ सफ़र करने का मौक़ा मिला, सफ़र शुरू होने से पहले उन्होंने कहा कि अच्छा बताओ! हम में से अमीर कौन है? मैंने अब्दुल्लाह राज़ी रह0 से कहाः जी आप सबके अमीरे सफ़र हैं। उन्होंने कहाः बहुत अच्छा! अब अगर मैं अमीर बन गया तो तुम्हें पूरे सफ़र में मेरी बात को मानना होगा। मैंने कहा, हाज़िर हूं चुनांचे उन्होंने अपने और मेरे सामान को बांधा और अपने सर पे रख लिया। मैंने कहाः जी मुझे उठाने दें कहने लगे कि आप मुझे अमीर मान चुके हैं अब जो मैं कर रहा हूं मुझे करने दें। मैं बड़ा हैरान। चुनांचे दोनों का सामान उन्होंने खुद उठाया, चले, रास्ते में जब खाने का वक़्त आता तो वह खाना मेरे सामने रखते और मुझे हुक्मन ज़्यादा खिलाते हत्ता कि एक जगह बारिश हो गई तो वह अपनी चादर लेकर एक घंटा मेरे ऊपर साया किये रहे ताकि मैं बारिश से बचा रहूं और आराम की नींद सोया रहूं। मैंने कहा कि जी मुझे आपकी ख़िदमत करनी चाहिये। जब मैं बात करता तो वह कहतेः देखो! आप मुझे अमीर मान चुके हैं। लिहाज़ा अब जो मैं कहूंगा वह आपको करना होगा। तो कहने लगे कि मैं अफ़सोस ही करता रहा कि काश मैंने उन्हें अमीर न बनाया होता। मैं तो उनकी ख़िदमत ही न कर सका, सारी ख़िदमत उन्होंने अपने ही ज़िम्मे ले ली।

अब ऐसे रफ़ीक़े सफ़र कहां मिलते हैं? शरीअ़त ने इस क़द्र ख़ूबसूरत अंदाज़ से मिल जुल कर रहने की तअ़लीमात दें कि अगर बंदा शरीअ़त के मुताबिक़ रहे तो उसको ज़िंदगी गुज़ारने का मज़ा आ जाए।

तअ़लीमाते शरीअ़तः

चुनांचे जब एक दूसरे के साथ रहें तो शरीअ़त कहती है कि एक दूसरे से झूट न बोलें, ख़यानत न करें, ग़ीबत न करें, एक दूसरे के राज़ फ़ाश न करें। बल्कि हमारे असलाफ़ फ़रमाया करते थे "दोस्ती के क़ाबिल वह शख़्स होता है कि जिसको तेरे किसी ऐब का पूर पता हो और फिर वह तेरे ऐब को छुपाए" बल्कि उनके अलफ़ाज़ यह थे "जो तेरे ऐब को इस तरह जाने जिस तरह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तेरे ऐब को जानते हैं और फिर वह तेरे ऐब को इस तरह छुपाए जिस तरह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तेरे ऐब को छुपाते हैं"। अल्लाहु अक्बर कबीरा। यह बात पढ़कर हैरान हो जाते हैं।

تَخَلَّقُوْا بِاَخْلَاقِ اللّٰهِ

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के अख़्लाक़ से अपने आपको मुज़य्यन करो। इसका नमूना देखना हो तो असलाफ़ की ज़िंदगियों को देखना चाहिये।

नाक़ाबिले भरोसा शख़्सः

चुनांचे फ़रमाया करते थे कि जो शख़्स चार हालात में बदल जाए, चार सूरते हाल में जो बदल जाए वह नाक़ाबिले भरोसा होता हैः ख़ुशी मिले और वह अपने साथियों को भूल जाए। गुस्सा में अपने तअ़ल्लुक़ भूल जाए। किसी चीज़ की तमअ़ हो और अपने तअ़ल्लुक़ को भूल जाए। ख़्वाहिशे

नफ़्सानी की ख़ातिर तअ़ल्लुक़ का ख़्याल न रखे तो फ़रमाया कि ऐसा आदमी नाक़ाबिले भरोसा होता है, दोस्ती के क़ाबिल नहीं होता।

जानवरों से सबक़:

अबू अद्दर्दा रज़ि0 एक जगह गए तो दो बैल जो हल में इस्तेमाल होते थे इकट्ठे बैठे हुए थे। यह जैसे ही क़रीब से गुज़रे तो एक बैल उठा और साथ ही दूसरा भी उठ गया। अबू अद्दर्दा रज़ि0 की आंखों में से आंसू आ गए, फ़रमाने लगे देखो! यह जानवर हैं, बैल हैं, एक उठा है तो दूसरा उसके साथ उठ खड़ा हुआ। अगर यह अपने साथ को इस तरह निभा सकते हैं तो क्या इंसान एक दूसरे के साथ को इस तरह नहीं निभा सकते? इन्ही जानवरों को देखकर भी वह सबक़ हासिल करते थे।

जो अपने लिये पसंद वही दूसरों के लिये:

चुनांचे दीने इस्लाम ने एक बहुत ही प्यारी तअ़लीम दी, यह कहा कि जो तुम अपने लिये पसंद करते हो वही तुम दूसरे के लिये पसंद करो। यह ज़िंदगी गुज़ारने का इस क़द्र खूबसूरत उसूल है कि पूरी दुन्या में आप चले जाएं आपको इससे ज़्यादा हसीन और खूबसूरत उसूल और कोई नहीं मिल सकता। अब इंसान चाहता हे कि लोग उसकी इज़्ज़त करें तो उसे चाहिये कि वह दूसरों की इज़्ज़त करे, इंसान चाहता है कि दूसरे उसकी ग़लतियों को मुआफ़ कर दें तो वह दूसरों की ग़लतियों को मुआफ़ करे, इंसान चाहता है कि उसके घर की इज़्ज़त की लोग हिफ़ाज़त करें तो उसे चाहिये कि दूसरों की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करे। यह कितना प्यारा उसूल है कि जो

तुम अपने लिये पसंद करते हो वही चीज़ तुम दूसरों के लिये पसंद करो।

भलाई हर एक के लिये!

चुनांचे शरीअ़त ने कहा कि इंसान को चाहिये कि हर एक के साथ भलाई करे अगर्चे नेक हो या बद हो यअ़नी नेक के साथ भी भलाई करे और बुरे के साथ भी भलाई करे। बुरे के साथ भलाई क्या होगी कि प्यार मुहब्बत के साथ उसको बुराई से रोक ले, ऐसी मुहब्बत दे कि वह दूसरा बुराई से बाज़ आ जाए। किसी ने कहा कि नेक तो भलाई के क़ाबिल होता है तो भलाई के क़ाबिल नहीं होता। उन्होंने जवाब दिया कि अगर्चे वह इस क़ाबिल नहीं होता मगर तुम इस क़ाबिल हो कि तुम दूसरे के साथ भलाई का मुआमला करो। तो अपने को देखो इसलिये कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने और बद हर एक के साथ भलाई करते हैं। और हमें अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के ख़ल्क़ को अपने अंदर लेना है।

मुस्तहिक़ कौन है?

हमारे हज़रत मुर्शिदे आलम रह० हरम शरीफ़ में बैठे थे तो वहां बअ़ज़ दफ़ा मांगने वाले भी आ जाते हैं। इन मांगने वालों में बड़े सिहतमंद नौजवान भी नज़र आ जाते हैं तो एक शख़्स हज़रत की ख़िदमत में अ़र्ज़ करने लगा कि हज़रत! बहुत मांगने वाले यहां आते हैं। हमें क्या पता कि कौन मुस्तहिक़ है या मुस्तहिक़ नहीं, तो हम क्या करें? हज़रत मुर्शिद आलम रह० ने उसकी तरफ़ देखा और उससे पूछा कि अच्छा तुम यह बताओ कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त जो कुछ तुम्हें दे रहा है उसके तुम मुस्तहिक़ हो? उसने कहा नहीं। तो

फ़रमाया कि जब तुम्हें मुस्तहिक़ होने के बग़ैर भी सब कुछ दे रहा है तो तुम भी अल्लाह के बंदों को दो। हां इतना फ़र्क़ है कि जो ज़्यादा मुस्तहिक़ नज़र आए उसको ज़्यादा दे दो जो कम नज़र आए उसको ज़रा कम दे दो, दिया ज़रूर करो! और फिर एक अजीब बात समझाई, फ़रमाया कि इस नियत से दिया करो कि अल्लाह मैं तेरा शुक्र अदा करता हूं कि तूने मुझे लेने वालों में से नहीं, देने वालों में से बनाया है। अल्लाह का शुक्र अदा किया करो! देखें अल्लाह वाले कैसे अच्छी और प्यारी बातें दूसरे बंदे के दिल में उतार देते हैं।

सिफ़ते सत्तारी पैदा करने की ज़रुरतः

चुनांचे मिल जुल कर रहना हो तो इंसान एक दूसे के साथ प्यार और मुहब्बत से रहे और अगर किसी के ऐब नज़र आएं तो उनकी पर्दा पोशी करे। उसूल याद रखें! किसी के पोशीदा ऐबों को हमेशा पोशीदा रखना चाहिये। सतर पोशी, ऐबों को छुपा लेना अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की सिफ़त है और बंदे को भी यह सिफ़त अपने अंदर रखनी चाहिये। और अगर हम ग़ौर करें तो हम तो जी ही इसी सिफ़त के सदक़े रहे हैं, सच्ची बात है। बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं:

"ऐ दोस्त! जिसने तेरी तअ़रीफ़ की उसने दरहक़ीक़त तेरे परवरदिगार की सिफ़ते सत्तारी की तअ़रीफ़ की।"

वह मेरी तअ़रीफ़ें नहीं कर रहा। तेरी हक़ीक़त को ऐसी है अगर खुल जाए तो लोग तुझे मुंह न लगाएं, तेरी तरफ़ देखना गवारा न करें। तो फ़रमाते कि ऐ दोस्त! जिसने तेरी तअ़रीफ़ की उसने दर हक़ीक़त तरे परवरदिगार की सत्तारी की तअ़रीफ़

की। तो हम तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की सिफ़ते सत्तारी के सदके ही जी रहे हैं। अगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमारे अंदर का हर पोल खोल दें तो हम तो पूरी दुन्या में ज़लील हो जाएं। तो जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त छुपाते हैं सुब्हानल्लाह।

अल्लाह तआला की शाने सत्तारीः

हदीसे पाक में आता है अल्लाह तआला क़्यामत के दिन एक बंदे को खड़ा फ़रमाएंगे और उसके गिर्द अपनी रहमतों की चादर को तान लेंगे पर्दा कर लेंगे, मख़्लूक़ से वह बंदा छुप जाएगा अब उस बंदे को कहेंगे ऐ मेरे बंदे! तूने फ़लां दिन यह किया, फ़लां दिन यह किया, वह कहेगा जी! उसके बड़े बड़े सब गुनाह उसको गिनवाएंगे। हत्ता कि उस बंदे को यक़ीन हो जाएगा कि आज मैं जहन्नम की आग से बिल्कुल नहीं बच सकता। जब उसके दिल में पक्का यक़ीन हो जाएगा तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगेः गुनाह तो तू करता था लेकिन हमसे डरता भी था, गुनाहों पर छुप छुप कर रोता भी था। हमने दुन्या में भी तेरे ऐबों की पर्दा पोशी की, हम यहां भी तेरे ऐबों की पर्दा पोशी फ़रमाते हैं। जाओ! इस छुप छुप कर रोने की वजह से हमने तुम्हारे गुनाहों को नेकियों में बदल दिया। जब रहमत का पर्दा हटेगा तो मख़्लूक़ देखेगी कि इस बंदे के नामए अअ़्माल में एक भी गुनाह दर्ज नहीं। लोग सोचेंगे कि शायद अंबिया में से यह कोई नबी हैं कि जिसने कभी गुनाह का इर्तिकाब ही नहीं किया। अल्लाहु अक्बर कबीरा......ऐ मौला! आप कितने सत्तार हैं? किस क़द्र मेहरबान हैं? ऐबों को देखने के बावजूद आप बंदे के ऊपर सत्तारी का मुआमला फ़रमाते हैं।

हमें भी इसी तरह करना चाहिये कि पड़ोसी चूंकि एक दूसरे के बहुत क़रीब होते हैं इसलिये उन्हें एक दूसरे के ऐबों का जल्दी पता चलता है तो शरीअ़त ने कहा कि छुपते ऐबों को छुपाएं, हां कोई एलानिया ऐब करे, खुल्लम खुल्ला करे तो अब तो उसने अपने ऐब को खुद ही ज़ाहिर कर दिया। तो छुपे ऐबों को हमेशा छुपाने की कोशिश करनी चाहिये। यह अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के ख़ल्क़ में से है।

रुसवा करोगे रुसवा होगे!

एक और बात यह कि जो बंदा दूसरों के ऐबों को खोलने का आदी हो, सीने और दिल के कानों से सुनिये! फ़रमाया कि जो बंदा दूसरों के ऐबों को खोलने का आदी हो यह बंदा अपनी ज़िंदगी में देखेगा कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उसके ऐबों को खोल कर उसको रुसवा करेंगे, चाहे उसे घर वालों के सामने ही रुसवा करें, यह दूसरों को रुसवा करता है अल्लाह तआला इसको रुसवा करेंगे।

हज़रत उमर रज़ि० का खौफ़:

सय्यदना उमर रज़ि० की आदते मुबारका थी, रात को आप चक्कर लगाते थे, देखते थे कि रिआया किस हाल में है। अमीरुल मोमिनीन थे, ज़िम्मादारी भी बनती थी। चुनांचे आप एक मकान के क़रीब से गुज़रे उसमें कुछ रौशनी नज़र आई, कुछ बातों की आवाज़ सुनाई दी। आप को महसूस हुआ यहां नार्मल लाइफ नहीं है।

Something is seriously wrong somewhere

कहीं ज़रूर कोई न कोई गड़बड़ है।

आप खड़े होकर देखते सोचते रहे। फिर अंदर से कभी

क़हक़हों की आवाज़ आती। कभी किसी मर्द और औरत की आवाज़ आती हत्ता कि आप की बसीरत ने यह कहा कि अंदर कोई गुनाह हो रहा है। दरवाज़ा बंद था। उमर फ़ारूक़ रज़ि0 थे। हमिय्यते इस्लामी दिल में बहुत थी। चुनांचे उन्होंन क्या किया कि दीवार के ऊपर चढ़ गए। जब दीवार के ऊपर चढ़कर उन्होंने घर के अंदर झांक कर देखा तो एक मर्द था और एक औरत थी। वह औरत उसकी बीवी नहीं थी बल्कि उस औरत को उसने गुनाह के लिये रात को अपने पास बुलाया था। उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने जब उसको देखा तो उसको दूर से कहा ओ ज़िना करने वाले! अल्लाह से ख़ौफ़ कर, अल्लाह से डर! जब आपने उसको यह कहा तो उसने आगे से जवाब दिया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैंने एक गुनाह किया आपने तीन गुनाह किये। पूछा कि वह कैसे? उसने कहा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुर्आन मजीद में फ़रमाया कि وَلَا تَجَسَّسُوْا (तुम तजस्सुस न करो।) आपने तजस्सुस किया और मेरे बंद घर के अंदर मुझे देखा। दूसरी बात कि क़ुर्आन मजीद ने कहा कि وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا कि तुम घरों में उनके दरवाज़ों से दाख़िल हो और आप दरवाज़े के बजाए दीवार पर चढ़ कर देख रहे हैं। क़ुर्आन मजीद ने कहा कि

لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰى اَهْلِهَا

कि तुम बग़ैर इजाज़त के दाख़िल न हो और अह्ले ख़ाना को सलाम करके घर में दाख़िल हो और आपने इसके बग़ैर इसके मुझसे गुफ़्तगू की। जब उसने यह कहा तो सय्यदना

उमर को भी यह हुआ कि इसने जो यह तीन बातें की हैं, हैं तो यह सच्ची। तो उमर रज़ि0 ने फ़रमाया कि अच्छा अगर तू सच्ची तौबा का वादा करे तो मैं इस गुनाह को मुआफ़ करने का वादा करता हूं। चुनांचे उसने सच्ची तौबा की कि मैं आज के बाद इस गुनाह का मुर्तकिब नहीं हूंगा। उमर रज़ि0 ने कहा कि अच्छा तुम मेरी ग़लती को मुआफ़ कर दो और यह कहकर फिर आप वहां से आगे तशरीफ़ ले गए।

पड़ोसी के तीन दर्जे:

शरीअ़त ने कहा कि पड़ोसी के तीन दर्जे होते हैं।

(1) एक दर्जा तो यह कि पड़ोसी काफ़िर हो। यह भी अच्छे अख़्लाक़ और हुस्ने सुलूक का मुस्तहिक़ है, इसलिये कि पड़ोसी जो हुआ।

(2) दूसरा दर्जा यह कि पड़ोसी भी हो और मुसलमान भी हो। अब उसमें दो हक़ आगे, पड़ोसी होने का भी हक़ और मुसलमान होने का भी हक़।

(3) एक तीसरा दर्जा कि पड़ोसी भी है। मुसलमान भी है और रिशतादार भी है, क़राबतदार भी है, फ़रमाया कि इसका हक़ तीन गुना हो गया। सोचिये कि जब शरीअ़त काफ़िर पड़ोसी का भी हक़ क़ाइम करती है तो अगर क़राबतदार, रिशतादार एक दूसरे के पड़ोसी होंगे तो उनका एक दूसरे पर कितना हक़ होगा!

पड़ोस की हुदूद:

नबी सल्ल0 ने एक सहाबी को कहा कि तुम मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर एलान करो कि जहां बंदे का घर होता है उसके दाएं बाएं आगे पीछे हर तरफ़ चालीस घरों तक

जितने घर होते हैं वह उसके पड़ोसी होते हैं। तो पड़ोसी सिर्फ़ वही नहीं होता कि जिसकी दीवार उससे इकट्ठी हो, नहीं! नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि पड़ोस चालीस मकानों तक होता है। और चारों अतराफ़ में चालीस मकान, यह तो पूरा मुहल्ला बन जाता है। तो यूं समझिये कि शरीअ़त की नज़र में पूरे मुहल्ला के लोग पड़ोस के हुक्म में होते हैं।

पड़ोसी के हक़ की ताकीदः

चुनांचे नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि जिब्रईल अलै0 मेरे पास इतनी दफ़ा पड़ोसी के हुक्म की ताकीद के लिये आए कि मुझे यह डर होने लगा कि कहीं बंदे के मरने के बाद पड़ोसी को उसकी विरासत में न शामिल कर लिया जाए। इससे हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि पड़ोसी का कितना हक़ होगा।

पड़ोसी के हुक़ूक़......

चुनांचे पड़ोसी का हक़ है कि इंसान उन्हें अच्छे नाम से पुकारे, सलाम में पहल करे, मिलें तो उन्हें बिठाने में पहल करे, हदिया भेजने में पहल करे, अपने घर के धुवें से, कूड़ा कर्कट से उसे परेशान न करे, हत्ता कि अगर फ़ल ख़रीद कर लाए तो या तो पड़ोसी को हदिया दे वर्ना इस तरह छुपाकर खाए कि पड़ोसी के बच्चों को पता न चले, ऐसा न हो उनका दिल टूटे कि हमें हमारे वालिदैन ने फल क्यों न लाकर दिये।

फ़रमाया कि तुम अपनी दीवार को इतना बुलंद न करो कि हमसाए की धूप रुके या उसकी हवा रुक जाए। उसके बेटे या उसके गुलाम से गुफ़्तगू करनी हो तो शफ़क़त की गुफ़्तगू करो। ज़रूरत के वक़्त वह क़र्ज़ मांगे और तुम देने की पोज़ीशन में हो तो पड़ोसी को इंकार न करो। अपने पड़ोसी क

ग़ीबत न करो। उसकी मदद करो। यअ़नी पड़ोसी की अदम मौजूदगी में अगर कभी इसका तज़किरा छिड़े तो तुम उसकी साईड लो और उसकी हिमायत किया करो। वह तुम्हारा पड़ोसी है। ज़िंदगी में भी उसके लिये दुआ मांगो और उसकी वफ़ात के बाद भी उसके लिये दुआ मांगते रहो।

पड़ोसी के दुशमन से दोस्ती न करो!

पड़ोसी के दुशमन के साथ तुम कभी अपनी दोस्ती मत करो। सुब्हानल्लाह! क्या अजीब बात की! फ़रमाया देखो! जो तुम्हारा पड़ोसी है यह तो तुम्हारा क़रीबी हो गया अब अगर उसकी किसी के साथ दुशमनी है तो तुम उसके साथ दोस्ती के तअ़ल्लुक़ात मत जोड़ो, इससे तुम्हारे पड़ोसी को ईज़ा पहुंचेगी।

पड़ोसी की जान, माल, इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करो

उसकी जान की हिफ़ाज़त, माल की हिफ़ाज़त, इज़्ज़त आबरू की हिफ़ाज़त तुम्हारे ज़िम्मा है। इसलिये ज़िना का गुना होता है लेकिन शरीअ़त ने कहा कि जो पड़ोसी की औरत से ज़िना करे उसके गुनाह से कई गुनाह इस बंदे को सज़ा ज़्यादा होती है। फ़रमाया कि तुम उसके घर में न झांको। बात करने का मौक़ा हो तो दरवाज़ा खटखटाकर एक तरफ़ को हट जाओ ऐसा न हो कि दरवाज़ा खुले तो बेपर्दगी का एहतिमाल हो।

पड़ोसी को ख़ौफ़ ज़दा करो!

ऐसा काम न करो कि जिससे तुम्हारा पड़ोसी ख़ौफ़ज़दा रहे। कई लोग होते हैं ताकि इर्दगिर्द के लोगों को दबा कर रखते हैं। शरीअ़त ने कहाः ऐसा कोई काम न करो कि तुम्हारे

पड़ोसी तुमसे ख़ौफ़ज़दा रहें। उससे तीन दिन से ज़्यादा नाराज़गी की हालत में भी कलाम बंद न करो। उससे क़तअ़ तअ़ल्लुक़ी नहीं कर सकते इसलिये कि नाराज़ होंगे तो साफ़ ज़ाहिर है कि ग़ीबत करेंगे।

शैतान का शहद और राख......

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैंने एक मर्तबा शैतान को देखा, उसके पास दो चीज़ें थीं। मैंने उससे कहा कि ऐ बदमआ़श! यह क्या दो चीज़ें लिये फिरता है? कहने लगा कि एक बोतल में शहद है और एक चीज़ में राख है। मैंने कहा कि तुझे इसकी क्या ज़रूरत पड़ गई? कहने लगा कि जो लोग ग़ीबत करते हैं उनके होंटों पर शहद लगाता हूं तो उनको ग़ीबत करने में मज़ा आता है, लगे रहते हैं ग़ीबत करते ही रहते हैं। तो जब भी महफ़िल में ग़ीबत हो रही हो आप यही सोचा करें कि अब इस वक़्त शैतान हमारे होंटों पर शहद लगा रहा है। और हमें ग़ीबत करना बड़ा अच्छा लग रहा है। मैंने कहा कि अच्छा राख किसलिये लिये फिर रहे हो? तो उसने कहाः इस राख को मैं यतीम के चेहरे पर मल देता हूं तो देखने वाले उसको हक़ारत की नज़र से देखते हैं, मुहब्बत की नज़र से नहीं देखते और अल्लाह की रहमत से ख़ुद महरूम हो जाते हैं।

अज़ीज़ रिश्तादारों से भी ज़्यादा हक़ पड़ोसी का हैः

शरीअ़त ने कहा कि अज़ीज़ रिशतादारों से भी ज़्यादा हक़ पड़ोसी का है इसलिये कि वह क़रीब होता है। और वाक़ई वक़्त बेवक़्त पड़ोसी ही काम आते हैं। दुख सुख में भी वही शरीक होते हैं।

जिसे पड़ोसी अच्छा कहें, अल्लाह की नजर में वह अच्छा है:

चुनांचे नबी सल्ल0 ने एक अजीब बात फ़रमाई। फ़रमाया कि अगर पड़ोसी तुझे अच्छा कहते हैं तो अल्लाह की नज़र में भी अच्छा है और अगर पड़ोसी तुझे बुरा कहते हैं तू अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नज़र में भी तो बुरा है। औरतें आम तौर पर नाज़ुक ज़हन की होती हैं बअ़ज़ दफ़ा एक बात का उल्टा मतलब ले लेती हैं, उल्टा असर ले लेती हैं, यहीं से झगड़ों की इब्तिदा होती है। लिहाज़ा जितने क़रीब के पड़ोसी होते हैं उतने एक दूसरे के साथ झगड़े भी ज़्यादा होते हैं। हुस्ने मुआशिरत यह है कि पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक रखे ताकि उनकी ज़बान से तअ़रीफ़ निकले और आप यह समझ कर रहें कि अगर पड़ोसी की ज़बान से तअ़रीफ़ें निकल आई तो यूं समझें कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के दफ़्तर में हमारी तअ़रीफ़ लिख दी गई।

पड़ोसी को इस्तेमाल की चीज़ से इंकार न करें:

रोज़मर्रा की इस्तेमाल की चीज़ें अगर पड़ोसी मांगें तो इंकार न करें। अगर आप पड़ोसी से कोइ चीज़ मांगें तो उसे बेएहतियाती से इस्तेमाल न करें। झगड़े यहीं से शुरू होते हैं कि चीज़ मांगी, इस्तेमाल करने में बेएहतियाती कर ली, इस्तेमाल करने के बाद भी पड़ी रही, लौटाना ही भूल गई। एहसान फ़रामोश न बनें।

पड़ोसियों से हसद से बचें:

पड़ोसियों के साथ हसद से भी बचें। उसके बेटे को नौकरी मिल गई, उसकी बेटी को अच्छा रिशता मिल गया, इन

चीज़ों से हसद आता है। अगर अल्लाह ने उसके साथ अच्छा किया तो आप भी खुश हों कि अल्लाह उन्हें और ज़्यादा इज़्ज़तें दे। माल पैसे पर नज़रें न रखें।

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقٰكُمْ

अल्लाह के नज़दीक इज़्ज़त वाला वह जो ज़्यादा मुत्तकी है।

सहेली भी पड़ोसन के हुक्म में है......

शरीअ़त ने कहा कि सहेली भी पड़ोसन के हुक्म में होती है। कई मर्तबा औरतों की आपस में प्यार मुहब्बत हो जाती है। दोनों क्लास फेलोज़ थीं, शादी के बाद भी एक दूसरे के साथ प्यार मुहब्बत रहा, कहीं मुलाकात हुई तबीअ़तें एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह हुईं तो एक दूसरे से प्यार हो गया तो ऐसी औरतें एक दूसरे को सहेली कहती हैं। शरीअ़त ने कहा कि सहेली के हुकूक़ भी पड़ोसन के हुक्म में।

ज़्यादा दोस्ती ठीक नहीं:

मगर यहां एक बात ज़रा तवज्जोह तलब भी है कि औरतों की आपस की दोस्ती बड़ी अजीब होती है, कभी एक दूसरे के साथ इतनी दोस्ती कि हाए मैं कुर्बान और कभी छोटी सी बात पर एक दूसरे की दुशमन नम्बर एक। कभी तो इतनी मुहब्बत कि एक जैसे कपड़े पहन रही हैं कि जैसे कपड़े यह पहनेगी वैसे कपड़े मैं बनवाऊंगी, और कभी छोटी सी बात पर एक दूसरे से वेर पड़ जाता है। इसी को इफ़रात व तफ़रीत कहते हैं। लिहाज़ा हमारी समझ में तो यह आता है कि किसी को सहेली बनाना ही नहीं चाहिये, अगर कोई औरत सहेली बनाना चाहे तो अपनी बहनों को बनाए, अपनी मां को

बनाए। कितनी अच्छी सहेली! जो हर वक़्त आप के घर में मौजूद होगी, हर वक़्त आप के साथ होगी। घर की चार दीवारी से बाहर किसी से क्या दिल लगाना, परेशानी होती है। तो आसान तरीक़ा यह कि अपनी बहनों को अपनी सहेली बनाओ अपनी वालिदा को अपनी सहेली बनाओ।

बच्चों के झगड़े में हिस्सादार न बनें:

हमसाए से झगड़े का एक बड़ा सबब आम तौर पर बच्चे बन जाते हैं वह आपस मे मिल कर खेलते हैं, झगड़ते हैं और उनका झगड़ा फिर बड़ों में आ जाता है इस अलहम्दु लिल्लाह एक मुस्तक़िल बयान हो चुका और अब आप समझती होंगी कि बच्चों की लड़ाई में बड़ों को हिस्सादार नहीं बनना चाहिये।

अमल और रद्दे अमल......

यह भी ज़हन में रखें कि हमारा अपना अमल दूसरे के रद्दे हमल को मुतअ़य्यन करता है। दोबारा यह बात सुनें और याद रखें कि हमारा अमल दूसरे के रद्दे अमल का तअ़य्युन करता है। हम मुहब्बत का हाथ बढ़ाएंगे तो दूसरा भी मुहब्बत का हाथ बढ़ाएगा, हम अगर खिंचे रहेंगे तो दूसरा भी खिंचा रहेगा। जो हम करेंगे इसी का रद्दे अमल आगे से ज़ाहिर होगा। तो हमें चाहिये कि हम पड़ोसियों के साथ मुहब्बत का तअ़ल्लुक़ रखें क्योंकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमें इसका हुक्म दिया। सुनिये और दिल के कानों से सुनिये! चूंकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के प्यारे हबीब सल्ल० ने हदीसे पाक में फ़रमायाः

مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ جَارَهُ

जो अल्लाह पर ईमान रखता है और यौमे आख़िरत

पर ईमान रखता है, उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी की इज़्ज़त करे।

अब सोचिये कि इतने वाज़ेह लफ़्ज़ों में एक बात कही गई कि अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो और अल्लाह की मुलाक़ात पर ईमान रखते हो तो तुम्हें चाहिये कि अपने पड़ोसी के साथ इज़्ज़त का मुआमला करो।

पड़ोसी से हुस्ने सुलूक की तअ़लीम......

एक बंदा क़्यामत के रोज़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर पेश होगा। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाएंगे, मेरे बंदे मैं भूका था तूने मुझे खाना ही न खिलाया, मैं प्यासा था तूने मुझे पानी ही न पिलाया, मैं बीमार था तूने मेरी तबीअ़त ही न पूछी, वह बंदा बड़ा हैरान होगा, कहेगाः ऐ रब्बे करीम! आप इन चीज़ों से मंज़ा और मुबर्रा हैं, आपको भूक प्यास और बीमारी का क्या मअ़नी? फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि देखो! कि फ़लां मौक़ा पर तुम्हारा पड़ोसी भूका था, अगर तुम ने उसे खाना खिलाया होता तो ऐसे ही होता कि गोया तुमने मुझे खाना खिलाया, तुम उसे पानी पिलाते ऐसे ही होता जैसे तुमने मुझे पानी पिलाया और अगर तुम उसकी तबअ़ पुर्सी, इबादत करते ऐसे ही होता जैसे तुमने मेरी इयादत की। अब ज़रा सोचिये कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अगर यूं फ़रमाएंगे कि पड़ोसी की इयादत करना ऐसे ही है जैसे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की इयादत करना और किन अलफ़ाज़ में पड़ोसी के साथ हुस्ने सुलूक की तअ़लीम दी जाए। मुझे तो लगता है कि इसके बाद अलफ़ाज़ ही ख़त्म हो जाते हैं। अल्लाहु अक्बर कबीरा।

सात घरों का चक्करः

चुनांचे हमारे अकाबिर पड़ोसी के साथ इतना अच्छा सुलूक करते थे कि दौरे सहाबा की बात है कि घर में बकरी कटी, गोश्त बनाया गया। उन्होंने सोचा कि इस बकरी की जो सिरी है वह हम हमसाए के घर भेज देते हैं, वह पका कर खा लेंगे। उन्होंने वह सिरी हमसाए के घर में भेज दी। हमसाए की औरत ने सोचा कि हमारे घर में तो सब्ज़ी है हम पका ही लेंगे, पता नहीं हमारे फ़लां पड़ोसी के घर में कुछ है या नहीं यह सिरी उनके घर में भेज देती हूं, उसने वह सिरी उनके घर में भेज दी। जब तीसरी पड़ोसन के घर में पहुंची तो उसने सोचा कि मेरे घर में तो दाल है, पका ही लूंगी चलो मैं यह अपनी फ़लां पड़ोसन के घर में भेज देती हूं, उसने आगे चौथे घर में भेज दी। चौथी ने भी यही सोचा, पहले से सालन मौजूद है फ़लां के घर भेज देती हूं उसने आगे पांचवीं के घर भेज दी, पांचवीं ने भी यही सोचा कि मैं अपनी फ़लां पड़ोसन के घर में भेज देती हूं, जब उसने भेजी तो वह सिरी लौट कर उसी घर में आई जहां से वह चली थी। छः घरों में से होकर वह बिलआख़िर उसी घर में वापस आई है इतना एक दूसरे के साथ, मुहब्बत प्यार का तअ़ल्लुक़ होता था।

औरत घोड़े और घर में बरकतः

नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि औरत, घोड़े और घर के अंदर एक बरकत होती है। सहाबी ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 वह क्या बरकत है?

फ़रमाया कि औरत की बरकत तो यह है कि उसका महर कम हो, शादी करना उससे आसान हो, उसके अंदर नेकी

दीनदारी हो, यह औरत के अंदर बरकत होती है।

घोड़े के अंदर बरकत यह है कि वह सवार को आसानी से सवारी करने दे, उसे लात वग़ैरा न मारे।

और घर की बरकत यह है कि घर खुला हो और घर के पड़ोसी नेक और अच्छे हों। यह घर के अंदर बरकत होती है।

लिहाज़ा हमारे अकाबिर जब घर ख़रीदने या बनाने लगते थे तो पड़ोस को पहले देखा करते थे।

اَلْجَارُ ثُمَّ الدَّارُ

पहले पड़ोस बाद में घर

इसलिये अक्सर अहबाब मस्जिद के क़रीब घर बनाते थे कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से बेहतर पड़ोसी और कौन हो सकता है।

पड़ोस की क़ीमतः

चुनांचे अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह0 एक बुजुर्ग थे। उनके पड़ोस में एक यहूदी रहता था। यहूदी ने कहीं और जाना था, सोचा कि मैं अपना मकान बेचता हूं। एक मुसलमान उसका मकान ख़रीदने के लिये पहुंचा। उसने कहा कि जी मकान की क्या क़ीमत मांगते हैं? उसने कहा कि दो हज़ार दीनार। वह ख़रीदार बड़ा हैरान हुआ कि इतनी ज़्यादा क़ीमत। कहने लगा कि यार इस इलाक़े में मकान एक हज़ार दीनार में आराम से मिल जाते हैं? यहूदी ने जवाब दिया कि एक हज़ार दीनार तो मकान की क़ीमत है और दूसरा हज़ार दीनार अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक के पड़ोस की क़ीमत है। सोचें एक वक़्त ऐसा था कि हम कितने अच्छे हुस्ने सुलूक से ज़िंदगी गुज़ारते थे कि हमारे पड़ोस के मकानों की क़ीमतें बढ़ जाया करती थीं। काशफ

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें ऐसा ही पड़ोसी बना दे।

पड़ोसी को ईज़ा पहुंचाने का अज़ाब:

और अगर हम पड़ोसी को ईज़ा देते हैं, तकलीफ़ देते हैं, उसके हुकूक़ पूरे नहीं करते तो यह भी ज़हन में रखिये कि अल्लाह की तरफ़ से उस पर अज़ाब भी है। चुनांचे शरीअत ने कहा कि जो शख़्स पड़ोसी का दिल दुखाता होगा अल्लाह तआला उसको क़्यामत के दिन जहन्नम में डालेंगे और उसको ख़ारिश की बीमारी में मुब्तला कर देंगे। और वह ख़ारिश की बीमारी ऐसी होगी कि यह अपने नाखुनों से अपने गोश्त को खुजाना शुरू करेगा इतना खुजाएगा कि गोश्त कट कर उसमें से हड्डियां नज़र आने लगे जाएंगी। इतना खुजाएगा इतनी ख़ारिश होगी। फिर जिस्म ठीक कर दिया जाएगा फिर ख़ारिश महसूस होगी और यह अपने जिस्म को फिर खुजाएगा हत्ता कि गोश्त कट कर फिर हड्डियां नज़र आने लग जाएंगी। फ़रिशते पूछेंगे: इसको यह अज़ाब क्यों मिला? बताया जाएगा कि यह पड़ोसी का दिल दुखाता रहता था, इसके बदले अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इसको जहन्नम में यह अज़ाब दिया।

पड़ोसी की दिल आज़ारी......नमाज़ें काम नहीं आएंगी!

चुनांचे नबी सल्ल0 के सामने तज़किरा हुआ कि ऐ अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0! एक औरत है नमाज़ें भी पढ़ती है, रोज़ा भी रखती है, नेक पर्दादार भी है मगर ज़बान की तेज़ है, पड़ोसी के साथ उसकी तल्ख़ कलामी होती रहती है। पड़ोसी खुश नहीं हैं पड़ोसियों का दिल दुखाती है। नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि जो औरत पड़ोसियों का दिल दुखाती है अपने रौज़े नमाज़ों के बावजूद क़्यामत के दिन अल्लाह रब्बुल

इज़्ज़त उसको जहन्नम के अंदर डालेंगे इतनी वज़ाहत से नबी सल्ल0 ने यह बात बता दी कि अगर पड़ोसी का दिल दुखाया तो अपनी नेकी और नमाज़ों के बावजूद जहन्नम में जाएगी।

लड़कियां पड़ोसी मर्दों से एहतियात बरतें:

अब यहां से कोई ग़लत मतलब न ले। कोई लड़की पड़ोसियों से अच्छा सुलूक करने के बहाने उनके मर्दों से नर्मी का मुआमला करे और कोई बुरा तअ़ल्लुक़ ही जोड़ ले। याद रखें कि नौजवान लड़कियों को पड़ोसी मर्दों से बड़ी एहतियात की ज़रूरत होती है, वर्ना नफ़्स व शैतान तो इंसान को गिराने में हर वक़्त ताक़ में लगे हुए हैं। शरीअ़त की हुदूद में रहते हुए औरतों के साथ अच्छा सुलूक रखें और मर्द पड़ोस के मर्दों के साथ अच्छा सुलूक रखें।

हुस्ने सुलूक की ज़रुरत है......

कई दफ़ा मां बाप बहन भाईयों के घर क़रीब ही चार दीवारी के अंदर बना देते हैं। अब यह बहन भाई भी हुए और पड़ोस भी हुए। और देखा यह गया है कि सबसे ज़्यादा झगड़े भी यहीं होते हैं। तो तसव्वुर कीजिये कि भाई भी है, ईमान वाला भी है, पड़ोसी भी है लेकिन फिर उसके साथ अंदर की लड़ाईयां हैं, रक़ाबतें और अदावतें हैं। तो क़्यामत के दिन जहन्नम की आग से हमें बचना कैसे नसीब होगा? आज दिल में यह फ़ैसला कर लीजिये कि हमने पड़ासियों के हुक़ूक़ में आज तक जो कोताही की हम उससे तौबा करते हैं। हम उन पड़ोसियों से भी अच्छे अलफ़ाज़ में मुआफ़ी मांग लेंगे और आइंदा हुस्ने सुलूक, मुहब्बत प्यार रहने की कोशिश करेंगे।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को सुलह पसंद हैः

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को सुलह बहुत पसंद है। चुनांचे हदीसे पाक में एक अजीब मज़मून बताया गया कि क़्यामत के दिन सबसे पहले जो दो आदमी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने मुक़द्दमा पेश करेंगे वह पड़ोसी होंगे। क़्यामत के दिन जो दो बंदे अल्लाह के सामने हुकूकुल इबाद में अपना मुक़द्दमा पेश करेंगे वह पड़ोसी होंगे। उनमें एक कहेगाः इसने मेरा दिल दुखाया, मुझे परेशान किया, बड़ा नेक नमाज़ी था, मुझे सताता था, अल्लाह मुझे अब इसका बदला दिलवाइये। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाएंगे कि अच्छा तुम इसकी नेकियां ले लो। अब जब नेकियां लेने लगेगा, तो यह बंदा उसकी ज़िंदगी की सारी नेकियां ले लेगा। पूरी नेकियां लेने के बाद फिर भी मुतमइन नहीं होगा। कहेगा! अल्लाह! इसके पास नेकियां थोड़ी हैं, मुझे तो इसने ज़्यादा सताया है, मुझे ज़्यादा नेकियां चाहियें। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे अच्छा तमाम अपने गुनाह इसके सर डाल दो। चुनांचे यह पड़ोसी अपने सारे के सारे गुनाह उसके सर पर डाल देगा और फिर कहेगाः ऐ अल्लाह! सारे गुनाह उसके सर डालने के बावजूद जो इसने मेरा दिल दुखाया था, मेरा दिल भी खुश तो नहीं हुआ, अल्लाह तआला फ़रमाएंगेः अच्छा तुम ज़रा फ़लां तरफ़ देखो! यह शख़्स उस तरफ़ देखेगा तो उसे जन्नत के मकान नज़र आएंगे, इस क़द्र खूबसूरत, इतने प्यारे! इन मक़ामात की तरफ़ देखकर उस बंदे के दिल में यह तमन्ना होगी कि मैं इन मकानों में चला जाऊं और वहां जाकर रहूं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगेः ऐ मेरे बंदे! क्या तू इन मकानों में जाना चाहता है? वह कहेगा या

अल्लाह! मैं जाना चाहता हूं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे: अच्छा अगर तुम अपने इस भाई को मुआफ कर दो तो मैं तुम्हें इन मकानों में जगह दे दूंगा। चुनांचे यह पड़ोसी जिसका दिल दुखा था वह कहेगा कि अल्लाह! मैंने इसको मुआफ़ कर दिया तू मुझे जन्नत में घर अता कर दे। अल्लाह फ़रमाएंगे अच्छा जब तुमने इसको मुआफ़ कर दिया तो तुम अकेले जन्नत में न जाओ, अपने पड़ोसी भाई को अपने साथ जन्नत में लेकर चले जाओ, मुझे सुलह पसंद है। तो अल्लाह तआला को तो क़्यामत के दिन भी दो पड़ासियों में सुलह ही पसंद है। इसलिये हमें चाहिये कि हम आज पड़ोसियों के साथ सुलह सफ़ाई से रहने वाले बन जाएं ताकि अल्लाह तआला हमसे राज़ी हो जाएं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें सुलह और पाकीज़गी की ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। आमीन सुम्मा आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العٰلمين